बी.ए. (प्रोग्राम) सेमेस्टर–I/II हिंदी

Ability Enhancement Compulsory Course (AECC)

हिंदी भाषा और संप्रेषण

अध्ययन–सामग्री : इकाई (1-4)

मुक्त शिक्षा विद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

हिंदी–विभाग

स्नातक पाठ्यक्रम

Ability Enhancement Compulsory Course (AECC)

हिंदी भाषा और संप्रेषण

अध्ययन सामग्री : इकाई (1-4)

इकाई-1 : भाषिक संप्रेषण : स्वरूप और सिद्धांत

पाठ-1 : 'संप्रेषण की अवधारणा, महत्त्व और उसकी प्रक्रिया' **–डॉ. हिमांशी श्रीवास्तव**

पाठ-2 : संप्रेषण के विभिन्न मॉडल और अभाषिक संप्रेषण **–डॉ. अनिल कुमार**

इकाई-2 : संप्रेषण के प्रकार

पाठ-1 : हिंदी भाषा और संप्रेषण, संप्रेषण के प्रकार एवं उसकी चुनौतियाँ **–डॉ. सीमा रानी**

पाठ-2 : संप्रेषण की संभावनाएँ एवं भ्रामक संप्रेषण और प्रभावी संप्रेषण में अंतर **–डॉ. अनिल कुमार**

इकाई-3 : संप्रेषण के माध्यम

'संप्रेषण के विभिन्न माध्यम' **–डॉ. अनिल कुमार**

इकाई-4 : व्यक्तित्व और प्रभावी भाषिक संप्रेषण

पाठ-1 : व्यक्तित्व और भाषिक अस्मिता आयु, लिंग, वर्ग, शिक्षा **–डॉ. ओम मिश्रा**

पाठ 2 : प्रभावी संप्रेषण के गुण एवं प्रभावी व्यक्तित्व के निर्माण में संप्रेषण की भूमिका **–डॉ. ओम मिश्रा**

संपादक :

हिंदी विभाग

मुक्त शिक्षा विद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय

5, कैवेलरी लेन, दिल्ली-110007

पाठ-1

'संप्रेषण की अवधारणा, महत्त्व और उसकी प्रक्रिया'

डॉ. हिमांशी श्रीवास्तव

1.1 प्रस्तावना

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। उसे समाज से स्वयं को (संबद्ध रखने) के लिए विचारों का आदान-प्रदान करना पड़ता है। मनुष्य एवं समाज के बीच सार्थक ध्वनियों द्वारा विचारों का जो आदान-प्रदान होता है, उसे भाषा कहते हैं और विचारों के इसी आदान-प्रदान के बीच जो भावनाएँ एक-दूसरे तक पहुँचती हैं उसे संप्रेषण कहते हैं। संप्रेषण मूलत: भाषा द्वारा अभिव्यक्त वह भाव या शैली है, जो वक्ता से श्रोता तक सार्थक विचारों को प्रेषित करता है। वास्तव में वही संप्रेषण सार्थक या सफल होता है, जो एक-दूसरे के बीच तादात्म्य स्थापित कर पाने में सक्षम होता है। वक्ता की भाषा कितनी ही सरल, सहज या भावपूर्ण क्यों न हो, अगर वह श्रोता से संबंध स्थापित नहीं कर पाता तो, उसे असफल संप्रेषण ही कहेंगे। संप्रेषण वास्तव में अपने विचारों को किसी अन्य तक पहुँचाने का एक तरीका है, जिसे भाषा का पूरक भी कहा जा सकता है। प्रस्तुत पाठ में हम संप्रेषण को भलीभाँति समझने के लिए उसकी अवधारणा महत्त्व और उसकी प्रक्रिया (जैसे तथ्यों) को ही रेखांकित करेंगे। संप्रेषण के संबद्ध में सहज ही यह जिज्ञासा जगती है कि संप्रेषण क्या है, कैसे या किससे होता है। इन समस्त जिज्ञासाओं के समाधान के लिए संप्रेषण की अवधारणा को जानना आवश्यक है।

1.2 अधिगम का उद्देश्य

1. इस अध्ययन सामग्री को पढ़कर आप संप्रेषण की अवधारणा–अर्थ, परिभाषा एवं संप्रेषण के तत्त्वों के विषय में जान सकेंगे।
2. मानव-जीवन में संप्रेषण के महत्त्व के विषय में जान सकेंगे।
3. संप्रेषण-प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगे।
4. संप्रेषण की अवधारणा, महत्त्व एवं संप्रेषण-प्रक्रिया के विषय में अपनी राय दे सकेंगे।

1.3 संप्रेषण की अवधारणा

मानव जीवन संप्रेषण यानी विचारों के आदान-प्रदान से परिपूर्ण है। कभी प्रत्यक्ष तो कभी अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य संप्रेषण में सक्रिय रहता है। सामान्यत: एक व्यक्ति अपने सक्रिय समय में से लगभग दो-तिहाई से अधिक समय प्रत्यक्षत: सुनते, बोलते या फिर पढ़ते-लिखते यानी संप्रेषण में सक्रिय रहते हुए व्यतीत करता है। संप्रेषण के संबंध में सहज ही यह जिज्ञासा जगती है कि संप्रेषण क्या है, कैसे या किससे होता है। इन समस्त जिज्ञासाओं के समाधान के लिए, संप्रेषण की अवधारणा को जानना आवश्यक है।

संप्रेषण शब्द की व्युत्पत्ति 'सम' + 'प्रेषण' के योग से हुई है। सम यानी समान रूप से, पूरी तरह से और प्रेषण यानी आगे भेजना, अग्रसर करना। इन दोनों शब्दों के संयोग से बने 'संप्रेषण' शब्द से आशय है–समान रूप से भेजा गया। यानी बातचीत या भाषा में किसी सूचना या विचार को सम्यक् रूप से सामने वाले व्यक्ति तक भेजना।

किसी शब्द के अर्थ को जानने का एक तरीका भाषा में प्रचलित उसके समानार्थी शब्द के अर्थों से भी जानने का है। इस नज़रिए से संप्रेषण के लिए हिंदी में संचार और संवाद शब्द भी प्रचलित है। यहाँ संचार शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा की 'चर' धातु से हुई है। चर से आशय है–चलना। यहाँ संचार शब्द का गंभीर अर्थ है–निरंतर आगे बढ़ते रहने वाली प्रक्रिया। यहाँ 'संप्रेषण' और 'संचार' शब्द से आशय निकलता है–समाज में व्यक्तियों का भावों एवं विचारों का परस्पर आदान-प्रदान।

संप्रेषण का अंग्रेजी पयार्य 'Communication' है। Communication शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन के Communies (कम्युनिज) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ–to share, to transmit, to exchange यानी भागीदारी, स्थानांतरण और आदान-प्रदान। यदि हम To share, to transmit और to exchange के अर्थ संदर्भ को देखें तो इससे स्पष्ट है To share भागीदारी यानी किसी को अपने भावों एवं विचारों से अवगत कराना। to transmit- स्थानांतरण यानी भावों एवं विचारों को एक स्थान से किसी अन्य स्थान पर पहुँचाना। ऐसे ही To Exchange – आदान-प्रदान से आशय है–भावों एवं विचारों का परस्पर आदान-प्रदान। संप्रेषण के समानार्थी अंग्रेजी शब्द कम्युनिकेशन का अर्थ है–एक तरह की 'कॉमननेस'–साझा, सहभागिता या सामान्यता। इससे संप्रेषण का अर्थ निकलता है–एक तरह की सहभागिता उत्पन्न करना या सर्वसामान्यता लाना। सुस्मिता बाला एवं अम्बरीष सक्सेना ने लैटिन के Communis के अर्थ-संदर्भ को स्पष्ट करते हुए लिखा है–To Share- आदान प्रदान करना, बाँटना (ज्ञान, परेशानी, संवेदना, खुशी आदि) केवल विचार ही नहीं भावनाएँ भी। To Impart – प्रदान करना, बताना, उदाहरण के लिए कक्षा में अध्यापक छात्र को सूचनाएँ प्रदान करता है। To Transmit- बताना, पहुँचाना, भेजना, संचारित, प्रसारित, प्रेषित करना। इस काम में उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है। To make Common- संचार में संदेश देकर और लेकर प्रक्रिया में शामिल लोगों का एक ही धरातल पर जाना।"[1]

सूचना एवं तकनीक के क्षेत्र में संप्रेषण एक तकनीकी शब्द है, जिसका अर्थ है–किसी सूचना या जानकारी को दूसरों तक पहुँचाना। संप्रेषण के द्वारा समाज में व्यक्ति के संबंध और अधिक विकसित होते हैं। वस्तुतः "संप्रेषण एक शक्ति है जो समाज की जड़ों को पोषित करती है। संप्रेषण का नेटवर्क ही पारिवारिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सांप्रदायिक, भाषिक, वैश्विक आदि संबंधों की नींव रखता है। भाषा की उत्पत्ति से लेकर आज तक संप्रेषण ने मानव के विकास के अनेक युग देखे हैं। आज का युग संप्रेषण की दृष्टि से विशिष्ट है, क्योंकि यह 'सूचना क्रांति' का युग है, जहाँ अपनी बात को आजादी से कहना मनुष्य का अधिकार है। संप्रेषण, वक्ता और श्रोता की व्यक्तिगत और सामूहिक सीमाओं से आगे निकलकर विश्व स्तर तक पहुँच गया है। बाज़ारी उपनिवेशवाद का हिस्सा बन गया है।"[2]

संप्रेषण मानव जीवन की एक अनिवार्य आवश्यकता है। इस आवश्यकता को देखते हुए विभिन्न सामाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों ने संप्रेषण को शब्दबद्ध कर प्रस्तुत किया। इस विषय में डॉ. देवेंद्र इस्सर ने

सिरेनो और मौर्टसेन के हवाले से लिखा है–''हाल के वर्षों में गवेषणा-कार्य की गति संप्रेषण-क्षेत्र के विशिष्ट प्रकरण और उसे अधिक स्पष्ट करने की दिशा में बहुत धीमी रही है। हाल की एक समीक्षा के अनुसार प्रचलित गवेषणा साहित्य में संप्रेषण शब्द की 25 विभिन्न संकल्पनाओं का प्रयोग देखा गया है। अनुसंधानकर्ताओं को अभी संप्रेषण की एक पूर्णत: स्वीकार्य व्याख्या स्थापित करनी है। वे इस पर भी सहमत नहीं हैं कि मानव-संप्रेषण प्रक्रिया में कौन-सी बात सामान्य है। संप्रेषण-प्रक्रिया के 50 से अधिक विभिन्न विवरण प्रकाशित हुए हैं। इस प्रकार की संकल्पना संबंधी समस्याएँ एक सामान्य मॉडल तैयार करने की दिशा में किये गये अनेक प्रयासों को सीमित कर देती हैं। सन् 1949 में शेनान और वीवर द्वारा संप्रेषण का एक गणितीय मॉडल प्रकाशित किये जाने के बाद संप्रेषण साहित्य में 15 से भी अधिक मॉडलों का विवरण जुड़ गया है।''[3]

इससे संप्रेषण की परिभाषा में वैविध्य के साथ-साथ विरोधाभास भी देखने को मिलता है क्योंकि यह वैयक्तिक रूप से आत्मगत भी हो सकता है और अन्यों के साथ सामूहिक रूप में भी हो सकता है। मुख्य बात यह है कि संप्रेषण आत्मगत हो या फिर दूसरे/दूसरों के साथ यह एक ऐसी विशिष्ट प्रक्रिया है, जिसमें एक या एकाधिक व्यक्ति अपने भावों, विचारों एवं तथ्यों का इस प्रकार आदान-प्रदान करते हैं, जिससे प्रत्येक को संदेश का अर्थ, आशय और उसके उपभोग की समझ का लाभ सभी उठा सकें। निष्कर्षत: संप्रेषण किसी विशिष्ट संदेश के लिए संप्रेषण संदेश और संदेश प्राप्तकर्ता को समानुभूति के साथ जोड़ने का काम है।

लुइस ए. ऐलन संप्रेषण को बड़ा महत्त्वपूर्ण मानते हैं। उनके अनुसार–"Communication is the sum of the things one person does when he want to create understanding in the mind of another. It is a bridge of meaning. It involves a systematic and continuous process of telling, listening and understanding." अर्थात् ''संचार से आशय उन समस्त साधनों से है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपनी विचारधारा को दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क में डालने के लिए अथवा उसे समझाने के लिए अपनाता है। यह वास्तव में दो व्यक्तियों के मस्तिष्क के बीच की खाई को पाटने वाला सेतु है। इसके अंतर्गत कहने, सुनने तथा समझने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया सदैव चालू रहती है।''

चार्ल्स ई. रेडफील्ड के अनुसार–"Communication is the broad field of human interchange of facts and opinions and not the technologies of telegraph, radio and the like." अर्थात् ''संप्रेषण से तात्पर्य उस व्यापक क्षेत्र से है जिसके माध्यम से मानव तथ्यों एवं सम्मतियों का आदान-प्रदान करते हैं। टेलीफोन, तार, रेडियो अथवा इसी प्रकार के अन्य तकनीकी साधान संप्रेषण नहीं है।'' यहाँ रेडफील्ड का आशय यह है कि यद्यपि तार, टेलीफोन, रेडियो आदि का संप्रेषण के साधनों का प्रतीक समझा जाता है किंतु संप्रेषण का वास्तविक अर्थ संप्रेषक की विचारधारा एवं अभिव्यक्तियों को समझना है। तकनीकी साधन तो सिर्फ माध्यम भर होते हैं।

ई.एम. रोजर एवं शूमेकर के अनुसार–''संप्रेषण वह प्रक्रिया है जिसमें स्रोत एवं श्रोता के मधय सूचनाओं का संप्रेषण होता है। इस प्रकार संप्रेषण विचारों के आदान-प्रदान से संबद्ध है।''

चार्ल्स ई. आसगुड संप्रेषण को शब्दबद्ध करते हुए कहते हैं–"In the most general sense we have communication whenever one system a source influence, another the destination by

manipulation of alternative, signals which can be transmitted over the channels connecting them."[4] अर्थात् ''आम तौर पर संचार तब होता है जब कोई ढाँचा या स्रोत किसी अन्य को प्रभावित करे, कुशलतापूर्वक विभिन्न संकेतों का प्रयोग करके उन साधनों के द्वारा जो उन्हें जोड़ते हो।''

जे. पॉल लोगन्स संप्रेषण को शब्दबद्ध करते हुए कहते हैं–"यह एक प्रक्रिया है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति एक ऐसे रूप में विचारों, तथ्यों, अनुभवों अथवा प्रभावों का विनिमय (Exchange) करते हैं, जिससे प्रत्येक व्यक्ति संदेश का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लेता है।" वास्तव में, संप्रेषक और संग्राहक के बीच किसी संदेश अथवा संदेशों की शृंखला को प्राप्त करने की सम्मिलित प्रक्रिया संप्रेषण कहलाती है।

L. RonHubbard has described Communication in terms of ARC triangle. A stands for affinity, R for reality and C for Communication. Communication in ARC Triangle has been stated to be the most important in understanding the composition of human relations and thus human life. अर्थात् एल.रान. हबर्ड ने संचार को ARC त्रिकोण के माध्यम से समझाने की कोशिश की। का प्रयोग लगाव के लिए, R का प्रयोग वास्तविकता के लिए तथा C का प्रयोग संचार के लिए किया गया है। मानवीय संबंधों के स्वरूप और इस प्रकार मानव जीवन को समझने के लिए ARC त्रिकोण को बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

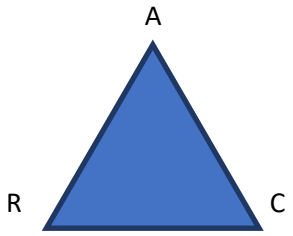

लुंडवर्ग के अनुसार– संचार वह पारस्परिक क्रिया है जो प्रतीकों के माध्यम से घटित होती है। ये प्रतीक चित्र, मौखिक या अन्य किसी रूप में हो सकते हैं। प्रतीकों के माधयम से होने वाला संचार उसके संप्रेषण में आने वाले अवरोधों को रोक लेता है। इस प्रकार प्रतीक-युक्त संचार संदेशों को कम कर देते हैं। संप्रेषण में यदि प्रतीकों का कुशलता के साथ प्रयोग किया जाए तो जटिल विचार तथा तकनीकी ज्ञान में साझेदारी भलीभाँति की जा सकती है। उपयुक्त प्रतीकों का प्रयोग कर स्वाभाविक कुशलता से परे हटकर संप्रेषण किया जा सकता है।

Trenhalin – "In the main, communication has its central interest those behavioral situations in which a source transmits a message to receiver (s) with conscious intent to alter the latter's behavior. Here, the dimension of intentionality underlying communication is the key lecture involved in the delineation."

इन सभी परिभाषाओं का निष्कर्ष है –'To make common' अर्थात 'सबका बन जाना', सामान्यीकृत हो जाना। भारतीय रस सिद्धांत के 'साधारणीकरण' का अर्थ इस 'सामान्यीकृत' शब्द के बहुत नज़दीक है, जहाँ एक व्यक्ति के भाव, विचार दूसरे व्यक्ति के- हृदय तक पहुँच जाते हैं, साधारणीकृत हो

जाते हैं। संक्षेप में, संप्रेषण के विषय में उपर्युक्त परिभाषाओं पर अध्ययन-मनन करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि संप्रेषण एक व्यवस्थित, सोद्देश्य एवं सतत् गतिशील रहने वाली प्रक्रिया है, जिसे सामान्यतः दो या दो से अधिक व्यक्ति परस्पर भावों, विचारों तथ्यों एवं सूचनाओं, सम्मितियों आदि का आदान-प्रदान करते हैं। जिससे एक सामान्य समझ विकसित हो सके। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संप्रेषण का महत्त्व स्वीकार किया जा रहा है।

वस्तुतः यह कहना उचित होगा कि इस परस्पर भाषिक व्यवहार का माध्यम जो भी हो (पत्र लेखन, रेडिया प्रसारण, समाचार पत्र, टेलीफोन पर बात-चीत, संकेत या हाव-भाव इन सबके मूल में कोई ना कोई संदेश होता है। अतः संप्रेषण का केंद्र-बिंदु संदेश ही है।

प्रश्नों की जाँच स्वयं कीजिए-

प्रश्न (क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में दीजिए-

1. संप्रेषण मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। (हाँ/नहीं)
2. संप्रेषण में परस्पर साझेदारी की प्रक्रिया विद्यमान होती है। (हाँ/नहीं)

प्रश्न (ख) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. संप्रेषण का महत्त्व एवं ..... हर युग एवं कालखंड में रही है। (भाव, स्वरूप, उपयोगिता, आवश्यकता)
2. वैयक्तिक संप्रेषण में व्यक्ति अपने किन भावों का रूप ..... स्पष्ट करता है। (आत्मगत, व्यवहारगत, अनुभवगत, भावगत)

1.4 संप्रेषण के तत्त्व

संप्रेषण की अवधारणा को समझने के लिए संप्रेषण के तत्त्वों का बात करना भी जरूरी है। संप्रेषण के तत्त्व से आशय है संप्रेषण के रूप-आकार प्रदान करने वाले घटक। संप्रेषण प्रक्रिया में वक्ता, संदेश और श्रोता की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। ये ही इसके प्रमुख तत्त्व हैं। लेकिन विद्वानों ने माध्यम और फीडबैक को भी संप्रेषण के महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना है। इस प्रकार संप्रेषण के पाँच प्रमुख तत्त्व ठहरते हैं– (*i*) संप्रेषक/स्रोत, (*ii*) संदेश, (*iii*) माध्यम, (*iv*) ग्राही/लक्ष्य, (*v*) फीडबैक। संक्षेप में, संप्रेषण के तत्त्वों का विवरण इस प्रकार है–

(*i*) **स्रोत/संप्रेषक**–संप्रेषण-प्रक्रिया में संप्रेषण का आरंभ संप्रेषक ही है। संप्रेषक में संप्रेषण हेतु संप्रेषण की प्रवीणता, प्रवृत्ति और सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहार का ज्ञान होना चाहिए। इसमें संप्रेषण प्रवीणता हेतु–बोलना, लिखना, पढ़ना, सुनना एवं तर्क-वितर्क करना आता है। इनके अतिरिक्त भाषायी ज्ञान, संकेत करना एवं चित्र बनाना आदि भी संप्रेषण-प्रवीणता में वृद्धि करते हैं। प्रवृत्ति से आशय है पहला

संप्रेषक का संदेश ग्रहीता के प्रति दृष्टिकोण एवं उसके साथ व्यवहार, दूसरा संदेश की विषय वस्तु के प्रति संप्रेषक की धारणा और तीसरा संप्रेषक का संप्रेषण के समय रवै्या आदि। ऐसे संप्रेषक को संप्रेषण करते समय समाज के वर्गों-अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित, युवा-वृद्ध एवं बाल वर्ग आदि का ध्यान रखना चाहिए। समाज एवं संस्कृति के ज्ञान के अभाव में संप्रेषक की संप्रेषण प्रक्रिया बाधित हो सकती है।

(*ii*) **संदेश**–संप्रेषण प्रक्रिया में संप्रेषक जो कुछ भी कहना चाहता है श्रोता के समक्ष वह सब उसका संदेश है। संदेश की रचना के वक्त संप्रेषक को कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए जैसे– 1. संदेश की विषय वस्तु, 2. संदेश का विवेचन किस प्रकार करना हैं? 3. संदेश किस माध्यम द्वारा पोषित करना है? 4. संदेश ग्रहणकर्ता कौन है? संप्रेषण में संदेश की रचना करना सबसे महत्त्वपूर्ण चरण है। कई बार हम देखते हैं कि एक खूब पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी अपनी बात सामने वाले को ठीक से नहीं समझा पाता जबकि एक सामान्य व्यक्ति अपनी बात को बड़े प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त कर देता है। यह सब वक्ता के संदेश रचना कौशल के कारण ही सीख पाता है।

(*iii*) **माध्यम**–संप्रेषण-प्रक्रिया में वक्ता और श्रोता के मध्य सेतु का कार्य माध्यम करता है। माध्यम से यहाँ आशय है कि संप्रेषक किस प्रकार अपने संप्रेष्य संदेश को सामने वाले तक भेजता है-बोलकर, लिखकर, ईमेल, वेबसाइट आदि। संप्रेषक अपने संदेश को प्रेषित करने के लिए किसी भी माध्यम का चयन कर सकता है। परंतु उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि उसके लक्ष्य यानी संदेश ग्राही के लिए कौन-सा माध्यम उपयुक्त रहेगा। संप्रेषण प्रक्रिया के सभी माध्यम उपयोगी होते हैं परंतु उपयोगिता संप्रेषक, संदेश और संदेश ग्राही की विशिष्ट स्थिति पर निर्भर करती है।

(*iv*) **ग्राही या लक्ष्य**–संप्रेषण प्रक्रिया में संप्रेषक जिसे अपना संदेश संप्रेषित करता है, वह संदेश ग्राही या लक्ष्य कहलाता है। ग्राही केवल एक व्यक्ति वर्ग या फिर संपूर्ण समाज भी हो सकता है। ग्राही संप्रेषक के जितना समरूप होगा, उसी मात्रा में संप्रेषण के प्रभावी होने की संभावना बढ़ जाती है। ग्राही का संदेश ग्रहण करना इस तथ्य पर निर्भर करता है कि–संप्रेषक का संदेश किस प्रकार का है? उसके लिए संप्रेषक का क्या महत्त्व है इसके अतिरिक्त ग्राही की भाषा, सभ्यता, संस्कृति, रुचि आदि भी ग्राही के संदेश ग्रहण करने को प्रभावित करती है।

(*v*) **फीडबैक यानी प्रतिपुष्टि**-संप्रेषण-प्रक्रिया में फीडबैक यानी प्रतिपुष्टि का बड़ा महत्त्व होता है। फीडबैक से आशय है संप्रेषण में संप्रेषक का संदेश ग्रहण करने के पश्चात् कोई प्रतिक्रिया करना या न करना फीडबैक कहलाता है। फीडबैक के माध्यम से संप्रेषण की गति में कुछ संशोधन किया जा सकता है। यह संप्रेषक को यह अवसर मुहैय्या कराती है कि वह संप्रेषण की अगली कड़ी में आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर अपने संप्रेषण को आगे बढ़ाए। फीडबैक के अभाव में संप्रेषण प्रक्रिया निरर्थक हो जाती है।

फीडबैक से यह मालूम हो जाता है कि संप्रेषण में संदेश की व्याख्या किस प्रकार की गई है। यहाँ एक तथ्य यह भी महत्त्वपूर्ण है कि एक से अधिक संदेशग्राही होने की स्थिति में संप्रेषक को अलग-अलग प्रतिक्रिया मिल सकती है। क्योंकि सामान्यत: प्रत्येक ग्राही की सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भिन्न होती है। खैर! संप्रेषण में परस्पर साझेदारी की प्रक्रिया विद्यमान रहती है। अत: फीडबैक भी मिलीजुली हो सकती है।

डॉ. सुशील त्रिवेदी[5] ने संप्रेषण के तीन बुनियादी तत्त्वों-स्रोत, संदेश और लक्ष्य को इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

1. **संचारक, प्रेषक या स्रोत**–जहाँ से संदेश का उद्भव होता है, चाहे वह व्यक्ति हो, पक्षी हो, वस्तु हो, वह तत्त्व संचारक, प्रेषक या स्रोत कहलाता है।
2. **संदेश**–जिस बात, भावना, विचार को संप्रेषित किया जाता है या किया जाना है वह संदेश कहलाता है।
3. **संदेश प्राप्तकर्ता, ग्राही या लक्ष्य**–जो व्यक्ति संदेश प्राप्त करता है, वह संदेश प्राप्तकर्ता, ग्राही या लक्ष्य कहलाता है। इन तीनों के समन्वय से संचार प्रक्रिया पूर्ण होती है। प्रक्रिया इस प्रकार है:

संचार या संप्रेषण की पूर्णता के लिए संदेश को भेजने के लिए उचित मार्ग या माध्यम का होना आवश्यक है। इस प्रकार के संचार से किसी प्रतिक्रिया या प्रभाव का उत्पन्न होना संभव है। संचार प्रक्रिया इस प्रकार है:

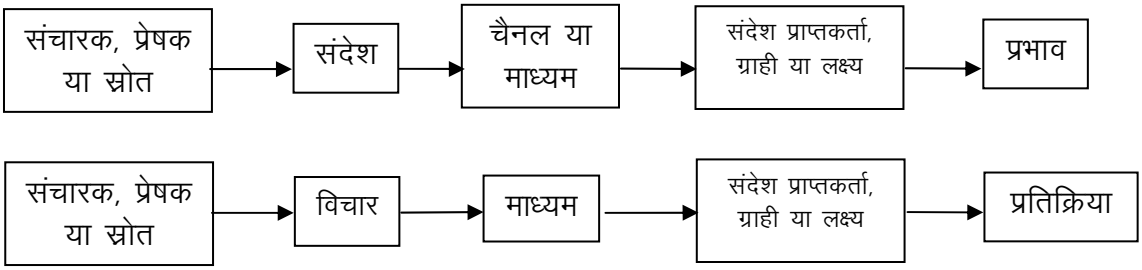

हमने ऊपर के चित्र में दो स्थितियाँ बतायी हैं, पहली स्थिति एक संदेश के रूप में और दूसरी स्थिति विचार के रूप में। दोनों ही स्थितियों में संचार प्रक्रिया एक समान हैं। प्रोफेसर हेराल्ड डी लॉसवेल ने संप्रेषण प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए बतलाया है कि ''संचार में यह महत्त्वपूर्ण है कि कौन कहता है, क्या कहता है, किस माध्यम में कहता है, किससे कहता है और किस भाव के साथ कहता है।''

1.5 प्रश्नों की जाँच स्वयं करना

प्रश्न (क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में दीजिए-

1. मनुष्य के जीवन का मुख्य कार्य सूचना संग्रहण होता है। (.....)
2. मनुष्य-जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण जरूरत संप्रेषण करना होता है। (.....)
3. व्यक्तिगत संप्रेषण व्यक्ति के लिए आवश्यक नहीं होता है। (.....)

प्रश्न (ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

1. संप्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम .....है। (भाषा/तकनीक)
2. संप्रेषण को सफल बनाने के लिए.....का भी प्रयोग करना चाहिए। (स्पष्टता/अस्पष्टता)
3. संप्रेषण में वक्ता से ज्यादा.....महत्त्वपूर्ण है। (विषयानुरूप/अविषयानुरूप)
4. संप्रेषण को पूर्ण करने में.....इत्यादि का चुनाव सावधानीपूर्वक करना चाहिए। (शब्दावली/विषयवस्तु)

1.6 संप्रेषण का महत्त्व

मानव जीवन संप्रेषण के बिना संभव नहीं है। जन्म से मृत्यु तक मनुष्य अपने जीवन में सूचनाओं के आदान-प्रदान का कार्य करता है। कभी किसी प्रश्न का उत्तर देता है, कभी किसी से प्रश्न पूछता है या कभी कोई सूचना दूसरों तक पहुँचाता है और यह कार्य संप्रेषण के बना संभव नही है।

संप्रेषण के महत्त्व को समझने के लिए संप्रेषण के प्रयोजन को जानना आवश्यक है। चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और हम सब अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें एक दूसरे के साथ संप्रेषण (communication) करना पड़ता है। और इसलिए संप्रेषण मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा है।

1. **व्यक्तिगत जरूरत**–हम सब की कुछ व्यक्तिगत जरूरतें होती हैं और उनको पूरा करने के लिए हम संप्रेषण करते हैं। दैनिक दिनचर्या, खाना-पीना, प्रेम, सेवा इत्यादि से संबंधित हमारी बहुत सी जरूरतें होती हैं जो बिना संप्रेषण के पूरी नहीं हो सकती हैं।

2. **व्यक्तिगत संबंध**–व्यक्तिगत संबंध बनाने के लिए भी संप्रेषण नितान्त जरूरी है। बिना बात-चीत के हम यह व्यक्तिगत संबंध बना ही नहीं सकते। जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि हमारे व्यक्तिगत संबंध ही होते हैं जो बातचीत के द्वारा ही पोषित होते हैं। उदाहरण के लिए एक माँ का अपने बच्चे को प्यार के साथ सही और गलत की पहचान कराना या बच्चों का अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा करना। और ये सारे संबंध संप्रेषण से ही संचालित होते हैं।

3. **सूचना**–मनुष्य के जीवन का मुख्य कार्य सूचना संग्रहण का होता है और यह कार्य बालावस्था से आरम्भ हो जाता है जैसे–जब बच्चा पहली बार पूछता है कि यह क्या है? ऐसा क्यों है? जिज्ञासा की यह प्रवृत्ति मानव स्वभाव का अभिन्न हिस्सा है जो संप्रेषण से ही संभव है।

4. **आपस में बातचीत**–जब वक्ता श्रोता तक अपने संदेश भेजता है तभी संप्रेषण संपन्न होता है। 'गप्प' संप्रेषण का एक मजेदार और मनोरंजक उदाहरण है। 'गप्प' के द्वारा हम एक दूसरे के विचारों, भावनाओं को दृष्टिकोणों को समझने का प्रयास करते हैं। और यह सब संप्रेषण के बिना संभव नहीं है।

5. **आग्रह**–इस प्रकार का संप्रेषण विज्ञापनों को देखने को मिलता है। विज्ञापनों को इस प्रकार बनाया ही जाता है कि वह ज्यादा से ज्यादा लोगों को पसंद आये और विज्ञापन इस प्रकार ग्राहकों से आग्रह किया जाता है कि ग्राहक उस वस्तु को लेने का मन बना लेता है।

6. **मनोरंजन**–मानव-जीवन की यह सबसे महत्त्वपूर्ण जरूरत है। जीवन में स्फूर्ति और उत्साह के लिए मनोरंजन अति आवश्यक है। जब एक ढर्रे पर जीवन चलता है तो उसमें नीरसता आ जाती है, उस नीरसता को दूर करने के लिए मनोरंजन जरूरी है। मनोरंजन के माध्यम से शिक्षा देना भी सुगम एवं सरल होता है। और इस कारण से भी संप्रेषण जरूरी है।

इस प्रकार हम देखें तो मानव-जीवन की जरूरतें संप्रेषण से ही पूरी होती हैं। इस प्रकार संप्रेषण का बहुत ही महत्त्व है। संप्रेषण प्रक्रिया में पाँच बातों का होना आवश्यक है–

1. वक्ता - बोलने वाला।
2. श्रोता - सुनने वाला।
3. माध्यम - संदेश भेजने का माध्यम।
4. संदेश - जो सूचना श्रोता को देनी है।
5. रुचि - वक्ता और श्रोता को बोलने और सुनने में रुचि होना।

इन सभी बातों में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका श्रोता की होती है। और श्रोता के बाद 'माध्यम' की जिसके जरिये संदेश को वक्ता-श्रोता तक भेजता है। उदाहरण के लिए यदि आपने अपने मित्र को मोबाइल से संदेश भेजा कि 'रमेश' कल तुम्हारी उपस्थिति ऑफिस में अनिवार्य है, तुम समय से आ जाना। ऐसे में अगर आपका मित्र अपने 'इनबॉक्स' को यदि महीनों खोलता ही नहीं है तो आपका संदेश भेजना व्यर्थ हो जाएगा। क्योंकि आपने जिस माध्यम का चुनाव किया था वह आपके संदेश को पहुँचाने में सफल नहीं हुआ। वक्ता और श्रोता दोनों मे संदेश के आदान-प्रदान की सक्रिय सहभागिता जरूरी है, और यह तभी संभव है जब श्रोता सुनने के साथ-साथ समझता भी हो। वक्ता का संदेश श्रोता तक जब वैसे ही पहुँचेगा जैसे वक्ता कहना चाहता हो, तभी संप्रेषण सफल होगा। संप्रेषण की यह सफलता पूरी तरह माध्यम पर निर्भर करती है।

'माध्यम' के बाद जो 'भाषा' की भूमिका आती है क्योंकि संदेश किसी न किसी भाषा में ही होता है। अत: सफल संप्रेषण के लिए वक्ता और श्रोता की भाषा एक होनी चाहिए। इसके अलावा सफल संप्रेषण में भाषाई दक्षता सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। वक्ता को काल, परिवेश और परिस्थितियों के अनुसार उचित भाषा का उपयोग करना चाहिए। विचारों को क्रम के अनुसार व्यक्त करना चाहिए, उचित शब्दों, भाव-भंगिमा के साथ बलाघात यानी उचित लहज़ा भी होना चाहिए, क्योंकि जब हम किसी की बात सुन रहे होते हैं तो दो तरह से संदेश को ग्रहण करते हैं।

1. एक तो जो प्रत्यक्ष रूप से हम सुनते, देखते और पढते हैं।
2. दूसरे जो अप्रत्यक्ष रूप से सामने वाला हमें संदेश भेज रहा होता है जैसे बोलने वाले का लहज़ा, उसके शब्द, उसके चेहरे के भाव इत्यादि। और अप्रत्यक्ष-संदेश प्रत्यक्ष-संदेश पर हमेशा भारी होता है। क्योंकि सूचना को ग्रहण करने के बाद श्रोता अप्रत्यक्ष-संदेश के अनुसार प्रतिक्रिया देता है। उदाहरण के लिए यदि ''आप किसी के घर गये हैं तो मेज़बान बिना आपकी तरफ देखे, बिना मुस्कुराये, भाव हीन चेहरा लेकर यदि आपसे भोजन करने को कहता है तो आप समझ जायेंगे कि मेज़बान भोजन कराना नहीं चाहता औपचारिकतावश पूछ रहा है।''

इस प्रकार वक्ता को अभीष्ट परिणाम के लिए शब्द, वाक्य, हाव-भाव, के साथ अपने लहज़े पर नियंत्रण रखना आना चाहिए।

इसके अलावा संप्रेषण को सफल बनाने के लिए मुहावरों एवं कहावतों का भी यथोचित प्रयोग करना चाहिए।

इस तरह से मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए व्यक्ति को संप्रेषण को समझते हुए उसका प्रयोग करना आना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो सफल जीवन का आधार ही सफल संप्रेषण है। यह संसार बातों से ही चलता है। इंसान की सुंदरता उसके बातों से ही झलकती है, पैसों से हम अपनी जरूरत पूरी कर सकते हैं लेकिन बातों से प्रेम, सम्मान, यश और कीर्ति कमा सकते है। वक्ता की वाणी में वह जादू होता है जो चाहे तो महाभारत करा दे और चाहे तो किसी के क्रोध को पानी पानी कर दे। उदाहरण के लिए–हम सब जानते हैं कि महाभारत क्यों हुआ था? फिर भी अधिकांश लोग महाभारत के होने के कारण के लिए द्रोपदी को जिम्मेदार ठहराते हैं। दुर्योधान बाल्यावस्था से क्रोध और आक्रोश से भरा हुआ था पर उसके इस क्रोध रूपी ज्वाला में द्रोपदी के संवाद ने घी का काम किया।

द्रौपदी का यह कथन–''अंधे पिता का पुत्र अंधा।'' और उसके साथ ही साथ द्रौपदी का उपहास करते हुए हँसना। यही कारण है कि महाभारत के लिए द्रौपदी को महाभारत का कारण यह संसार समझता है। इसलिए कबीरदास ने कहा भी है–

''ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोए।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होए।।''

अतः स्पष्ट है कि हम उसी से जुडते हैं, उसी की बात सुनते हैं, उसी के विचार को समझते हैं, जिसके बोलने का तरीका प्रेम को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का तरीका, अपनी भावनाओ को प्रकट करने का तरीका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सरलता, सुगमता, शालीनता और प्रेम से भरा होता है। इसलिए संप्रेषण करते समय वक्ता इन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

समग्रतः सफल एवं प्रभावी संप्रेषण के लिए विद्वानों ने 'सात सी' का सिद्धांत रखा है–जिसके बिंदु हैं–विश्वसनीयता (Credibility), संदर्भ (Context), विषय-वस्तु (Content), स्पष्टता (Clarity), निरंतरता एवं एकमतता (Continuity & Consistency), माध्यम (channnel), प्राप्तकर्ता की क्षमता (capability of audience)

1.7 संप्रेषण की प्रक्रिया

एक नवजात शिशु जन्म लेने के बाद जब पहली बार रोता है तो उसका रोना ही उसके परिवार के साथ उसका पहला संप्रेषण होता है। उसके बाद प्रत्येक क्षण यह संप्रेषण की प्रक्रिया सतत् रूप से जारी रहती है। संप्रेषण की यह प्रक्रिया सबसे पहले ध्वनि से, फिर शब्दों से, फिर वाक्यों के जरिए, संवेदनाओं आदि के माध्यम से होती रहती है। इस तरह हम संप्रेषण में अपनी सभी ज्ञानेन्द्रियों अर्थात कान, आँख, हाथ और अपने शरीर के समस्त अंगों का प्रयोग करते हैं।

अब संप्रेषण को हम यदि संपर्क के लिए एक तरह का संवाद यानी एक दूसरे तक अपनी बात पहुँचाने का प्रयास कहें तो गलत नहीं होगा। बोलकर, सुनकर, देखकर, पढ़कर चित्र बनाकर हम एक दूसरे तक अपनी बात पहुँचाते हैं, और दूसरों की बात समझते हैं।

समस्त मानवीय व्यवहार या मानवीय क्रिया कलाप संप्रेषण ही तो है। और यह मानवीय व्यवहार संप्रेषण होने के साथ-साथ एक प्रक्रिया भी है। इस प्रक्रिया में वक्ता का संदेश श्रोता तक पहुँचता है और श्रोता उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। मनुष्य का सोचना, समझना उसकी संवेदनाएँ और उसका संपूर्ण व्यवहार संप्रेषण के अंतर्गत ही आता है। संप्रेषण की प्रक्रिया को समझने के लिए संप्रेषण के तत्त्वों को जानना आवश्यक है।

लासवेल (1948) के अनुसार संप्रेषण के अध्ययन में निम्नलिखित तत्त्व हैं-

1. कौन (कहता है)?
2. क्या (कहता है)?
3. किस माधयम से (कहता है)?
4. किसको (कहता है)?
5 कितने प्रभाव से (कहता है)?

जॉन कॉटर के अनुसार-''सूचना'' को किसी माध्यम से भेजने व प्राप्तकर्त्ता का उसकी प्रतिक्रिया देने पर ही संदेश के प्रेषण की प्रक्रिया पूर्ण होती है। इसको हम इस तरह भी समझ सकते हैं–

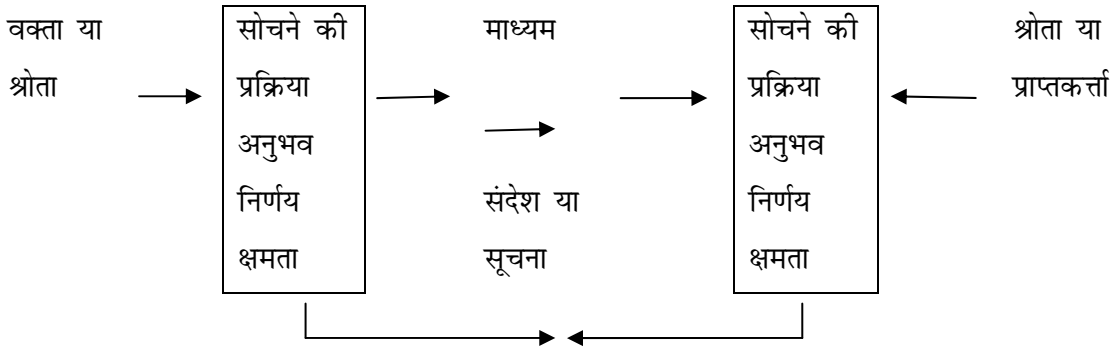

इस रेखाचित्र को देखकर यह बात समझ में आती है कि जब वक्ता और श्रोता का मानसिक स्तर, सोचने समझने का ढंग, अनुभव करने का तरीका और निर्णय क्षमता इन सभी में तालमेल होगा और इसके साथ ही संदेश भेजने का माध्यम सही होगा, तब संप्रेषण की प्रक्रिया संपन्न होगी। और संप्रेषण की यह प्रक्रिया सफल तब होगी जब श्रोता या प्राप्तकर्त्ता अपनी वक्ता के अपेक्षानुसार प्रतिक्रिया दे देगा।

संप्रेषण की प्रक्रिया में दोतरफा संचार प्रवाह (Two way flow communication) को बनाए रखना जरूरी है। संचार की प्रक्रिया में एक तरफा प्रवाह नहीं हो सकता क्योंकि उसमें गलतफहमी, गलत व्याख्यान की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

सही व प्रभावपूर्ण संचार के लिये यह आवश्यक है कि जो भी संदेश दिया जाय उसकी प्रतिक्रिया उसी समय ग्रहणकर्ता द्वारा प्राप्त हो। कम से कम इतना तो पता चले कि जो संदेश प्रदान किया जा रहा है उसका कुछ प्रभाव ग्रहणकर्ता पर पड़ रहा है या नहीं। इसके बाद ही संदेश की प्रक्रिया पूर्ण मानी जा सकती है।

संचार जीवन को अर्थपूर्ण और जीवंत बनाता है। यह हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। जब हम पढ़ते हैं या सोचते हैं तो संचार होता है, जब हम अपने विचारों को किसी के सामने रखते हैं तब संचार होता है, जब हम अपने विचारों, जानकारी, भावनाओं का किसी के साथ आदान-प्रदान करते हैं तब संचार होता है यही नहीं, जब हम सोते समय सपने देखते हैं तो यह भी संचार है। कहने का तात्पर्य यह है कि संचार हर समय होता है।

संक्षेप में, संप्रेषण प्रक्रिया में मुख्य रूप से निम्नलिखित तत्त्व सक्रिय रूप से भाग लेते है:-

1. वक्ता या स्रोता
2. वाक् क्षमता या वाणी को अभिव्यक्त करने का कौशल
3. संदेश
4. माध्यम

5. श्रोता या प्राप्तकर्त्ता
6. संदेश पाने वाला
7. अनुक्रिया या प्रतिक्रिया
8. संदेश का संदर्भ
9. जीवन के प्रति वक्ता और श्रोता का दृष्टिकोण
10. श्रोता और वक्ता का जीवन मूल्य।

संप्रेषण प्रक्रिया के इन तत्त्वों का विवरण इस प्रकार है–

1. **वक्ता या श्रोता**–किसी भी संदेश का जन्म किसी न किसी स्रोत से ही होता है या स्रोत कोई व्यक्ति भी हो सकता है। मौखिक संप्रेषण में इसी स्रोत को वक्ता तथा लिखित संप्रेषण में इसी स्रोत को लेखक कहते हैं। यह स्रोत या वक्ता अपने विचारों को संप्रेषित करने का कार्य करता है।

2. **वाक् क्षमता या वाणी को अभिव्यक्त करने का कौशल**–वक्ता के अंदर अपने विचारों और भावनाओं को भाषा के द्वारा अभिव्यक्त करने की कला को वाक् क्षमता अर्थात् 'बोलने की कला' कहते हैं। अर्थात् वक्ता के अंदर वक्तृत्व क्षमता होनी चाहिए तभी श्रोता उसके संदेश को समझ पायेगा।

3. **संदेश**–संदेश हमेशा अर्थपूर्ण होना चाहिए। यह संदेश या सूचना मौखिक, लिखित, आंगिक या सांकेतिक भी हो सकता है। भाषा में तो शब्दों, वाक्यों, प्रतीकों आदि के माध्यम से संदेश प्रसारित किये जाते हैं। भाषा का एक व्याकरण होता है। जैसे 'नवीन ने नियम को मारा' और 'नियम ने नवीन को मारा।' इन दोनों वाक्यों का अर्थ एकदम विपरीत है। इस प्रकार प्रत्येक भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए उस भाषा का अपना मुहावरा होता है। और प्रत्येक भाषा किसी न किसी संस्कृति का हिस्सा भी होती है। अत: यह अति आवश्यक है कि वक्ता को अपनी भाषा के व्याकरण, संस्कृति, मुहावरे आदि को समझना चाहिए। क्योंकि भाषा ही संदेश का आधार है। और भाषा के जरिए ही संदेश बनता है। संदेश कई बार अशाब्दिक भी होते हैं परंतु अर्थ संपूर्ण होता है। मौखिक और आंगिक संप्रेषण की अभिव्यक्ति एक साथ होती है।

   उदाहरण के लिए 'जाओ' एक शब्द है परंतु बोलने के ढंग से इसका अर्थ बदल जाता है। यह आदेश, अनुमति, क्रोध, स्नेह और हड़बड़ी किसी का भी बोधक हो सकता है। संप्रेषण की प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए वक्ता को अपनी भाषा और वाणी में तालमेल रखने की कला आनी चाहिए तभी सही ढंग से संदेश प्रेषित होगा।

4. **माध्यम**–संप्रेषण प्रक्रिया में संदेश को संप्रेषित करने का माध्यम एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। मौखिक संप्रेषण में मुख ध्वनि माध्यम होता है, लिखित संप्रेषण में लिपि माध्यम होती है। और अब तो विज्ञान का युग है और इस वैज्ञानिक युग में वक्ता के पास माध्यमों की कमी नहीं है जैसे रेडियो, टेलीविज़न, इंटरनेट इत्यादि।

5. **प्राप्तकर्त्ता**–जो संदेश को ग्रहण करता है उसे श्रोता या प्राप्तकर्त्ता कहते हैं। मौखिक संप्रेषण में श्रोता ही प्राप्तकर्त्ता होता है और लिखित संप्रेषण में पाठक प्राप्तकर्त्ता होता है।

   संप्रेषण प्रक्रिया में वक्ता को यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि वह संदेश किसको प्राप्त कराना चाहता है। संदेश जिसके लिए है उसी को संप्रेषित करना चाहिए।

6. **संदेश प्राप्ति**–संदेश प्राप्ति को ही अंग्रेजी में decoding कहा जाता है। जब श्रोता वक्ता द्वारा भेजे गये संदेश का वैसे ही ग्रहण करता है–जैसे वक्ता चाहता है तो यह सर्वोत्तम स्थिति होती है। संदेश प्राप्ति में कभी श्रोता वक्ता बन जाता है और कभी वक्ता श्रोता बन जाता है। उदाहरण के लिए जब दो लोग फोन पर बात करते हैं तो यह स्थिति उत्पन्न होती है।

7. **अनुक्रिया या प्रतिक्रिया**–वक्ता और श्रोता संवाद के जरिए अपनी संप्रेषण की प्रक्रिया पूरी करता है। श्रोता द्वारा वक्ता को भेजे गये संदेश को प्रतिक्रिया या 'फीडबैक' कहते हैं। आमने-सामने के संप्रेषण में ये प्रतिक्रिया तुरंत हो जाती है। जैसे–विद्यालय के कक्षा कक्ष में अध्यापक और छात्रों के बीच यह प्रतिक्रिया तुरंत हो जाती है। प्रतिक्रिया शाब्दिक और अशाब्दिक, मौखिक और सांकेतिक, साकारात्मक और नाकारात्मक भी होती है।

8. **संदर्भ (संदेश)**–प्रत्येक सूचना या संदेश का संदर्भ अवश्य होता है–यह संदर्भ शारीरिक, मनौवैज्ञानिक और सांस्कृतिक भी हो सकता है। उदाहरण के लिए यदि आप अकेले हैं और आपको चोट लग गई तो आपके मुँह से अभद्र शब्द भी निकल सकता है।

   ठीक वैसे ही एक संदेश को मित्र से बात करते समय, पिता से बात करते समय या पड़ोसी से बात करते हुये अलग-अलग ढंग से संप्रेषित किया जाता है।

9. **जीवन के प्रति वक्ता और श्रोता का दृष्टिकोण**-वक्ता और श्रोता जीवन को कैसे समझते हैं, कैसे देखते हैं। इस बात का प्रभाव इन दोनों की समझ पर पड़ता है। और यह समझ का प्रभाव संप्रेषण की प्रक्रिया का सफल या असफल बनाती है।

10. **वक्ता और श्रोता का जीवन मूल्य**-वक्ता और श्रोता के जीवन मूल्य अर्थात् उनके जीवन में नैतिकता का क्या स्थान है। यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि नैतिकता ही हमें उचित और अनुचित का बोध कराती है। जब यह नैतिकता वक्ता और श्रोता में एक ही स्तर का होता है तो संप्रेषण की प्रक्रिया संपूर्ण रूप से सफल होती है। जैसे कक्षा में अध्यापक का पूरे लगन के साथ अपनी कर्त्तव्य भावना में डूबकर किसी पाठ को पढ़ाना और छात्रों का उतने ही लगन और ध्यान के साथ उस ज्ञान को ग्रहण करना।

    समग्रत: यह कहना उचित होगा संप्रेषण सम्पर्क है, संवाद है, जीवन को जीने की एक कला है। संप्रेषण के बिना व्यक्ति के सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। सामाजिक जीवन के लिए संप्रेषण का महत्त्व निर्विवाद रूप से है, संप्रेषण प्रक्रिया का प्रस्थान बिंदु वक्ता है और श्रोता और प्रतिक्रिया संप्रेषण का विस्तार है।

1.8 प्रश्नों की जाँच स्वयं करना

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर केवल हाँ या नहीं में दीजिए–

   (क) जॉन कॉटर सूचना को किसी माध्यम से भेजने व प्राप्तकर्ता का उसकी प्रतिक्रिया देने पर ही संदेश के प्रेषण की प्रक्रिया को पूर्ण मानते हैं।

   (ख) संप्रेषण की प्रक्रिया दो तरफा होती है।

   (ग) संप्रेषण प्रक्रिया में माध्यम का कोई महत्त्व नहीं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप शब्दों में दीजिए।

   (क) संप्रेषण प्रक्रिया/फीडबैक के तत्त्वों का वर्णन कीजिए।

   (ख) संप्रेषण में प्रतिक्रिया का क्या महत्त्व है बताइए।

   (ग) संप्रेषण की प्रक्रिया में सबसे महत्त्वपूर्ण कौन होता है और क्यों ? समझाइए।

3. अभ्यास के लिए प्रश्न

   (क) संप्रेषण का अर्थ व परिभाषा स्पष्ट करते हुए संप्रेषण के तत्त्वों का उल्लेख करें।

   (ख) संप्रेषण क्या है? संप्रेषण के उद्देश्य एवं प्रक्रिया का विवेचन कीजिए।

   (ग) संप्रेषण की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए संप्रेषण का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

संदर्भ

1. सुसिमता बाला एवं अम्बरीष सक्सेना– *समकालीन संचार सिद्धांत*, पृ.–38
2. डॉ. मंजु मुकुल– *संप्रेषण: चिंतन और दक्षता*, पृ.– 17–18
3. देवेन्द्र इस्सर– *जनमाध्यम संप्रेषण और विकास*, पृ.–80
4. डॉ. श्रीकांत सिंह– *मानव संचार शास्त्र*, पृ.– 81–82
5. *सोशल मीडिया*, डॉ. सुशील त्रिवेदी, पृ.16

पाठ–2

संप्रेषण के विभिन्न मॉडल एवं अभाषिक संप्रेषण

डॉ. अनिल कुमार
स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली

2.1 प्रस्तावना

संप्रेषण मानव–समाज में भावों एवं विचारों के आदान–प्रदान की एक सामाजिक प्रक्रिया है। यही कारण है कि समाज की तमाम संस्थाओं, समूहों और व्यक्तियों के बीच संप्रेषण होता है। यह केवल संदेश देने, एक–दूसरे को परस्पर संदेश प्रेषित करने और संदेश ग्रहण करने वाले व्यक्ति के कार्य–व्यवहार तक ही सीमित न होकर एक बहुआयामी प्रक्रिया है। संप्रेषण की इस बहुआयामी प्रक्रिया के विषय में अलग–अलग समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न संप्रेषण माडॅल (प्रतिरूप) समाज के सामने रखे हैं। प्रतिरूप वस्तुतः सरल एवं स्पष्ट शब्दों में सैद्धांतिक कथन होता है। और हाँ, प्रतिरूप/मॉडल केवल एक व्याख्यात्मक कल्पना भर नहीं है अपितु यह सिद्धांत निर्माण में भी सहयोगी है। इस प्रकार संप्रेषण–कौशल विकास के लिए संप्रेषण–सिद्धान्तों और प्रतिरूपों के विषय में जानना आवश्यक है।

यहाँ सहज ही यह जिज्ञासा बल पकड़ती है कि मॉडल/प्रतिरूप क्या है? संप्रेषण के विभिन्न प्रतिरूप कौन–कौन से हैं? और साथ ही संप्रेषण प्रक्रिया में अभाषिक संप्रेषण क्या है और इसका महत्त्व क्या है? इस अध्ययन–सामग्री में आप संप्रेषण के विभिन्न प्रतिरूपों और अभाषिक संप्रेषण के विषय में पढेंगे।

2.2 अधिगम का उद्देश्य

1. इस अध्ययन–सामग्री को पढ़कर आप प्रतिरूप/मॉडल और संप्रेषण–प्रक्रिया में इनके महत्त्व को जान सकेंगे।
2. सूचना एवं संप्रेषण–क्षेत्र में प्रचलित विभिन्न प्रतिमानों और उनके गुण–दोषों के विषय में जान सकेंगे।
3. अभाषिक संप्रेषण क्या है और संप्रेषण–प्रक्रिया में अभाषिक संप्रेषण के महत्त्व को जान सकेंगे।
4. संप्रेषण के प्रतिरूपों और अभाषिक संप्रेषण के विषय में अपनी समझ के आधार पर राय दे सकेंगे।

3.3 विषय–प्रवेश एवं विवेचन

संप्रेषण–प्रक्रिया में संप्रेषण प्रतिरूप बड़े ही महत्त्वपूर्ण होते हैं क्योंकि संप्रेषण प्रतिरूपों का ज्ञान सहज ही हमें यह विवेक प्रदान करता है कि हम किस प्रतिरूप को अपनाकर अपनी संप्रेषण प्रक्रिया को प्रभावशाली बना सकते हैं। वस्तुतः प्रतिरूप "काम करने वाली वह बौद्धिक रचना है जिसके द्वारा प्राकृतिक स्थितियों का प्रतिनिधत्व किया जा सके। ये स्थितियाँ वास्तविक या परिकल्पनात्मक हो सकती है। इस प्रकार

प्रतिरूप उस आदर्श का रूप है जिसे प्राप्त करना है अथवा उस नमूने को जिसे प्राप्त करना चाहिए। (A Model is a working intellectual construct by which social or physical situation can be represented these situation can be real or hypothetical. A Model thus stands for an ideal which is to be achieved or a pattern which is to be followed)"[1]

संप्रेषण के विभिन्न प्रतिरूपों/मॉडलों पर बात करने से पूर्व यहाँ मॉडल के अर्थ, संदर्भ, उनके कार्यों एवं महत्त्व को जानना आवश्यक है।

मॉडल शब्द अंग्रेजी भाषा का है, जिसका आशय है–किसी तथ्य, विचार या सिद्धांत को स्पष्ट करने या समझाने की प्रक्रिया। मॉडल कार्य को क्रियान्वित करने की बौद्धिक प्रक्रिया है। हिंदी में मॉडल के लिये प्रतिमान और प्रतिरूप/प्रारूप शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं। इन तीनों शब्दों से सामान्यतः अर्थ लिया जाता है किसी प्रक्रिया के प्रमुख तत्त्वों को उनके आपसी संबंधों के साथ प्रदर्शित किया जाता है। प्रतिरूप एक तरह से प्रयोगात्मक विवरण होता है, जिसमें सामाजिक प्रणाली/ प्रक्रिया की प्रकृति और उसकी गुणवत्ता को प्रस्तुत किया जाता है।

संप्रेषण प्रतिरूप/मॉडल संप्रेषण की प्रक्रिया को प्रदर्शित करते हैं। ये इस अवधारणा पर आधृत होते हैं कि अमुक सिद्धांत से किस प्रकार संप्रेषण प्रक्रिया पूर्ण होती है और व्यक्ति/समाज पर इसका प्रभाव किस प्रकार पड़ता है। दूसरे शब्दों में, संप्रेषण प्रतिरूप के अंतर्गत संप्रेषण की प्रक्रिया, स्वरूप एवं परिणाम आदि संबंधी तथ्य निहित रहते हैं। इसमें संप्रेषण के तत्त्वों और उन तत्त्वों के आपसी संबंधों को अभिव्यक्त किया जाता है।

संप्रेषण–प्रक्रिया में जिन मान्यताओं, परिवेश और सीमाओं में संदेश को संप्रेषित किया जाता है, वही संप्रेषण प्रतिरूप कहे जाते हैं। अर्थात् किसी विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण में किया गया संप्रेषण ही संप्रेषण–प्रतिरूप है। संप्रेषण प्रतिरूप का कार्य मुख्य रूप से व्याख्या करना होता है। जिसके अंतर्गत संप्रेषण संरचना, उसके घटक और आंतरिक संगति का प्रकटीकरण आदि होता है। संप्रेषण–प्रतिरूप में संप्रेषक, संदेश, माध्यम, संदेश प्राप्तकर्त्ता मुख्य होते हैं। इन भिन्न–भिन्न तत्त्वों के रुप, अर्थ और चरित्र की खोज करना ही प्रतिरुप का मुख्य लक्ष्य होता है। संप्रेषण प्रतिरूपों को समझे बिना सफल एवं प्रभावी संप्रेषण प्रक्रिया को जानना बड़ा मुश्किल है।

संप्रेषण मॉडल/प्रतिरूप के अर्थ व गुण–दोषों के विषय में समग्रता से विचार करें तो हम पाते हैं कि मॉडल से तात्पर्य है किसी भी प्रकार का प्रारूप (draft)। मॉडल में स्थायित्व होता है। एक बार मॉडल बन जाने के बाद यह मान लिया जाता है कि वह हमेशा क्रियाशील रहेगा। समाज/विश्व की परिस्थितियों में परिवर्तन के अनुरूप मॉडल के स्वरूप में परिवर्तन नहीं होने से उनकी शुद्धता, मौलिकता और प्रभाव में कमी आ जाती है। परंतु इसी तथ्य के चलते पुराने मॉडलों/प्रतिरूपों में किंचित संशोधन के साथ अनेक नवीन प्रतिरूपों का प्रतिपादन होता रहता है। संक्षेप में, प्रारूप निर्माणकर्ता को सामान्यतया उपर्युक्त बात का पता रहता है, फिर भी ये इन कमियों को दूर करने का प्रयास नहीं करते हैं, जिसके कारण समय के साथ कमियाँ और अधिक प्रकट होती हैं। प्रारूप के उपयोग में शुद्धता लाने के लिए वस्तुनिष्ठता का होना आवश्यक होता है। मानवीय दृष्टिकोणों के आधार पर वस्तुनिष्ठता प्रभवित होती है।

उपर्युक्त कतिपय दोषों के होते हुए भी संप्रेषण प्रतिरूपों का संप्रेषण-प्रक्रिया की सफलता के लिए महत्त्व निर्विवाद है। क्योंकि संप्रेषण प्रतिरूप संप्रेषण-प्रक्रिया को बहुत हद तक सरल बना देते हैं। साथ ही ये संप्रेषण-प्रक्रिया की सभी क्रियाविधि एवं जटिलता को अपने में समाहित किए रखती है। इसके अतिरिक्त संप्रेषण के विभिन्न प्रतिरूप संप्रेषण-प्रक्रिया और उससे पड़ने वाले प्रभावों को समझाते हैं। संप्रेषण प्रतिरूप के कार्य- संप्रेषण-प्रक्रिया की प्रत्येक क्रियाविधि को भौतिक रूप से आँखों से हम देख नहीं सकते परंतु समझ सकते हैं। समझने-समझाने की प्रक्रिया में प्रतिरूप मदद करता है और साथ ही यह सिद्धांत रचना में भी मददगार होता है। डॉ. श्रीकांत सिंह ने ड्यूस्क के हवाले से संप्रेषण प्रतिरूप के चार प्रमुख कार्य माने हैं-

1. **संगठित करना**—मॉडल/प्रतिरूप तथ्यों व आँकड़ों को व्यवस्थित कर उनके आपसी संबंधों को निर्धारित कर उन्हें सही रूप में अभिव्यक्त करने का काम करते हैं।
2. **स्वतः शोध संबंधी कार्य**—प्रतिरूप में कार्य-कारण की ऐसी पद्धति होती है, जिसके द्वारा नवीन तथ्यों का शोध करने में मदद मिलती है।
3. **अनुमान योग्य बनाना**—प्रतिरूप में भविष्य की संभावनाओं की परिस्थितियों का अनुमान अनुमानित किया जा सकता है।
4. **मापन संबंधी कार्य**—प्रतिरूप में विषय के स्तर के अनुरूप मापन में भी मदद मिलती है। इसके मुख्यतः दो आधार हैं—(क) गुणवत्ता परक, एवं (ख) संख्यात्मक प्रस्तुतिकरण।

2.4 संप्रेषण प्रतिरूपों/मॉडलों का महत्त्व

संप्रेषण प्रतिरूपों में मुख्य रूप से तीन तत्त्व होते हैं- संप्रेषक, संदेश और संदेश प्राप्त करने वाला। संप्रेषण प्रतिरूपों में इनके विभिन्न रूपों, चरित्रों और अर्थ की खोज-बीन इन प्रतिरूपों का लक्ष्य होता है। संप्रेषण प्रतिरूपों के माध्यम से संदेश संरचना, संदेश के केंद्र में निहित संघटकों की आंतरिक संगति प्रकट होती है। साथ ही इन तत्त्वों में सक्रिय संबंधों का भी ज्ञान मिलता है। संप्रेषण-प्रक्रिया को समझने के लिए इन संप्रेषण प्रतिरूपों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। क्योंकि इन प्रतिरूपों की समझ के अभाव में संप्रेषण की प्रक्रिया को समझना बहुत मुश्किल है।

2.5 संप्रेषण के प्रतिरूप/मॉडल

संप्रेषण प्रतिरूप मुख्यतः संप्रेषण-प्रक्रिया का प्रस्तुतिकरण है। संप्रेषण प्रक्रिया परिस्थितियों, उद्देश्यों और श्रोता की आवश्यकतानुसार परिवर्तित होती रहती है। अतः संप्रेषण प्रतिरूपों की संख्या और उनके वर्गीकरण के रूप भी अनेक हैं। संप्रेषण प्रतिरूपों पर समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों सहित विभिन्न विद्वानों के कार्य क्षेत्र का प्रभाव स्पष्ट दिखता है। सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से साम्यवादी प्रतिरूप उदारवादी मॉडल, इस्लामिक मॉडल, ईसाई मॉडल एवं वैदिक मॉडल आदि प्रमुख हैं। साम्यवादी प्रतिरूप समाज में शोषक-शोषित के विचार पर आधारित है। इसमें शोषकों के प्रति घृणा और शोषितों के प्रति करुणा का भाव दिखता है। इसके साथ ही यह प्रतिरूप परंपरागत रूप से जीवनयापन करने पर बल देता है साथ ही वैश्विक घटनाओं से जनसामान्य को दूर रखने का प्रयास करता है। यह प्रतिरूप अपनी संकीर्णता के कारण

प्रचलित नहीं हो पाया। संप्रेषण के *उदारवादी प्रतिरूप* में साम्यवादी प्रतिरूप के अवगुण नहीं हैं। इसमें पूर्ण रूप से वैचारिक स्वतंत्रता होती है। यहाँ तक कि सरकार के विरूद्ध भी विचाराभिव्यक्ति की जा सकती है। इस प्रतिरूप में दैनिक जीवन की आवश्यकताओं और कठिनाइयों को समझने, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के विकास जैसे मुद्दों की प्रधानता दिखाई देती है। *इस्लामिक संप्रेषण प्रतिरूप* इस्लामिक आचार संहिता एवं धार्मिक कट्टरता पर आधारित है। इस प्रतिरूप का सबसे बड़ा दोष यह है कि यह स्त्रियों एवं अन्य धर्म-संप्रदायों के प्रति अत्यधिक कठोर और निर्दयी है। मुस्लिम देशों में यह प्रतिरूप देखने को मिलता है। *वैदिक संप्रेषण प्रतिरूप* गुरु-शिष्य की शिक्षा पद्धति यानी मौखिक संप्रेषण पर आधारित है। यह संप्रेषण प्रतिरूप भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों पर आधारित है। परंतु कुछ तो अंग्रजी शासन एवं विद्वानों ने और बहुत कुछ अंग्रेजी रंगत में रंगे भारतीय विद्वानों ने इस संप्रेषण प्रतिरूप की अनदेखी की। इसलिए यहाँ पर एक प्रमुख उल्लेखनीय तथ्य यह भी देखने में आता है कि संप्रेषण प्रक्रिया और उसके अध्ययन-मनन पर पाश्चात्य प्रभाव और वर्चस्व अधिक दिखाई देता है। यही कारण है कि संप्रेषण प्रतिरूपों को पश्चिम की देन के रूप में जाना जाता है। यहाँ कुछ प्रमुख संप्रेषण प्रतिरूपों का विवरण इस प्रकार है-

1. **SMR संप्रेषण प्रतिरूप**–मोटे रूप में संप्रेषण में संप्रेषक, संदेश और श्रोता होते हैं। इसीलिए सबसे सरल प्रतिरूप SMR है। SMR एक सरल रेखीय संप्रेषण प्रतिरूप है जिसमें संदेश/संप्रेषित करने वाला संप्रेषक, संदेश और संदेश प्राप्त करने वाला यानी प्राप्तकर्ता प्रधान रूप से तीन तत्त्व होते हैं।

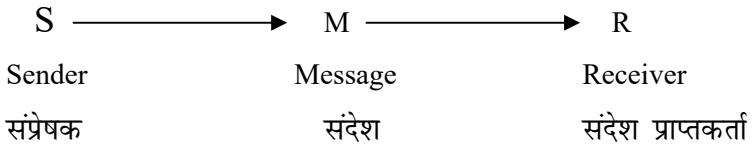

   संदेश भेजने वाले व्यक्ति को संचारक (Communicator or sender) कहा जाता है। सूचना, ज्ञान या विचार जिसका संप्रेषण किया जाता है, संदेश (message) है। संदेश प्राप्त करने वाला व्यक्ति प्राप्तकर्ता, श्रोता या दर्शक (Receiver) कहलाता है। संप्रेषक संदेश (message) को किसी भाषा अथवा अन्य चिह्नों (Language or Symbols) द्वारा प्राप्तकर्ता तक पहुँचाता है। यह प्रतिरूप एक तरह से तमाम संप्रेषण प्रतिरूपों का आधार है। क्योंकि इस प्रतिरूप के आधार पर ही संप्रेषण के अन्य प्रतिरूपों का निर्माण हुआ है।

   SMR प्रतिरूप संप्रेषण प्रक्रिया में संप्रेषण की एक स्थायी प्रक्रिया को दर्शाता है, जो कि संप्रेषक के संदेश भेजने से शुरू होकर संदेश प्राप्तकर्ता के संदेश ग्रहण करने पर समाप्त हो जाती है। परंतु संप्रेषण प्रक्रिया में व्यक्ति/वर्ग या समाज के स्तर पर संप्रेषण का कभी अंत नहीं होता।

2. **अरस्तू का संप्रेषण प्रतिरूप**–संप्रेषण क्षेत्र का विद्वत् वर्ग ग्रीक दार्शनिक एवं चिंतक 'अरस्तू' के संप्रेषण प्रतिरूप को संप्रेषण का प्रथम प्रतिरूप मानता है। यह प्रारूप आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व प्रस्तुत किया गया था। उस समय आधुनिक संप्रेषण साधनों का सर्वथा अभाव था। उस समय विचारों के प्रचार-प्रसार का प्रमुख साधन संत-महात्मा और उनके उपदेश हुआ करते थे। चूँकि ये संत-महात्मा सामान्यतः समूह के समक्ष अपने उपदेश रखते थे। अतः अरस्तू का संप्रेषण मॉडल समूह-संप्रेषण पर ही

आधारित है। यह संप्रेषण प्रतिरूप समूह संप्रेषण पर केंद्रित है। इस प्रतिरूप में वैयक्तिक संप्रेषण के सूत्र नहीं है।

अरस्तू की मान्यता है कि संप्रेषण अलग-अलग अवसरों पर अलग-अलग श्रोताओं को अपने संप्रेष्य से प्रभावित कर सकता है। इस प्रारूप के पाँच तत्त्व हैं- 1. वक्ता (Communicator), 2. संदेश (Message), 3. संदेश प्राप्तकर्त्ता (Receiver), 4. अवसर (Occasion), 5. प्रभाव (Effect)

अरस्तू संप्रेषण में सबसे प्रमुख वक्ता को मानते हैं। अरस्तू के प्रतिरूप में श्रोता जनसामान्य न होकर राज्य का अभिजात्य वर्ग है; जिस पर प्रभाव उत्पन्न करने की दृष्टि से वक्ता की भाषा शैली, शब्द भंडार आदि सशक्त होने चाहिए। इसके लिए वक्ता को श्रोता पर अपेक्षित प्रभाव डालने के लिए अपने भाषण की पूर्व तेयारी भलीभाँति कर लेनी चाहिए। रेखीय रूप में अरस्तू का संप्रेषण प्रतिरूप इस प्रकार है–

यह प्रतिरूप प्राचीनकाल में तो प्रभावी रहा होगा परंतु आज यह अधिक प्रभावशाली नहीं ठहरता। इस प्रतिरूप में संप्रेषण के कई पहलुओं का जिक्र ही नहीं है जैसे-यह प्रतिरूप जनसमूह को केवल निष्क्रिय भीड़ के रूप में देखता है। साथ ही इसमें अशाब्दिक संप्रेषण का कोई जिक्र नहीं है।

3. **हेराल्ड डी. लासवेल का संप्रेषण प्रतिरूप-** हेराल्ड डी. लासवेल अमेरिकी विद्वान थे और ये मीडिया क्षेत्र के अध्येयता थे। इन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् और शीतयुद्ध की शुरुआत के दौरान प्रोपेगेंडा का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि संप्रेषण व्यक्ति के विचार, कार्य, आचार-व्यवहार और तौर-तरीकों को प्रभावित व परिवर्तित करता है। लासवेल का यह संप्रेषण प्रतिरूप 1948 में प्रस्तुत किया गया था। अरस्तू की भाँति इस प्रतिरूप के तत्त्व हैं-

कौन कहता है–संप्रेषक

क्या कहता है–संदेश

किस माध्यम से कहता है–माध्यम

किसको कहता है–संदेश ग्रहीता/संदेश प्राप्तकर्ता

इसका प्रभाव क्या है–प्रभाव

लॉसवेल के संप्रेषण प्रतिरूप का संप्रेषण प्रक्रिया के क्षेत्र में बड़ा महत्त्व है। क्योंकि इस प्रतिरूप में प्रत्येक स्तर पर शोध एवं विवेचन-विश्लेषण किया जा सकता है। जैसे–

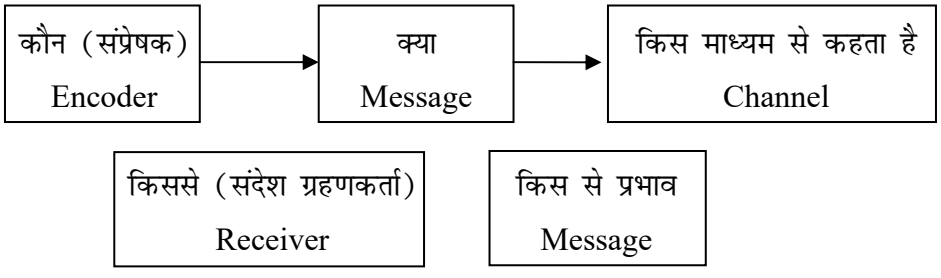

लॉसवेल के संप्रेषण प्रारूप का विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि स्रोत (कौन) यानी संप्रेषक अथवा नियंत्रक का विश्लेषण किया जाता है। इसके बाद क्या कहता है (संदेश) का विवेचन-विश्लेषण किया जाता है कि यह पता चल सके कि संदेश की विषय-वस्तु क्या है? किस माध्यम से (माध्यम) के अंतर्गत माध्यम के विषय में यह शोध किया जा सकता है कि कितने विस्तृत क्षेत्र तक संदेश का प्रचार-प्रसार किया जा सकता है। किससे (श्रोता) का विश्लेषण कर यह खोज की जाती है कि श्रोता की समझ, व्यवहार, आवश्यकता, आकार एवं प्रवृत्ति आदि क्या-क्या हैं? प्रभाव के अंतर्गत यह विश्लेषण किया जाता है कि संप्रेषण प्रक्रिया का श्रोताओं पर क्या प्रभाव पड़ा। लॉसवेल अपने इस प्रतिरूप में यह मानकर चलते हैं कि संदेश ग्रहणकर्त्ता पर संप्रेषण प्रक्रिया प्रभाव निश्चित रूप से पड़ेगा ही।

लॉसवेल का यह संप्रेषण प्रतिरूप अपने आपमें महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसमें संप्रेषण की लगभग सभी संभावनाएँ समाहित हैं। परंतु इसकी एक छोटी-सी खामी यह है कि इसमें उन्होंने प्रतिपुष्टि/फीडबैक का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया परंतु प्रभाव के अंतर्गत इसे समझा जा सकता है।

4. **ब्रौडॉक का संप्रेषण प्रतिरूप-** लॉसवेल के संप्रेषण प्रतिरूप में थोड़ा-सा परिवर्तन-परिवर्द्धन कर ब्रौडॉक ने सन् 1958 में अपना संप्रेषण प्रतिरूप प्रस्तुत किया। ब्रौडॉक ने लॉसवेल द्वारा प्रतिपादित संप्रेषण प्रतिरूप में निहित तत्त्वों के अतिरिक्त दो अन्य संप्रेषण तत्त्वों-परिस्थिति एवं उद्देश्य-

1. परिस्थतियाँ- किन परिस्थितियों में संप्रेषक ने संदेश को संप्रेषित किया।

2. उद्देश्य- संदेश संप्रेषण का उद्देश्य क्या है?

को सम्मिलित कर अपना संप्रेषण मॉडल प्रस्तुत किया। इस प्रकार ब्रौडॉक द्वारा प्रस्तुत संप्रेषण प्रतिरूप के प्रमुख तत्त्व हैं-

1. कौन (स्रोत)	Who - Source
2. क्या कहता है (संदेश)	What - Message
3. किस माध्यम से (माध्यम)	Which - Channel
4. किससे (संदेश प्राप्तकर्ता)	To whom
5. किन परिस्थितियों में (परिस्थितियाँ)	In which circumstances
6. किस उद्देश्य से (उद्देश्य)	What is the purpose
7. प्रभाव क्या है (प्रभाव)	What in the effect

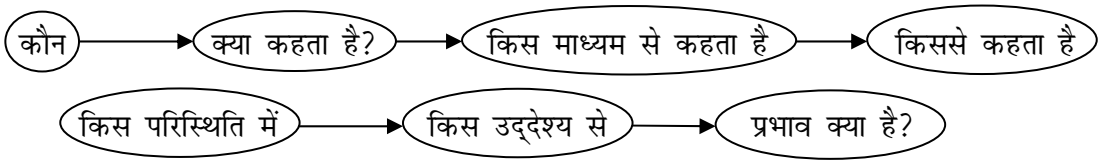

ब्रौडॉक संप्रेषण प्रतिरूप बहुत हद तक सही एवं संप्रेषण का एक प्रभावी प्रतिरूप है। परंतु फिर भी यह प्रतिरूप कुछ कमियों को भी लिए हुए है। जैसे-

1. इस प्रतिरूप में बताया गया है वक्ता श्रोता को प्रभावित करने के उद्देश्य से संप्रेषण करता है किन्तु सदैव ऐसा नहीं होता। घर-परिवार में जो संप्रेषण-क्रिया होती है वहाँ प्रभाव डालने से अधिक सामान्य रूप से सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है। हाँ, यह सिद्धाँत प्रोपेगेंडा/प्रचार पर ठीक बैठता है वहाँ संप्रेषण प्रभावित करने के उद्देश्य से ही किया जाता है।

2. संप्रेषण प्रक्रिया में चूँकि पत्र-पत्रिकाओं का पाठक वर्ग, टी.वी. के दर्शक वर्ग से पृथक होता है, ऐसे ही रेडियो का दर्शक वर्ग भी अपना अलग महत्त्व रखता है। लक्षित समूह भिन्न-भिन्न हैं, अतः ऐसी स्थिति में इस प्रतिरूप द्वारा सीधा निष्कर्ष निकालना संभव नहीं है।

3. इस प्रतिरूप में फीडबैक को जगह नहीं दी गई है।

4. ब्रौडॉक संप्रेषण-प्रक्रिया में सप्रेषण के प्रभाव को अवश्यंभावी मानते हैं परंतु यह जरूरी नहीं है क्योंकि कभी-कभी संप्रेषण-प्रक्रिया पूर्णतः प्रभावहीन रह जाती है। क्योंकि संप्रेषक एवं संदेश ग्रहणकर्त्ता दोनों की क्षमताओं पर निर्भर करता है। इससे यह प्रतिरूप संप्रेषण के शाश्वत् एवं प्रभावशाली होने का भ्रम पैदा करता है।

5. **शैनन एवं वीवर का संप्रेषण प्रतिरूप-** क्लाउडन शैनन एवं वारेन वीवर दोनों ही अमेरिकी विद्वान दूरसंचार क्षेत्र से संबंधित थे। अतः इनका संप्रेषण प्रतिरूप मूलतः दूरसंचार की समस्याओं को ध्यान में रखकर विकसित हुआ था। इन दोनों ने टेलिफोन संबंधी संप्रेषण-प्रक्रिया के आधार पर सन् 1949 में अपना संप्रेषण प्रतिरूप प्रस्तुत किया। परंतु यह प्रतिरूप मानव संप्रेषण प्रक्रिया को भी भलीभाँति अभिव्यक्त करता है। इस प्रारूप के अनुसार संदेश श्रोता तक सही-सही तभी पहुँच पाता है जब माध्यम में कोई शोर-शराबा न हो।

रेखीय चित्र द्वारा शैनन एवं वीवर द्वारा प्रतिपादित प्रतिरूप को इस प्रकार समझा जा सकता है-

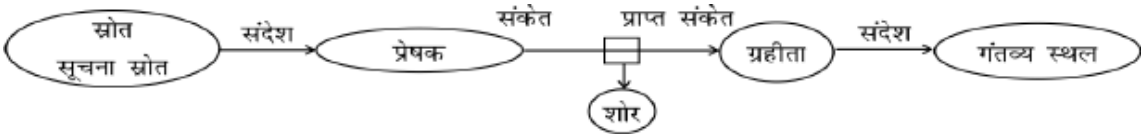

इस प्रारूप को ध्यान में रखकर ही संप्रेषण का गणितीय सिद्धांत प्रस्तुत किया गया। इस सिद्धांत की मान्यतानुसार 'A' टेलिफोन द्वारा 'B' से बातचीत करता है। यहाँ पर 'A' संदेश का स्रोत है। वह अपना संदेश टेलिफोन के माध्यम से प्रेषित करता है। टेलिफोन यहाँ माध्यम है। 'A' का शाब्दिक संदेश यांत्रिक रूप में 'B' तक टेलिफोन के जरिए पहुँचता है। संप्रेषण-प्रक्रिया पूर्ण होने पर 'B' का मत निर्माण होता है। यह प्रतिरूप रेखीय संप्रेषण का उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस प्रतिरूप में संप्रेषण एक पक्षीय रूप से होता है।

समग्रता से यदि हम इस प्रतिरूप के गुण-दोष पर विचार करें तो हम पाते हैं कि इसका सबसे बड़ा अवगुण है शोर। शोर से आशय है - संदेश में अस्पष्टता। शोर यांत्रिक और अयांत्रिक दोनों प्रकार का हो सकता है, जो संदेश-प्रक्रिया के मार्ग में एक बड़ी बाधा बनता है। इसके अतिरिक्त इस संप्रेषण प्रतिरूप में प्रतिपुष्टि और सामाजिक संदर्भ के प्रभावों का कोई जिक्र नहीं किया गया।

6. **विल्बर श्रेम का संप्रेषण प्रतिरूप–** विल्बर श्रेम ने सन् 1954 में शैनन व वीवर के संप्रेषण मॉडल में संशोधन करते हुए अपना संप्रेषण प्रतिरूप विकसित किया। इन्होंने अपने अनुभव व चिंतन के फलस्वरूप अपने प्रतिरूप के तीन प्रारूप प्रस्तुत किए।

श्रेम ने अपने पहले संप्रेषण प्रतिरूप को बहुत ही सरल प्रतिरूप के रूप में प्रस्तुत किया। इसमें दिखाया गया है कि संप्रेषक/स्रोत के उद्देश्य है आसानी से संदेश को लक्ष्य/श्रोता तक पहुँचाना।

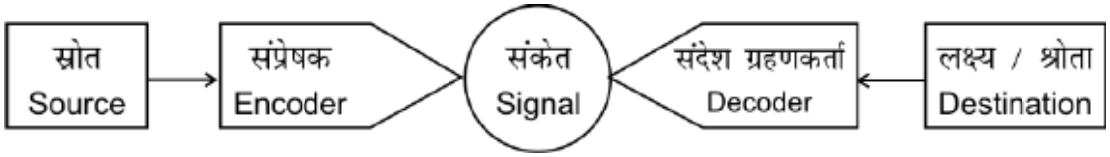

श्रेम ने अपने दूसरे संप्रेषण प्रतिरूप में यह दर्शाया है कि संप्रेषण में एक–दूसरे से बातचीत और अनुभव क्षेत्र संबंधी संदेश के आदान–प्रदान पर वातावरण का प्रभाव कितना पड़ता है। श्रेम के पहले प्रतिरूप में परिवर्तन के साथ ही इस तथ्य की जानकारी मिलती है कि स्रोत/संप्रेषक और संदेश प्राप्तकर्ता का अनुभव क्षेत्र एक समान होता है। फलस्वरूप इससे संकेत भी प्रभावित होते हैं।

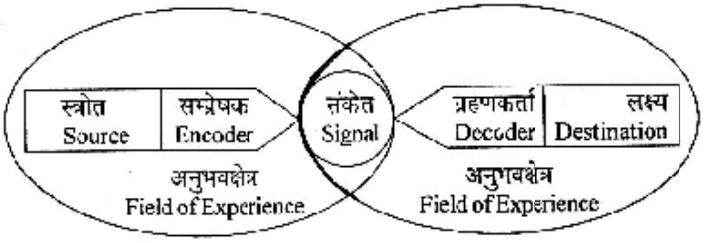

अपने तीसरे प्रतिरूप में श्रेम ने बताया है कि संप्रेषक/स्रोत द्वारा प्रदान की गई जानकारी/संदेश अपने लक्ष्य/संदेश ग्रहणकर्ता तक भले ही पहुँच जाए परंतु प्रतिपुष्टि के द्वारा इस संदेश को और अधिक पुख्ता किया जा सकता है। श्रेम ने अपने इस प्रतिरूप में प्रतिपुष्टि के महत्त्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। संप्रेषण के इस प्रतिरूप में संप्रेषक (Encoder) संदेश प्राप्तकर्ता (Decoder) में परस्पर अपनी भूमिका बदलते रहते हैं। इससे पता चलता है कि संप्रेषण के जनमाध्यमों में श्रोता को प्रभावित करने की बहुत अधिक क्षमता रहती है।

विल्बर श्रेम के प्रतिरूप संप्रेषण के बहुआयामी पक्षों और अंत:क्रियाओं पर विशेष बल देते हैं। अंत:क्रिया में व्यक्तित्व, स्रोत की प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता, संज्ञानात्मक स्थिरता, अभिवृति की प्रकृति तथा कतिपय संदेशों के प्रति चयनात्मक दृष्टिकोण शामिल है। इसके अलावा श्रेम के प्रतिरूप में सामाजिक संदर्भ यानी संदेश के उद्‌भव और प्रवाह आदि पर प्रकाश डाला गया है।

समग्रत: श्रेम के संप्रेषण प्रतिरूप में मुख्य रूप से निम्नलिखित तत्त्व शामिल हैं–

1. स्रोत (Source) 2. संप्रेषक (Encoder) 3. संकेत (Signal) 4. प्राप्तकर्ता (Decoder) 5. गंतव्य (Destination)। परंतु श्रेम के प्रतिरूप में कम से कम स्रोत, संदेश और प्राप्तकर्ता इन तीन संप्रेषण तत्त्वों का होना अति आवश्यक है। पहले स्रोत अपने संदेश को एनकोड करता है। यह एनकोड किया गया संदेश सिग्नल के रूप में लक्ष्य तक पहुँचता है जो संदेश को डिकोड करता है।

7. **सी.ई. आसगुड और विल्बर श्रेम का सरकुलर संप्रेषण प्रतिरूप–** सी.ई. आसगुड और विल्बर श्रेम ने सन् 1954 में संप्रेषण के प्रचलित प्रतिरूपों से कुछ भिन्न प्रतिरूप प्रस्तुत किया। इसमें संप्रेषण-प्रक्रिया के प्रमुख तत्त्व-संप्रेषक और संदेश प्राप्तकर्ता के व्यवहार पर अधिक बल दिया गया है। चूँकि यह प्रतिरूप संप्रेषण-प्रक्रिया को गतिशील रूप में अभिव्यक्त करता है। अतः इसे 'सरकुलर मॉडल' के नाम से भी जाना जाता है। आसगुड और विल्बर ने शैनन और वीवर की भाँति ट्रांसमीटर तथा रिसीवर शब्द प्रयुक्त न करके व्याख्याता (Interpreter), संप्रेषक (Encoder) और प्राप्तकर्ता (Decoder) की प्रक्रिया का अलग-अलग उल्लेख किया है। समग्रतः इस प्रतिरूप में संप्रेषण प्रक्रिया में संप्रेषण को Enconding के रूप में Decoding को प्राप्तकर्ता के रूप में देखा जाता है।

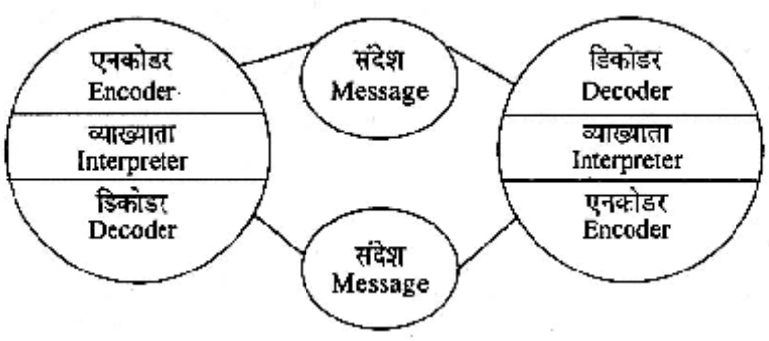

उपर्युक्त चित्र का विश्लेषण करें तो हम देखते हैं कि Encoding की प्रक्रिया के अंतर्गत संप्रेषक (Communicator) अपने संप्रेष्य संदेश को बोलकर, लिखकर या फिर संकेतों द्वारा प्राप्तकर्ता की समझ के अनुरूप प्रस्तुत करता है। Decoding के अंतर्गत संप्रेषक द्वारा एनकोड किए गए संदेश को श्रोता व्यक्ति डीकोड करता है। यानी वह संदेश को अपनी क्षमता एवं दृष्टिकोण के अनुसार समझता है।

Interpretation के अंतर्गत डिकोड किए गए संदेश का विश्लेषण करके संदेश प्राप्तकर्ता उस संदेश का अर्थ निकालता है तथा मूल्यांकन करता है।

Encoding संदेश प्राप्तकर्ता संदेश को डिकोड व उसका मूल्यांकन करने के पश्चात् उसके मन में अन्य अनेक जिज्ञासाएँ पैदा हो सकती हैं। यदि वह अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना चाहता है तो वह दूसरे व्यक्ति को संदेश भेजता है। इससे वह संप्रेषक की भूमिका में आ जाता है। दूसरा व्यक्ति उस संदेश को डिकोड करता है। यह प्रक्रिया इस तरह से चलती रहती है। इस प्रक्रिया में व्यक्तियों की संप्रेषण क्षमता, उनका दृष्टिकोण, उनका ज्ञान और उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति महत्त्वपूर्ण बनी रहती है।

संप्रेषण का यह प्रतिरूप Interpersonal Communication के लिए बहुत ही सार्थक है। परंतु इस प्रतिरूप में यदि प्रतिपुष्टि/फीडबैक का तत्त्व न हो तो यह प्रतिरूप अनुपयोगी हो जाएगा। यही कारण है कि आसगुड और श्रेम का यह प्रतिरूप संप्रेषण-प्रक्रिया में उपयोगी सिद्ध न हो सका और फलस्वरूप श्रेम को एक अन्य संप्रेषण प्रतिरूप प्रतिपादित करना पड़ा जिससे कि संप्रेषण प्रक्रिया को जाना-समझा जा सके।

8. **गर्बनर के संप्रेषण प्रतिरूप**–जॉर्ज गर्बनर अमेरिकी संप्रेषणविद थे और उनका उद्देश्य एक ऐसे संप्रेषण मॉडल का विकास करना था, जो कि संप्रेषण के व्यापक क्षेत्रों पर लागू हो सके। गर्बनर प्रतिरूप की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें संप्रेषण की विभिन्न स्थितियों पर निर्भर करने वाले विभिन्न स्वरूपों का वर्णन है। यानी किसी विशिष्ट दशा में किस तरह का संप्रेषण होगा इसके विभिन्न हिस्सों को पृथक-पृथक रूपों में जोड़ा जा सकता है। यह प्रतिरूप संदेश की रचना-प्रक्रिया और संदेश के सहसंबंध को स्पष्ट करता है। गर्बनर ने अपने संप्रेषण प्रतिरूप को शाब्दिक और रेखीय दोनों रूपों में प्रस्तुत किया है। संक्षेप में, गर्बनर के संप्रेषण प्रतिरूपों का विवरण इस प्रकार है-

(क) गर्बनर का शाब्दिक प्रतिरूप- गर्बनर का शाब्दिक प्रतिरूप बहुत कुछ लासवेल और अरस्तू द्वारा प्रतिपादित संप्रेषण प्रतिरूप से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समानता रखता है। कुछ बिंदुओं पर अरस्तू के प्रतिरूप से भिन्न भी है। संक्षेप में, गर्बनर द्वारा प्रतिपादित शाब्दिक प्रतिरूप का ढाँचा इस प्रकार है–

1. कोई (Some one)
2. किसी घटना का अवबोधन करके (Perceives an Event)
3. प्रतिक्रिया करता है (and reacts)
4. एक स्थिति में (in a situation)
5. किसी साधन द्वारा (through some means)
6. ताकि उपलब्ध सामग्री को बना सके (to make available materials)
7. किसी रूप में (in some form)
8. किसी परिप्रेक्ष्य में (and context)
9. भेजने योग्य संदेश (Conveying content)
10. किसी निष्कर्ष के साथ (with some consequence)

(ख) गर्बनर का रेखीय प्रतिरूप–गर्बनर के शाब्दिक संप्रेषण प्रतिरूप में जो-जो चरण प्रदर्शित किए गए हैं वे सभी रेखीय प्रतिरूप में शामिल नहीं है। रेखीय प्रतिरूप में यह स्पष्ट किया गया है कि किसी घटना का कोई व्यक्ति किस प्रकार अवबोधन (Perceive) करता है और फिर वह इस घटना को किस तरह एक संदेश के रूप में प्रेषित करता है। इस प्रक्रिया में यह कोई आवश्यक नहीं कि घटना को वह किस रूप में अवबोधित करता है और फिर उपलब्ध साधनों के आधार पर किस तरह वह उस घटना को संदेश के रूप में ढालकर अग्रसर करता है।

ध्यान देने की बात यहाँ यह है कि यह प्रक्रिया फिर आगे बढ़ती है क्योंकि जब कोई संदेश किसी दूसरे तक पहुँचता है तो वह भी अपने ढंग से उसका अवबोधन करता है और उसे संदेश के रूप में रूपांतरित कर पुनः दूसरे तक (आगे) पहुँचाता है। यह प्रक्रिया किसी घटना को

अवबोधन करने वाले के चयन के तरीके, परिप्रेक्ष्य और उपलब्ध साधनों का महत्त्वपूर्ण प्रभाव होता है

गर्बनर का रेखीय प्रतिरूप वास्तव में दो रूपों में सामने आया है। पहला प्रतिरूप सन् 1956 में और दूसरा प्रतिरूप सन् 1964 में उन्होंने प्रस्तुत किया।

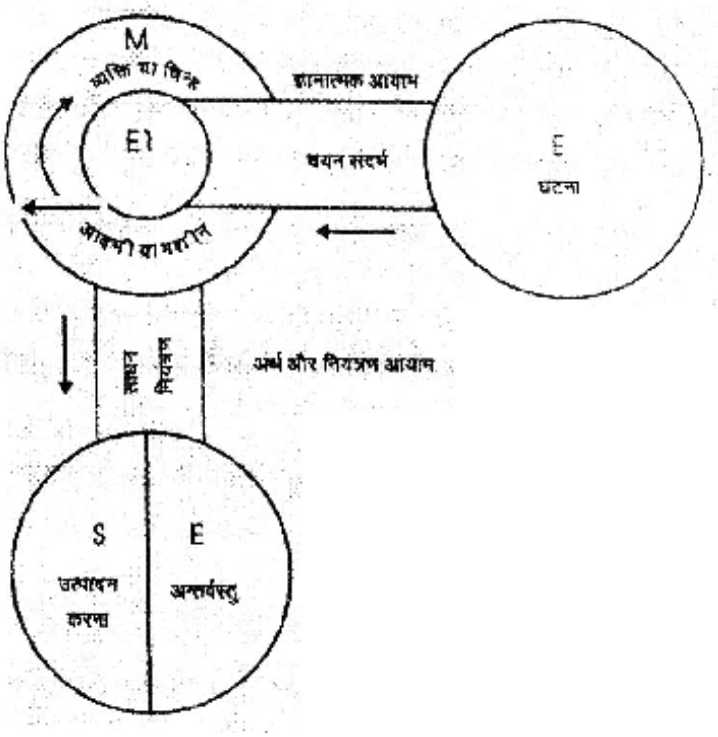

उपर्युक्त संप्रेषण प्रतिरूप के केन्द्र में M है जो कि किसी व्यक्ति का पर्याय है। वह किसी E यानी घटना को देखता है किन्तु अपनी चयन प्रक्रिया, परिप्रेक्ष्य तथा उपलब्ध साधनों के परिणामस्वरूप वह E को वास्तव में E_1 के रूप में देखता है। अर्थात् M उस समय जो अवबोधन करता है वह E न होकर, बल्कि E_1 है जबकि मूल तथ्य E है। इस तरह E, M और E_1 के मध्य अवबोधन का संबंध है।

अब M उस उस घटना के विषय में औरों को भी बताना चाहता है। इसके लिए वह अपने संप्रेषण को रचना S, E के रूप में करता है। यहाँ S का तात्पर्य Shape या Form से है। जबकि E का अभिप्राय अंतर्वस्तु है। अत: वह सन्देश अर्थात S E को भेजने के लिए M तीन चीजों पर निर्भर है –

1. साधन (Channel), 2. माध्यम (Media), 3. अन्तर्वस्तु (Content)

और हाँ, यहाँ माध्यम पर स्वयं M का नियंत्रण है।

(ग) गर्बनर का संशोधित संप्रेषण प्रतिरूप 1964– गर्बनर ने अपने संप्रेषण प्रतिरूप में जल्दी ही थोड़ा संशोधन कर सन् 1964 में प्रस्तुत किया। अपने संशोधित प्रतिरूप में गर्बनर ने बताया कि

M ने E को E_1 के रूप में अवबोधित कर SE के रूप में दूसरों तक भेजा। अब यह दूसरा व्यक्ति M_2 उस संदेश को यानी SE को SE_1 के रूप में अवबोधित करता है। यह प्रक्रिया उसी प्रकार चलती है जैसे कि वह M के साथ चली थी। अर्थात् M_2 अपनी चयन प्रक्रिया, परिप्रेक्ष्य और उपलब्ध साधनों के आधार पर SE को अवबोधित SE_1 के रूप में करेगा।

E अर्थात् घटना को M यानी माध्यम M_1 के रूप में अवबोधित करता है और SE के रूप में ग्रहण करता है। इस तरह मूल चीज E थी जो E_1 और SE बनने के बाद श्रोता SE तक के रूप में पहुँचती है।

अत: गर्बनर द्वारा प्रस्तुत 1964 का प्रतिरूप अवबोधन–रचना–अवबोधन की शृंखला पर आधारित है। इस प्रारूप के द्वारा गर्बनर इस सवाल को उठाते हैं कि संप्रेषण माध्यमों के द्वारा किसी घटना के विषय में जो जानकारी प्रदान की जाती है और उसे ग्रहीता जिस रूप में ग्रहण करता है, ये दोनों चीजें वास्तविकता से कितना मेल खाती हैं।

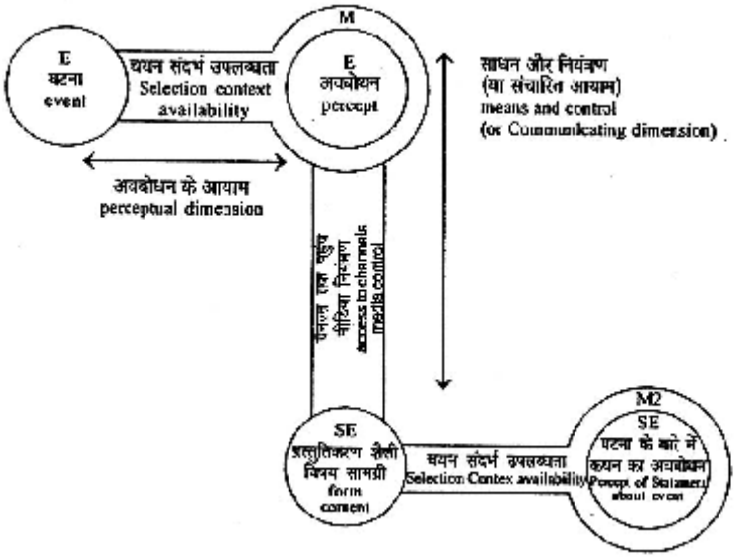

9. **न्यूकॉम्ब का ABX प्रतिरूप**– थियोडोर एम. न्यूकॉम्ब समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र के अध्ययेता थे। उन्होंने शैनन वीवर के एक रेखीय संप्रेषण प्रतिरूप के विपरीत सन् 1453 में अपना एक शोध 'An Approach to the Study of Communicative Acts' नाम से प्रकाशित कराया। इससे न्यूकॉम्ब का सामाजिक संदर्भ प्रतिरूप त्रिकोणीय रूप में अस्तित्व में आया। इस मॉडल के द्वारा पहली बार समाज में या सामाजिक संबंधों में संप्रेषण की भूमिका को एक महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में शामिल किया गया।

इस मॉडल में A और B संप्रेषक (Communicator) तथा X सामाजिक संदर्भ (Social Context) हैं, जिनमें संप्रेषण की प्रक्रिया हो रही है। A तथा B दोनों X से बातचीत (Interaction) करते हैं और साथ ही वे दोनों आपस में भी बातचीत कर रहे हैं। संप्रेषण की प्रक्रिया में आवश्यक समायोजन (Adjustment) से संतुलन बनाए रखा जाता है। इस प्रकार निरन्तर (Continuous) और द्विचरणीय

(Two Way) फीडबैक प्राप्त किया जा सकता है। इससे न्यूकॉम्ब का संप्रेषण प्रतिरूप सामाजिक संबंधों के निर्माण एवं विकास में संप्रेषण की भूमिका को व्यक्त करता है।

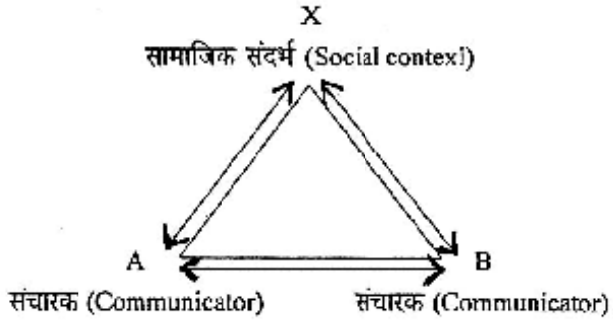

न्यूकॉम्ब के संप्रेषण प्रतिरूप में मुख्यत: तीन तत्त्व दिखाई देते हैं - स्रोत, संदेश और ग्रहीता संक्षेप में न्यूकॉम्ब के अनुसार संप्रेषण की इस प्रक्रिया में दो या दो से अधिक व्यक्ति आपस में एक दूसरे की ओर उन्मुख हो सकते हैं तथा साथ ही बाहरी वातावरण की वस्तुओं से भी सम्पर्क बनाए रख सकते हैं।

10. **रिले एंड रिले का संप्रेषण प्रतिरूप** -John W. Rialy vkSj Matilada Whilda White Riley का कहना है कि जनमाध्यम श्रोता, प्राप्तकर्ताओं का एक समग्र समूह है। यह प्राप्तकर्ता एक दूसरे से जुड़े रहते हैं और इनकी प्रतिक्रिया इनके संबंधों पर आधारित होती है।

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संचारक तथा संचारी एक दूसरे की प्रतिक्रिया से प्रभावित होते हैं।

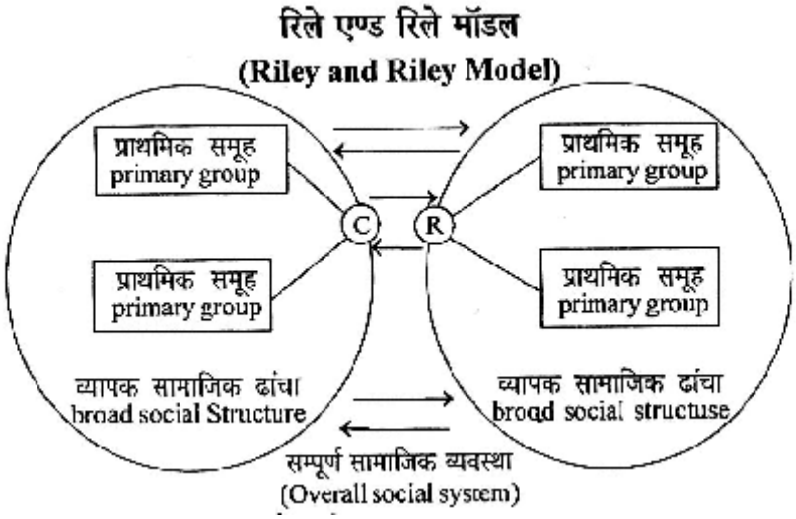

यह एक व्यापक, कई चरणों वाला, गतिमान सूचना संप्रेषण का सामाजशास्त्रीय प्रतिरूप है जो सामाजिक प्रणाली के बहुत सारे पक्षों को एक साथ लेकर चलता है। इसके मूल में जनसंचार है। इस मॉडल के अनुसार संप्रेषण और संप्रेषक आपस में तीनों चरणों में सामाजिक व्यवस्था या प्रणाली से बातचीत करते हैं।

11. **बेरलो का SMCR प्रतिरूप**- डेविड बेरलो ने अपने संप्रेषण प्रतिरूप में बताया है कि संप्रेषक पहले संदेश को अपने ज्ञान और अनुभव के चलते सांकेतिक भाषा में बदलता है। इसके पश्चात् वह किसी

माध्यम के द्वारा संदेश ग्रहणकर्ता को भेजता है। संदेश ग्रहणकर्ता संदेश को किस प्रकार और किस रूप में ग्रहण करता है यह उसके दृष्टिकोण और ज्ञान पर निर्भर करता है।

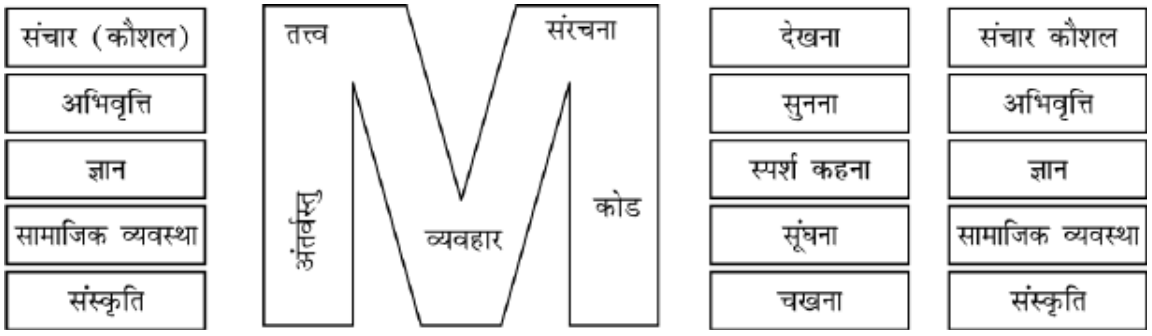

यद्यपि संप्रेषण क्षेत्र में माध्यम/ चैनल को विभिन्न तरीकों से समझाया गया है। परंतु डेविड बेरलो ने ज्ञानेंद्रियों -देखना, सुनना, स्पर्श करना, सूँघना और चखना को माध्यम माना है। दूसरे ध्वनि तरंगों, विद्युत व चुंबकीय तरंगों आदि को भी संदेश का वाहक मान लिया गया है। अतः इसे भी चैनल माना जाता है। तीसरे तरंगों के वाहक हवा या तरंगें भी चैनल मानी गई हैं जो कि स्रोत से ग्रहणकर्ता तक संदेश को पहुँचाते हैं और अंत में चैनल शब्द जनसंचार में मीडिया के समानार्थी रूप में किया गया है। इससे टी.वी., रेडियो, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, इंटरनेट आदि जनसंचार के विविध चैनल है। इस प्रकार इस संप्रेषण प्रतिरूप में चैनल को नए तत्त्व के रूप में सम्मिलित किया गया है परंतु इसमें संप्रेषण को स्थिर घटना माना गया है। फीडबैक की चर्चा या अवदान का इसमें कहीं भी जिक्र नहीं है। डेविड वेरलो द्वारा प्रतिपादित संप्रेषण प्रतिरूप के आधारभूत तत्त्व है- 1. स्रोत 2. संदेश 3. चैनल 4. ग्रहणकर्त्ता। संक्षेप में, वेरलो के प्रतिरूप के तत्त्वों का विवरण इस प्रकार है-

1. **स्रोत (Source)** - स्रोत अपने संदेश को प्रेषित करने के लिए अपने संदेश को Encode करता है, जिससे कि संदेश से निर्धारित प्रभाव उत्पन्न किये जा सकते हैं। वेरलो ने स्रोत के लिए चार प्रमुख कारकों को महत्त्वपूर्ण माना है। ये कारक हैं-

   (क) **संप्रेषण कौशल**–वेरलो के शाब्दिक संप्रेषण कौशल में पाँच प्रकार के होते हैं जिसमें क्रमशः बोलना और लिखना कूट रचना कौशल से संबंधित हैं तो दो सुनना एवं पढ़ना कूट रचना को समझना यानी डिकोडिंग से संबंधित है। और पाँचवां दोनों का सम्मिलन है, इसे विचार और तार्किकता कहते हैं। स्रोत के पास संदेश के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कूट रचना का सम्मिलन है इसे विचार और तार्किकता कहते हैं। स्रोत के पास संदेश के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कूट रचना का कौशल होना चाहिए। उसके पास संदेश के प्रकटीकरण के लिए अभिव्यक्ति हेतु पर्याप्त हाव-भाव, उच्चारण, भाषायी ज्ञान तथा संदेश की व्याख्या संबंधी कौशल होने चाहिए।

   (ख) **अभिवृत्ति**–स्रोत की स्वयं के प्रति तथा ग्रहीता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए।

   (ग) **ज्ञान का स्तर**- स्रोत का अपने संदेश प्रेषण संबंधी विषयवस्तु के विषय में ज्ञान का स्तर भी संदेश को प्रभावित करता है। कोई व्यक्ति ऐसी विषयवस्तु को संप्रेषित नहीं कर पाता जिसे वह

नहीं जानता है। अत: संप्रेषक जिस चीज के विषय में संदेश प्रेषित करना चाहता है उसके विषय में उसे उसका अधिकाधिक ज्ञान होना चाहिए।

(घ) **सामाजिक-सांस्कृतिक प्रणाली**—स्रोत/संप्रेषक किस प्रकार की सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था में कार्य कर रहा है। यह भी संप्रेषण प्रक्रिया में काफी महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि अलग-अलग सामाजिक वर्गों की अलग-अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोग होते हैं जो अलग-अलग संप्रेषण करते है।

इस प्रकार वेरलो के अनुसार संप्रेषक में उपर्युक्त चारों कारक आवश्यक हैं।

2. **संदेश**—वेरलो प्रतिरूप का दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व संदेश है, जो कि स्रोत का भौतिक उत्पाद है। संदेश में तीन कारक बड़े महत्त्वपूर्ण हैं- 1. संदेश कूट, 2. संदेश की विषयवस्तु, 3. संदेशोपचार।

3. **चैनल**—वेरलो के SMCR प्रतिरूप में C चैनल का प्रतीक है। चैनल का यहाँ अर्थ है- संदेश का वाहक। वैरलो ने पाँचों ज्ञानेंद्रियों को चैनल के रूप में माना है जिनसे संदेश ग्रहणकर्ता संदेश को समझता है।

4. **ग्रहणकर्ता**—संदेश ग्रहणकर्ता में भी चार कौशल होने आवश्यक हैं। ये हैं- 1. संचार कौशल, 2. अभिवृत्ति, 3. ज्ञान का स्तर 4. सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था।

संदेश ग्रहणकर्ता में सुनने-पढ़ने की दक्षता आवश्यक है, जिससे कि वह संदेश को प्राप्त करने और उसे डिकोड करने में समर्थ हो सके। ऐसे ही संदेश ग्रहणकर्ता ने संदेश को किस प्रकार समझा है। यह इस तथ्य पर निर्भर करता है कि उसकी अभिवृत्ति स्रोत के प्रति, स्वयं के प्रति और संदेश की अंतर्वस्तु के प्रति सकारात्मक है या नहीं। इनके साथ ही संदेश ग्रहणकर्ता के स्वयं के सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण, उसकी समूह सदस्यता आदि सब भी ग्रहणकर्ता द्वारा संदेश के अर्थ को प्रभावित करते हैं।

वेरलो के SMCR संप्रेषण प्रतिरूप में संप्रेषण प्रक्रिया के तत्त्वों को विशेषीकृत किया गया है। उनके अनुसार स्रोत और ग्रहणकर्ता के कौशल, अभिवृत्ति और मूल्यों की समानता एक सीमा तक सफल संप्रेषण के लिए आवश्यक है। वेरलो के प्रतिरूप की कमियाँ भी हैं, जैसे कि इस संप्रेषण प्रक्रिया में माध्यम, साधन, प्रतिपुष्टि आदि को समुचित महत्त्व नहीं दिया गया है।

इस प्रकार संप्रेषण प्रक्रिया के क्षेत्र में प्रचलित कुछ सामाजिक-सांस्कृतिक और चिंतकों के विचारों पर आधारित संपेषण प्रतिरूपों के अध्ययन-मनन के पश्चात् कहा जा सकता है कि समाज के विकास के साथ-साथ संप्रेषण के स्वरूप एवं ढाँचे में परिवर्तन-परिवद्र्धन होता है। इससे संप्रेषण-प्रक्रिया की ताकत से समाज निर्मित एवं विकसित होता है। सभी संप्रेषण प्रतिरूप सामाजिक व्यवहार और वैयक्तिक स्तर पर मानवीय व्यवहार के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं। व्यावहारिक रूप से संप्रेषण-प्रक्रिया के कोई नियम एवं सिद्धांत निर्धारित नहीं किए जा सकते। हाँ, केवल उसे परिचालित और प्रभावित करने वाले तत्त्वों पर बात की जा सकती है। उसमें भी मुख्यत: वक्ता, संदेश तथा श्रोता और इन तत्त्वों के इर्द-गिर्द संपूर्ण संप्रेषण-प्रक्रिया क्रियाशील रहती है। इनमें से किसी भी तत्त्व की अनुपस्थिति के कारण संप्रेषण प्रक्रिया में व्यवधान आ जाता है। जब वक्ता स्वगत संलाप से संभाषण तक की दूरी तय कर लेता है तभी उसका संप्रेष्य संप्रेषण का रूप ग्रहण कर पाता है।

संप्रेषण प्रतिरूपों के विषय में समग्र अध्ययन करने के बाद कहा जा सकता है कि- "वक्ता संप्रेषण-प्रक्रिया का प्रारंभिक चरण है, जहाँ से इस प्रक्रिया की शुरूआत होती है। अरस्तु या लॉसवेल के मॉडल को 'वक्ता' केंद्रित माना जाता है। कुछ विद्वान 'संदेश' को वक्ता से अधिक श्रोता के साथ जोड़ कर देखते हैं क्योंकि अब यह माना जा रहा है कि 'क्या कहा जा रहा है' से अधिक महत्त्वपूर्ण है कि 'क्या समझा और महसूस किया जा रहा है।' संदेश का अर्थ वक्ता से अधिक श्रोता की मन:स्थिति, उसकी संज्ञानात्मक क्षमता (Cognition Skill), उसकी संप्रेषण-क्षमता (Communication Skill) पर अधिक निर्भर करता है। अर्थग्रहण करते समय श्रोता का ज्ञान-भण्डार, मूल्य, दृष्टिकोण आदि अहम भूमिका निभाते हैं, इसलिए संप्रेषण-प्रक्रिया में श्रोता की प्रतिक्रिया बहुत अहमियत रखती है।"[2]

2.6 प्रश्नों की स्वयं जाँच करना

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में दीजिए।

(1) संप्रेषण प्रतिरूप के लिए संप्रेषण मॉडल शब्द भी प्रयुक्त होता है। (.....)

(2) संप्रेषण पर सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है। (.....)

(3) संप्रेषण के क्षेत्र में न्यूकॉम्ब का संप्रेषण प्रतिरूप ABX के नाम से नहीं जाना जाता। (.....)

(ख) खाली स्थान पर उचित शब्द भरिए–

(1) संप्रेषण प्रतिरूपों में मुख्य रूप से तीन तत्त्व होते हैं–संप्रेषक, संदेश और .....। (वक्ता, श्रोता, माध्यम)

(2) गर्बनर के शाब्दिक प्रतिरूप में कितने तत्त्व हैं .....। (10, 5, 3)

(3) बेरलो के संप्रेषण प्रतिरूप को..... नाम से भी जाना जाता है। (SMCR, SMR, ABX)

(ग) संक्षेप में उत्तर लिखिए–

(1) संप्रेषण प्रक्रिया में संप्रेषण प्रतिरूप का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

(2) समाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से प्रचलित संप्रेषण प्रतिरूपों का विवरण दीजिए।

(3) संप्रेषण प्रतिरूप का आशय स्पष्ट करते हुए गर्बनर के संप्रेषण प्रारूपों पर टिप्पणी कीजिए।

(4) संप्रेषण के क्षेत्र में बेरलो के SMCR संप्रेषण मॉडल का गुण-दोष सहित वर्णन कीजिए।

2.7 अभाषिक संप्रेषण

मानव अपनी विचाराभिव्यक्ति के लिए समाज के अन्य लोगों/वर्गों से संवाद कायम करता है। उसके इस संवाद यानी संप्रेषण की प्रक्रिया कहीं सूक्ष्म तो कहीं स्थूल होती है। जब भाषा में शब्दों के द्वारा भावाभिव्यक्ति होती है तो यह स्थूल रूप में मौखिक संप्रेषण होता है। परंतु बहुत बार हम शब्दों द्वारा अपनी भावाभिव्यक्ति पूर्णत: नहीं कर पाते। ऐसे में हम सूक्ष्म संकेतों, प्रतीकों, अपने हाव-भाव आदि से अपनी भावाभिव्यक्ति करते हैं। यह संप्रेषण की बहुत ही सूक्ष्म स्थिति बन जाती है। वैसे भी मनुष्य/मानव भाषा का पहला रूप यह सांकेतिक या अभाषिक ही था इसके बाद समय के साथ मौखिक और लिखित भाषायी रूप

मानव समाज में अस्तित्व में आए संसार में अभाषिक संप्रेषण-प्रक्रिया प्राचीन काल से ही मानव समाज में विद्यमान है और आज भी किसी न किसी रूप में प्रयुक्त हो रही है। संप्रेषण-प्रक्रिया के दो रूप मुख्य रूप से दिखाई देते हैं - (क) अभाषिक और (ख) भाषिक। अभाषिक संप्रेषण-प्रक्रिया में बिना बोले यानी वाणी का प्रयोग किए शारीरिक भंगिमाओं, हावभाव एवं चेष्टाओं के माध्यम से संदेश संप्रेषण का काम किया जाता है। इसके विपरीत भाषिक संप्रेषण में वाणी के द्वारा संदेश संप्रेषण होता है।

अभाषिक संप्रेषण प्रक्रिया में (हम) भावों एवं विचारों और अभिव्यक्तियों को शब्द प्रयोग के बिना व्यक्त किया जाता है। इस अभाषिक संप्रेषण को अवाचिक और अशाब्दिक संप्रेषण शब्द भी प्रयुक्त किए जाते हैं। इन तीनों शब्दों का आशय एक ही निकलता है - बिना बोले या बिना भाषा के प्रयोग किए अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करना। अभाषिक संप्रेषण के ऐतिहासिक विकासक्रम को हम आदिमानव की गुफाओं में प्रस्तर वस्तुओं और भित्ति चित्रों से लेकर नृत्य, नृत्य नाटिका, मूक प्रदर्शन जैसे अभिव्यंजनात्मक और अमूर्त कला के रूप में आधुनिकतम कला रूपों में अभाषिक संप्रेषण का विशाल इतिहास रहा है। नृत्यकला - कथक, भरत नाट्यम, कथकली नौटंकी, ओडिसी, मणिपुरी, कुचिपुड़ि आदि नृत्य शैलियाँ बिना शब्दों के प्रयोग के भी सशक्त रूप से भावाभिव्यक्ति करते हैं। ऐसे ही यदि हम गहराई से देखें तो दृश्य संप्रेषण-मुखौटे, यातायात संकेत, ध्वज, वर्दियाँ (फौज की, पुलिस की, स्कूली बच्चों की) विभिन्न राष्ट्रों के ध्वज एवं उन पर बने चित्र आदि भी भावाभिव्यक्ति में सक्ष्म हैं। ऐसे ही नृत्य/नृत्य नाटिकाओं के द्वारा श्रृंगार वीर, रौद्र, हास्य, करुण आदि रसों की अभिव्यक्ति भी अभाषिक संप्रेषण की प्रक्रिया की अद्भुत देन है।

अभाषिक संप्रेषण प्रक्रिया में मुख मंडल की अलग-अलग स्थितियाँ, दृष्टि/नेत्रों के संकेत, शारीरिक भाव भंगिमाएं आदि सम्मिलित रहती हैं। अभाषिक संप्रेषण की स्पष्टता के लिए कवि रहीम और बिहारी के नीचे लिखे दोहे बड़े ही उपयुक्त हैं–

''खैर, खून, खाँसी खुशी, बैर प्रीति, मदपान
रहिमन दाबे न दबे जानत सकल जहान।।

ऐसे ही बिहारी का दोहा है–

'कहत, नटत, रीझत, खिझत, खिलत मिलत लजियात।
भरे भौन में करत है, नयनन ही सां बात।।''

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों (दोहों) में अभाषिक संप्रेषण की दृष्टि से शारीरिक भाव भांगिमाएँ, मुखमंडल की विभिन्न अभिव्यक्तियों सहित नेत्रों का संदेश प्रेषण आदि मानव संप्रेषण के पराभाषायी (पराभाषा अर्थात् वाणी / बोली के प्रच्छन्न रूप-उच्चता, तारता, तीव्रता, ध्वनियों की अस्पृष्टता, मौन की अवधि, प्रतिक्रिया काल आदि सहित वाणी का बलाघात/टोन आदि) रूप सम्मिलित हैं।

अभाषिक संप्रेषण-प्रक्रिया में संदेश को मोटे रूप में तीन तरह से अभिव्यक्त किया जाता है - (1) संकेत द्वारा (2) क्रिया द्वारा और (3) वस्तु के द्वारा। "अभाषिक या अशाब्दिक संप्रेषण का आधार जैविक अथवा सामाजिक या दोनों ही हो सकता है। भाव प्राथमिक तौर पर चेहरे को हर्ष-विषाद, भय,

आशा-निराशा, आश्चर्य, आघात, क्रोध, उत्तेजना, लज्जा, तिरस्कार, व्यथा, आतंक, परेशानी आदि को अभिव्यक्त करने वाला दर्पण समझा जाता है। भाव-प्रदर्शन अर्थात् अशाब्दिक संकेत, जो बुनियादी भावात्मक स्थिति व्यक्त करते हैं उन्हें सर्वोत्तम ढंग से उस समय समझा जा सकता है जब उनकी संकल्पना अभिव्यक्ति के संदर्भ में की जाये। जब किन्हीं अभिव्यक्तियों को संदर्भ से हटकर देखा जाता है तो चित्र में अंकित भावनाओं को ठीक-ठीक समझना कठिन हो सकता है। किसी मुस्कुराते चेहरे को यदि उदास चेहरे के साथ रख दिया जाये तो उसका आकलन भिन्न हो सकता है। इस संदर्भ में देवेंद्र इस्सर रे.एल. बर्डविह्सल के हवाले से स्पष्ट करते हुए कहते हैं- ''शरीर की कोई भी भंगिमा या अभिव्यक्ति जिस संदर्भ में प्रगट की जाये अर्थहीन नहीं होती। तथा मानव-व्यवहार के अन्य पक्षों की तरह शारीरिक आसन, भंगिमाएँ, मुखमंडलीय अभिव्यक्तियों के अनेक रूप होते हैं, जिनके द्वारा हम उनका विश्लेषण कर सकते हैं।"[3]

यहाँ एक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि अभाषिक संप्रेषण की दृष्टि से शारीरिक संकेत उस समय और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं जब वे निरीक्षण करने और संदेश (कोड) को कोई अर्थ संदर्भ देने में परस्पर उपलब्ध हों। अभाषिक संकेत जो वक्ता के स्वर के तारतम्य यानी उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करते हैं उन्हें *नियामक* संकेत कहते हैं। ऐसे ही जो संकेत रूचि, वैयक्तिक भावना एवं रवैये आदि को अभिव्यक्त करते हैं, उन्हें *परिचायक* संकेत कहते हैं, अभाषिक संप्रेषण की सफलता के लिए यह जरूरी है कि अभाषिक विधाओं जिनका उल्लेख पहले हुआ है, का ध्यान रखते हुए संकेत भाषा, क्रिया भाषा और वस्तु भाषा दिखाई देते हैं। संक्षेप इनका परिचय इस प्रकार है। -

1. **संकेत भाषा**–अभाषिक, संप्रेषण में संकेतों का महत्त्वपूर्ण स्थान है जैसे शब्द, अंक, विरामचिह्नों आदि का स्थान संदेश प्रेषक के हाव-भाव ले लेते हैं।
2. **क्रिया भाषा**–इसमें वक्ता/संदेश प्रेषक के शारीरिक अंग-संचालन आते हैं जिन्हें सिर्फ संकेतों के माध्यम से ही प्रकट किया जा सकता हैं जैसे - खाने, पीने और चलने की क्रियाएँ।
3. **वस्तु भाषा**–इसमें किसी वस्तु के प्रतिरूप सहित व्यक्ति का शरीर, वस्त्र आदि भी भावाभिव्यक्ति करता है।

वास्तव में, ये अभाषिक संप्रेषण के कुछ विशिष्ट कोड हैं जो भावाभिव्यक्ति में उपयोगी एवं सक्षम हैं।

डॉ. सुशील त्रिवेदी[4] ने मिवेल अर्गाइल के हवाले से अभाषिक संप्रेषण के कोड निम्नलिखित बताएँ हैं– (1) शारीरिक संदर्भ (Bodily context), (2) निकटता (Proximity), (3) कोणीय स्थिति (Orientation or angular position), (4) शीर्ष बिन्दु (Head), (5) मुख के हाव भाव (Facial expression), (6)भाव भंगिमा (Gestures), (7) आँखों के हाव भाव (Eye movement or eye contact), (8) अंग विन्यास (postures)

उपर्युक्त कोडों के अतिरिक्त कुछ अन्य अमौखिक उद्दीपक हैं–पहनावा (Dress), शरीर का रंग (Skin colour), चेहरा (Face), होंठ (Lips), उंगलियाँ (Fingers), चालगति (Gait), शारीरिक काया (Body figure), भौंह (Eye brows), सुगंध (Perfume), स्पर्श (Touches), आँखों का रंग (Eye colour), बालों की संरचना (केश सज्जा) (Hair style), आवाज, बोलना (Tone, pitch, voice)।

ऐसे ही डॉ. श्रीकांतसिंह ने नेप के हवाले से अभाषिक / अवाचिक संप्रेषण का अर्थ-संदर्भ एवं इसके भेद इस प्रकार बताए हैं - "नेप के अनुसार अवायिक संप्रेषण से तात्पर्य उन सभी मानवीय अनुक्रियाओं से है जो लिखित शब्दों के रूप में वर्णित नहीं की जा सकती। नेप ने मानव संप्रेषण को शरीर-गति के रूप में परिभाषित किया है। उसके अनुसार वाचिक उपकण की गति से वाणी उत्पन्न होती है। पराभाषा से अवाचिक कार्य होता है। वस्तुत: अवाचिक संप्रेषण तथा अवाचिक व्यवहार के बीच अंतर है। अवाचिक संप्रेषण अवाचिक व्यवहार से अधिक व्यापक पद है। अवाचिक संप्रेषण के निम्नलिखित 18 प्रकार होते हैं–(1) पशु तथा कीट संस्कृति (2) परिवेश, (3) भाव-भंगिमा, (4) शारीरिक गतियाँ, (5) मानव व्यवहार (6) अन्त: क्रियात्मक संरूप, (7) अधिगम, (8) यन्त्र, (9) संचार माध्यम, (10) मानसिक प्रकम (जैसे– प्रत्यक्षीकरण, प्रतिभा तथा सृजनात्मकता) (11) संगीत, (12) पराभाषा, (13) वेशभूषा (14), दैहिकी, (15) चित्र, (16) देश या दिक्, (17) त्वचीय अनुभूति तथा (18) काल।"[5]

उपर्युक्त कोड़ों एवं भेदों के अलावा - लगाव, आकर्षण, अस्वीकृति, सकारात्मक/ नकारात्मक मुद्रा, भय खुशी, दुख, आदि भी अभाषिक संप्रेषण द्वारा व्यक्त किया जाता है। एक अनुमान के अनुसार संप्रेषण में 50% संप्रेष्य संदेश केवल चेहरे के हावभाव और शरीर के विविध अंगों के संचालन द्वारा किया जाता है और उसी प्रकार चेहरे तथा शरीर के विभिन्न अंगों के संचालन के माध्यम से प्रेषित किया जाता है। ऐसे ही मौखिक शब्दों में से भी 40% शब्दों के संबंध में भी प्रतिक्रिया अंग संचालन के माध्यम से व्यक्त होती है। अत: हमारे दैनिक जीवन में होने वाले संप्रेषण में अभाषिक संप्रेषण का बड़ा महत्त्व है।

उपर्युक्त विवेचन-विश्लेषण के आलोक में अभाषिक संप्रेषण की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. अभाषिक संप्रेषण में संप्रेषक की कोई मुद्रा या फिर कोई क्रिया हो सकती है। साथ ही ये मुद्रा या क्रिया शारीरिक भंगिमाओं की भाँति अत्यधिक जटिल या नेत्र के इशारे/कटाक्ष जैसी हो सकती है।
2. अभाषिक संप्रेषण में व्यक्त संदेश मौखिक संदेश से भिन्न हो सकता है।
3. इस संप्रेषण की व्याख्या किसी व्यति की मानसिक स्थिति या सामाजिक अनुभव के रूप में की जा सकती है।
4. अभाषिक संप्रेषण का प्रभावी प्रयोग सभी लोग आसानी से नहीं कर सकते।

2.8 प्रश्नों की स्वयं जाँच करना

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में दीजिए।

(1) अभाषिक से आशय है–बोलने के स्थान पर आंगिक संकेत। ( )

(2) अभाषिक संप्रेषण में शब्दों को महत्त्व दिया जाता है। ( )

(3) संप्रेषण मुख्यत: दो तरह से किया जा सकता है–भाषिक और अभाषिक। ( )

(4) अभाषिक संप्रेषण प्रक्रिया में मुख्यत: संकेत, क्रिया एवं वस्तु के द्वारा संदेश प्रेषण किया जाता है। ( )

(ख) खाली स्थान पर उचित शब्द भरिए–

(1) अभाषिक संप्रेषण में शब्दों के स्थान पर..... से काम लिया जाता है। (शारीरिक हाव-भाव, पुस्तक, माइक)

(2) संकेत, क्रिया एवं वस्तु अभाषिक संप्रेषण के कुछ विशिष्ट.....हैं। (कोड, शब्द, नियामक)

(3) बेरलो के संप्रेषण प्रतिरूप को..... नाम से भी जाना जाता है। (SMCR, SMR, ABX)

(ग) विवेचनात्मक प्रश्न

(1) संप्रेषण प्रतिरूप का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए अरस्तू के संप्रेषण प्रतिरूप का प्रतिपादन कीजिए।

(2) संप्रेषण प्रतिरूपों के विकास का वर्णन एवं उनके महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

(3) संप्रेषण प्रक्रिया में अभाषिक संप्रेषण की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

(4) अभाषिक संप्रेषण क्या है स्पष्ट करते हुए संप्रेषण के प्रमुख प्रतिरूपों का वर्णन कीजिए।

संदर्भ

1. *मानव संचार शास्त्र*, डॉ. श्रीकांत सिंह, प्रिया पुस्तक सदन, दिल्ली, सं. 2013, पृ.-104
2. *संप्रेषण : चिंतन और दक्षता*, डॉ. मंजु मुकुल, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2017, पृ. 47
3. *जनमाध्यम : संप्रेषण और विकास*, देवेंद्र इस्सर, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1989, पृ. 114
4. *सोशल मीडिया*, डॉ. सुशील त्रिवेदी, एकता प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2012, पृ. 17-18
5. *मानव संचार शास्त्र*, डॉ. श्रीकांत सिंह, प्रिया पुस्तक सदन, दिल्ली, सं. 2013, पृ. 294-295

पाठ-1

हिंदी भाषा और संप्रेषण
संप्रेषण के प्रकार एवं उसकी चुनौतियाँ

डॉ. सीमा रानी
दौलतराम महाविद्यालय

1.1 प्रस्तावना

मानव सभ्यता की शुरुआत से मानव को अपने सामाजिक व्यवहार के लिए भाषा की जरूरत पड़ती रही है। भाषा मानव समाज की व्यवहारगत उद्देश्यों की पूर्ति ही नहीं करती बल्कि भावनाओं का संचरण भी करती है। भाषा का मुख्य प्रयोजन संप्रेषण है। भाषा और संप्रेषण का संबंध इतना घनिष्ठ है कि भाषा को संप्रेषण के साधन के रूप में परिभाषित किया जाता है और भाषा की लगभग हर परिभाषा में संप्रेषण शब्द विद्यमान रहता है। भाषा के अतिरिक्त और भी कई संकेत-प्रणालियों का प्रयोग संप्रेषण के लिए किया जाता है। जैसे वनस्पति विज्ञान तथा प्राणि विज्ञान में प्रयुक्त वनस्पतियों तथा प्राणियों के विशिष्ट लातीनी नाम, गणित में प्रयुक्त विशिष्ट चिह्न, कम्प्यूटर की भाषा, गणित की भाषा, यातायात के संकेत आदि। ये संकेत प्रणालियाँ किसी न किसी कूट भाषा का सहारा लेती हैं। मानवीय भाषा भी एक संकेत मूलक कूट ही है। वस्तुतः संकेत-प्रणालियों में से सबसे प्रमुख संकेत-प्रणाली है भाषा। हिंदी में अंग्रेज़ी के 'कम्यूनिकेशन' शब्द के लिए संप्रेषण, संवाद, संचारण और संचार शब्दों का उपयोग मिलता है। अलग-अलग संदर्भ और प्रसंग में लोग इन शब्दों का प्रयोग करते हैं। संचार शब्द संस्कृत की 'चर' धातु में 'सम्' उपसर्ग जोड़कर बना है, जिसका अर्थ है चलना, घूमना, इधर-उधर भेजना, फ़ैलाना, पहुँचना आदि। संवाद शब्द संस्कृत की 'वंद्' धातु में 'सम्' उपसर्ग जोड़कर बना है, जिसका अर्थ होता है–बातें करना, वार्तालाप करना, समरूप होना, बोलना आदि।

1.2 अधिगम का उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप निम्नलिखित कार्य कर सकने में सक्षम हो जाएंगे–

(1) भाषा का प्रमुख प्रयोजन क्या है? जान सकेंगे।
(2) संप्रेषण का भाषा से क्या संबंध है? यह समझ सकेंगे।
(3) हिंदी भाषा में संप्रेषण किस प्रकार कार्य करता है? यह लिख सकेंगे।
(4) भाषा-संप्रेषण का उद्देश्य किस प्रकार पूरा होता है? यह जान सकेंगे।
(5) संप्रेषण के प्रकार क्या हैं अथवा उनका क्या कार्य है? यह जान सकेंगे।
(6) संप्रेषण के सामने क्या-क्या चुनौतियाँ उपस्थित होती हैं? इसकी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

(7) संप्रेषण की बाधाओं को दूर करने में क्या-क्या रणनीति कार्य करती है? इसकी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

1.3 संप्रेषण: एक विवेचन

संप्रेषण का विषय-क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इसके अन्तर्गत तथ्यपरक सूचना अथवा जानकारी के साथ-साथ विचारों, भावनाओं, मन: स्थिति, प्रश्न, प्रतिप्रश्न आदि का भी समावेश होता है। इन विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को अभिव्यक्त करने में केवल मानवीय भाषा ही सक्षम है। इस दृष्टि से अन्य संकेत-प्रणालियाँ प्राकृतिक भाषा की तुलना में अत्यंत सीमित हैं। संप्रेषण-प्रक्रिया में अर्थ की निष्पत्ति वाक्य के घटकों के पारस्परिक संबंध के अतिरिक्त संदर्भ से भी निर्धारित होती है। मानवीय भाषा की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि वह किसी भी सूचना को दो प्रकार से अभिव्यक्त कर सकने में सक्षम है। नीचे दिए गए वाक्यों में एक ही शब्द 'मीठा' दो अलग-अलग अर्थ अभिव्यक्त कर रहा है।

(1) चाय में मीठा कम है। (चीनी)

(2) चाय के साथ मीठा क्या है। (मिठाई)

संप्रेषण का कार्य संदेश को कूट (संकेत रचना या कोड) बनाना है। संदेश प्राप्तकर्त्ता, संदेशों को डीकोड करता है और उसे अर्थ प्रदान करता है, इसे हम इस प्रकार समझ सकते हैं–

संप्रेषक-संदेश-कोडिंग-माध्यम-डिकोडिंग-प्रापक-प्रापक प्रतिक्रिया

यदि संप्रेषण की इस क्रिया में कोई अवरोध हो तो उसे शोर कहा जाता है। संप्रेषण, संप्रेषक और ग्रहिता के बीच अत: क्रिया है। संप्रेषक, संदेश, माध्यम और प्राप्तकर्त्ता के जरिये प्रसारित संचार मानव जीवन की निरंतरता की रक्षा करता है। संप्रेषण एक सामाजिक प्रक्रिया एवं प्रवृत्ति है जो समस्त जीवधारियों के व्यवहार में लक्षित होती है। व्यक्ति, समूह और जन में संचार-प्रक्रिया का प्रवाह संप्रेषण होता है। संचार-प्रक्रिया वक्ता और श्रोता दो छोरों के मध्य संचालित होती है। इन दो छोरों के अन्तर्सम्बन्धों के निम्न रूपों को विद्वानों ने मान्यता दी है–

(1) अन्त:वैयक्तिक संप्रेषण (स्वगत)

(2) अन्तर-वैयक्तिक संप्रेषण

(3) जनसंचार

संचार की गतिशील प्रक्रिया न केवल बाहरी समाज में वरन् मनुष्य के अन्त: मन में भी निरन्तर सक्रिय रहती है। मनुष्य की सम्पूर्ण विचार और चिन्तन-प्रक्रिया स्व-संचार पर आधारित होती है। कुछ भी करने और कुछ भी कहने के पहले मन में विचार संवादों का रूप लेते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के मन के दायरे में ही सम्पन्न होती है। अपने निजी अनुभवों, विचारों, स्मृतियों के आधार पर वह मन ही मन व्यक्तियों, घटनाओं, प्रभावों और परिणामों का आकलन करता चलता है। ईश्वर या अलौकिक शक्तियों की आराधना अन्त: वैयक्तिक संचार का सर्वोत्तम उदाहरण है। संभवत: इसीलिए भारतीय ऋषि-मुनि

और मनीषियों ने आत्म-विश्लेषण के लिए स्वयं की पहचान के लिए आत्म-साधना पर बल दिया था। वास्तव में अन्त: वैयक्तिक संचार मनुष्य के व्यक्तित्व-विकास के लिए बहुत आवश्यक है।

ऐसा संचार दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच या समूह के भीतर घटित होता है। इस प्रक्रिया में संदेशों का प्रेषण मौखिक अथवा स्पर्श या चेहरे के हाव-भाव या शरीर की मुद्राओं से सम्भव हो सकता है। दूरभाष द्वारा संचार भी इसी के अन्तर्गत आता है। यह संचार का अति प्रभावी रूप है। संदेश प्रेषक और सन्देश ग्राहक की निकटता संचार के इस प्रकार की सबसे बड़ी विशेषता है। आपसी बातचीत, गपशप, प्रेमालाप, संक्षिप्त समूह-चर्चा, किसी समिति की बैठक आदि में होने वाला विचार-विमर्श इसके उदाहरण हैं। प्राचीन धर्मोपदेशक इस संचार के उपयोग से अपनी बात स्पष्ट करते थे और उनका यह माध्यम प्रचार-प्रसार का प्रभावशाली अस्त्र भी सिद्ध हुआ है।

जनसंचार मे संदेशों का संप्रेषण विशाल जनसमुदाय के बीच में होता है। यह व्यापक समुदाय पंचमेल खिचड़ी होता है, इस प्रकार के संचार में किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता होती है। इन्हें जनमाध्यम कहा जाता है। इस स्तर के संचार में ये लोग एक स्थान पर मौजूद नहीं होते, इसलिए प्रत्यक्ष संचार नहीं कर सकते। इसमें संदेश प्रेषण के लिए किसी न किसी यांत्रिक या इलैक्ट्रिक डिवाइस का प्रयोग किया जाता है। जैसे मोबाईल, कम्प्यूटर, इटंरनेट, रेडियो, रडार, संचार सेटेलाइट, कैमरा, प्रोजेक्टर, मॉनीटरिंग उपकरण इत्यादि। इसके अलावा मुद्रित माध्यम भी जनसंचार माध्यम का काम कर सकते हैं। पत्र, रिपोर्टस, टिप्पणी, अनुस्मारक, पुस्तक आदि भी ऐसे संचार-माध्यम की श्रेणी में आते हैं। इसमें फीड बैक की संभावना बहुत कम होती है।

1.3.1 प्रश्नों की स्वयं जाँच करना

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों मे लिखिए–

(1) अन्त: वैयक्तिक संप्रेषण से क्या तात्पर्य है?

(2) संचार-प्रक्रिया के पूरा होने के लिए किन दो तत्त्वों का होना आवश्यक है?

(3) अन्तर वैयक्तिक संप्रेषण किन के बीच घटित होता है?

(4) जनसंचार में प्रयुक्त माध्यमों को क्या कहते हैं?

(ख) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(1) जनसंचार तब संभव होता है जब संदेश भेजने के लिए किसी ..... का उपयोग किया जाता है। (कागज़, माध्यम, सामग्री)

(2) जनसंचार में संदेशों का संप्रेषण ..... जनसमुदाय के बीच में होता है। (संक्षिप्त, कुछ, विशाल)

(3) मनुष्य की सम्पूर्ण विचार और चिन्तन-प्रक्रिया ..... पर आधारित है। (जनसंचार, समूह-संचार, स्व-संचार)

1.3.2 संप्रेषण के प्रकार

भाषा मानव जाति की सबसे अमूल्य सम्पत्ति है क्योंकि भाषा का संबंध जीवन से है और उसका प्रयोग इतना यांत्रिक और सहज है कि सामान्यत: उसकी ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। इसके अतिरिक्त भाषा हमारी संस्कृति का परिचायक भी है। भाषा को संप्रेषण का महत्त्वपूर्ण और 'भावबोध' का अन्यतम साधन माना गया है। वक्ता द्वारा जिस संप्रेषण की शुरुआत की जाती है उसे श्रोता किस रूप में ग्रहण या स्वीकार करता है, इसी तथ्य पर संप्रेषण की सफलता निर्भर करती है। संप्रेषण के प्रकार निम्नलिखित हैं–

(1) अमौखिक

(2) मौखिक

(3) लिखित

1.3.2.1 अमौखिक संप्रेषण

अमौखिक संप्रेषण की प्रक्रिया में चिह्नों, संकेतों, प्रतीकों, हाव-भावों आदि का उपयोग किया जाता है। सभी ज्ञात संस्कृतियों में संकेतों, चिह्नों एवं प्रतीकों का अमौखिक संप्रेषण-प्रक्रिया के लिए उपयोग किया जाना प्राप्त होता है।

(*i*) चिह्न–इसका उपयोग दैनिक जीवन में चित्रों एवं रेखाचित्रों के रूप में मिलता है।

(*ii*) प्रतीक–प्रतीक को समझना एवं परिभाषित करना ज़्यादा कठिन है, इसे इस तरह से परिभाषित कर सकते हैं–'वह विधि जिसमें कल्पनाशीलता का भाव हो।'

उदाहरणार्थ ट्रैफिक पुलिस द्वारा यातायात का सुचारू संचालन हाथों के संकेतों द्वारा किया जाना, सड़कों पर यातायात सुचारू रूप से चलाने के लिए साइन बोर्डस् का प्रयोग किया जाना अमौखिक संप्रेषण के ही रूप हैं। इसी प्रकार लालबत्ती होने पर गाड़ियों का रुक जाना और हरी बत्ती होने पर गाड़ियों का चलना तथा कक्षा में अध्यापक द्वारा मेज थपथपाकर चुप हो जाने का संकेत करना भी अमौखिक संप्रेषण है।

1.3.2.2 मौखिक संप्रेषण

मुख से बोलकर किया जाने वाला संप्रेषण मौखिक संप्रेषण है। इसमें वक्ता और श्रोता दोनों आमने-सामने होकर मौखिक वार्तालाप करते हैं। यह एक ऐसा संप्रेषण है, जिसमें स्वरतंत्री का उपयोग किया जाता है। इसमें चिल्लाने से लेकर भाषा के बोले गए शब्द तक होते हैं। मानव की स्वरतंत्री एक तरह से संप्रेषण की विधि है और यह बौद्धिक आविष्कारों का प्रतिनिधित्व करती है। एक शिशु का मानसिक विकास मौखिक संप्रेषण के बल पर ही होता है। कुछ बड़ा होने पर वह आंगिक के साथ मौखिक संचार का भी सहारा लेता है। स्कूल जाकर लिखने और बोलने का ज्ञान अर्जित करता है। ग्रन्थालयों, सूचना केन्द्रों या अन्य संस्थाओं में मौखिक संप्रेषण मानवीय सम्बन्धों को विकसित करने में सहायक है। यह संप्रेषण बहुत से उद्देश्यों को लेकर किया जाता है। यह एक प्रभावकारी माध्यम है।

(1) मौखिक संप्रेषण संबंधी कुछ सामान्य सुझाव

(1) शब्दों के चयन में हमेशा सावधानी बरतनी चाहिए। खासतौर से किसके सामने बात की जा रही है, इसका ध्यान रखकर ही शब्द प्रयोग करना चाहिए।

(2) बहुत तेजी से बोलने पर सुनने वाला व्यक्ति जल्दी ही आपकी बातों में दिलचस्पी लेना बंद कर देता है। इसलिए सामान्य गति से बातचीत करना प्रभावी कहा जाता है।

(3) ज़्यादा बोलने की प्रवृत्ति भी आमतौर पर घातक साबित होती है। छोटे-छोटे वार्तालाप को ध्यान से सुना और समझा जाता है।

(4) नेगेटिव बॉडी लैंग्वेज और पोस्चर्स से सुनने वाला असहजता महसूस करता है, इसलिए सहज होकर विचारों को रखें।

(5) जब कोई बोल रहा हो, तो बीच में उसकी बातों को नहीं काटना चाहिए। धैर्य से सुने और समझें। जब उसकी बात खत्म हो जाए तो अपना प्रश्न रखें।

(6) लूज़ टॉकिंग करने की आदत नुकसानदायक होती है। (किसी के बारे में आपत्तिजनक बातें करना)

(7) बातचीत के दौरान ऐसे शब्दों से बचे जिनके अर्थ के बारे में आप निश्चित नहीं हैं।

(2) मौखिक संप्रेषण के लाभ

(1) वक्ता को यदि लगता है कि उसके संदेश को नहीं समझा गया है तो वह उसे पुनः संप्रेषित कर सकता है।

(2) वक्ता अपने संदेश के सम्बन्ध में भ्रम की स्थिति को तुरन्त स्पष्ट कर सकता है।

(3) वक्ता इससे संदेश प्राप्तकर्त्ता के मनोभावों भावनाओं, मतों और विश्वासों में बदलाव ला सकता है।

(4) मौखिक संदेश, लिखित संदेश की बजाय अल्प समय में प्रसारित किया जा सकता है।

(5) मौखिक संप्रेषण की एक विशेषता यह है कि इसमें एक बड़े समूह के साथ संवाद किया जा सकता है।

(3) मौखिक संप्रेषण की सीमाएँ

(1) मौखिक संप्रेषण का कोई स्थायी अभिलेख नहीं होता। इसे कानूनी साक्ष्य के रूप में मान्यता नहीं है।

(2) यदि वक्ता बोलने में कुशल नहीं है तो वह उचित प्रभाव पैदा नहीं कर पाएगा।

(3) कई बार मौखिक संप्रेषण कार्यालयी दृष्टि से उचित नहीं माना जाता है।

(4) यदि श्रोता द्वारा बातों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत कर दिया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। इससे भ्रम की स्थिति पैदा होती है।

(4) मौखिक सप्रेषण के माध्यमों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है

(क) परम्परागत माध्यम

(ख) आधुनिक माध्यम

(क) **परम्परागत संप्रेषण माध्यम**–परम्परागत माध्यम हमारी ग्रामीण संस्कृति की देन हैं। इन परम्परागत जन-माध्यमों में लोकगीत, लोकनृत्य, लोककथा, लोकनाट्य, कठपुतली अभिनय, नुक्कड़ नाटक आज भी प्रभावशाली संप्रेषण के सशक्त माध्यम हैं। ये कलाएं आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में सार्थक भूमिका निभा रही हैं। नशा, मद्यपान, निरक्षरता, अंधविश्वास, सांप्रदायिक वैमनस्य, जनसंख्या नियंत्रण, कुपोषण, अस्वच्छता, शौचालय, दहेज-प्रथा आदि अन्य सामाजिक बुराइयों के विरूद्ध जागृति पैदा करने में इन जन-माध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सहजता, सुगमता और सुलभता के चलते पारंपरिक माध्यम सामाजिक जागरूकता के सही संवाहक भी हो सकते हैं। इसकी सार्थकता आज़ादी के आन्दोलन के समय सिद्ध हुई जब गाँवों और सड़को पर निकलने वाली प्रभातफेरियों, नौटंकियों और स्वांगों ने आंदोलन की लौ लगातार प्रज्ज्वलित रखी। पारंपरिक माध्यमों की प्रमुख विशेषताएँ उनकी स्रोत से निकटता, स्थानीयता और विश्वसनीयता है। स्वास्थ्य, शिक्षा, समाज-कल्याण विभागों ने अपनी कई योजनाओं को पारंपरिक माध्यमों से प्रसारित किया और सकारात्मक परिणाम भी उन्हें मिले। आज के रेडियों, टेलीविजन पारंपरिक माध्यम के ही विकसित रूप हैं।

(ख) **आधुनिक संप्रेषण माध्यम**–साक्षर, निरक्षर, निर्धन और नेत्रहीन सभी मनुष्यों के लिए आधुनिक संप्रेषण माध्यम वरदान सिद्ध हो रहे हैं। रेडियो, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, हाईब्रिड मेल सर्विस, इंटरनेट, वीडियो ब्रॉडबैंडवीडियों नेटवर्किंग, उपग्रह संचार, सेल्युलर, केबल, डिश टीवी, एफ.एम., व्हाट्सअप, सी.डी., वीडियो कैसेट, फेसबुक, ट्विटर इत्यादि आधुनिक संप्रेषण माध्यम, आज संप्रेषण के क्षेत्र में बहुत शक्तिशाली, प्रभावशाली भूमिका अदा कर रहे हैं। फीडबैक की सक्रियता के कारण एफ.एम. रेडियो ने अपने श्रोताओं के दिलों में अपनी खास जगह बनाई है। संप्रेषण के इन आधुनिक माध्यमों ने लोगों की जीवन-शैली, व्यवहार, सोच में भारी बदलाव किया है। कभी सूचनाओं को तरसते संसार में अब सूचनाओं की बाढ़-सी आ गई है। किन्तु सकारात्मक प्रभाव के साथ इसके नकारात्मक खतरे भी अनदेखे नहीं किए जा सकते हैं।

1.3.2.3 लिखित संप्रेषण

लिखित संप्रेषण में फीडबैक उतनी जल्दी नहीं मिलता, जितना जल्दी मौखिक संप्रेषण में होता है, फिर भी सूचनाएँ संप्रेषित करने का लिखित माध्यम स्थायी और प्रभावशाली है, लिखित संप्रेषण ज्ञान और शोध को व्यवस्थित करने में सहायता करता है। किसी भी व्यवस्था में लिखित संप्रेषण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। किसी भी संस्था में विभिन्न दायित्वों और क्रिया-कलापों के सुचारू संचालन के लिए लिखित संप्रेषण जरूरी है। ज्ञान-विज्ञान और विश्व की सूचनाएँ और संदेश जब प्रभावशाली ढंग से लिखकर लक्षित वर्ग तक पहुँचाए जाते हैं। तो उसे लिखित संप्रेषण कहते हैं।

इस कौशल का विकास व्यक्ति में अभ्यास से धीरे-धीरे होता है। कुछ लोग मौखिक संप्रेषण में सिद्धहस्त होते हैं लेकिन वे अपने विचारों को लेखनीबद्ध करने में असमर्थ होते हैं। लेखन के लिए भाषा पर असीमित अधिकार हो और तर्कयुक्त चिन्तन का भाव विकसित हुआ हो। समाचार, पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकें,

होर्डिंग्ज़, साइनबोर्ड, पोस्टर, ई-मेल, नोटिस, पैंफ्लेट आदि लिखित संप्रेषण के उदाहरण है। कई बार मौखिक संप्रेषण से बात नहीं बनती तो लिखित संप्रेषण का आश्रय लिया जाता है।

(1) लिखित संप्रेषण के लाभ

(क) लिखित संदेश को स्थायी अभिलेख के रूप में सुरक्षित किया जा सकता है।

(ख) लिखित संप्रेषण में स्तरीय भाषा एवं स्पष्ट अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(ग) लिखित संप्रेषण में जटिल और लम्बे संदेशों का प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि प्राप्तकर्त्ता इसे पुनः पढ़कर समझ सकता है।

(2) लिखित संप्रेषण की सीमाएँ

(क) ऐसे क्षेत्र जहाँ आज भी तकनीकी सुविधाएँ सुगमता से उपलब्ध नहीं हैं वहाँ लिखित संप्रेषण महंगा होने के साथ-साथ अधिक समय लेता है। इसकी प्रक्रिया में सूचना-संग्रहण करने, तैयार करने, टाइप करने और जाँचने में काफी समय व्यय होता है।

(ख) लिखित संप्रेषण की पहुँच शिक्षित लोगों तक है। अशिक्षित लोग इसका उपयोग नहीं कर सकते।

(ग) लिखित संप्रेषण बहुत औपचारिक और जटिल होता है।

(घ) इसमें फीडबैक तुरन्त नहीं मिलता है।

निःसंदेह संप्रेषण के इन माध्यमों ने समाजीकरण की दिशा में अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वाह करके सामाजिक परिदृश्य को बदला है। रोज़गार, फन, फूड, फैशन से लेकर वाणिज्य-व्यापार जगत की सूचनाएँ देकर समाज का हित किया है। संप्रेषण के माध्यम मनोरंजन के साथ-साथ विकास के संदेश देकर समाज का नव-निर्माण कर रहे हैं। सामाजिक विकास में इनका योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है।

1.3.2.4 प्रश्नों की स्वयं जाँच करना

(क) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए–

(1) मौखिक संप्रेषण को कितने भागों में बाँटा जा सकता है?

(2) मौखिक संप्रेषण के माध्यमों को कितने प्रकार में बाँटा जा सकता है?

(ख) निम्नलिखित कथनों पर सही / गलत के निशान लगाइए–

(1) मानव की स्वरतंत्री एक तरह के संप्रेषण की विधि है, और यह बौद्धिक आविष्कारों का प्रतिनिधित्व करती है। (सही/ गलत)

(2) सभी ज्ञात संस्कृतियों में संकेतों, चिह्नों एवं प्रतीकों का अमौखिक संप्रेषण प्रक्रिया के लिए प्रयोग किया जाना प्राप्त होता है। (सही/ गलत)

(3) परम्परागत माध्यम हमारी ग्रामीण संस्कृति की देन है। (सही/ गलत)

(ग) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(1) साक्षर, निरक्षर, निर्धन और ..... मनुष्यों के लिए आधुनिक संप्रेषण माध्यम वरदान सिद्ध हो रहे हैं। (नेत्रहीन/ बुद्धिहीन/ विवेकहीन)

(2) आधुनिक संप्रेषण माध्यम आज संप्रेषण के क्षेत्र में बहुत शक्तिशाली, प्रभावशाली ..... अदा कर रहे हैं। (पात्रता/ भूमिका)

(3) लिखित संप्रेषण की पहुँच शिक्षित लोगों तक है। अशिक्षित लोग इसका ..... नहीं कर सकते। (प्रयोग/ उपयोग)

(4) कुछ लोग ..... संप्रेषण में सिद्धहस्त होते हैं। (मौखिक/ शाब्दिक)

1.4 संप्रेषण की चुनौतियाँ

सूचना का संप्रेषण किसी भी व्यक्ति, समाज और देश के विकास के लिए अति महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यह व्यक्ति से व्यक्ति के बीच विचारो, भावों, सूचनाओं या अभिमतों को भेजे जाने और प्राप्त करने की प्रक्रिया है। इनका फैलाव सामान्य बातचीत से लेकर बड़े-बड़े कम्प्यूटर-यंत्र जैसे जटिल वैज्ञानिक उपकरणों तक है। इनका उद्देश्य है कि अधिक से अधिक स्पष्टता के साथ विचारों, भावनाओं, सूचनाओं, अभिमतों आदि को जल्दी से जल्दी दूसरे छोर तक पहुँचाना और इच्छित प्रभाव उत्पन्न करना। इस क्षेत्र में कई ऐसे अवरोध हैं, जिनके कारण उपलब्ध सूचना का सही संप्रेषण नहीं हो पाता है, संप्रेषण की इन चुनौतियों को मुख्य रूप से छह श्रेणियों में रखा जा सकता है–

(1) मनोवैज्ञानिक
(2) यांत्रिक
(3) अर्थगत
(4) भौतिक
(5) भाषिक
(6) सांस्कृतिक

1. **मनोवैज्ञानिक**–प्रत्येक व्यक्ति का आचार, व्यवहार भिन्न-भिन्न होता है। इसलिए वे प्राप्त संदेश की व्याख्या अपने पूर्व के अनुभवों के आधार पर करते हैं। इसलिए लोगों की मनोवृत्ति, अभिमत और मूल्य प्रभावकारी संप्रेषण में बाधा उत्पन्न करता है। अर्थ ग्रहण में ग्रहणकर्त्ता का मनोविज्ञान बहुत काम करता है। प्राय: कहा जाता है कि हम वही सुनते या देखते हैं, जो सुनना या देखना चाहते हैं। इसका अर्थ यही है कि हमारा मन अपने अनुकूल अर्थ ग्रहण करता है। ऐसी स्थितियाँ प्राय: दोनों पक्षों की मनोवैज्ञानिक स्थिति अथवा मनोदशा या मानसिक संरचना और इस क्षण में सक्रिय रहने वाली मनोदशा के कारण आ जाती हैं। कई बार देखा गया है कि जो संदेश कहना या पहुँचाना चाहते हैं, वह संदेश दूसरा पक्ष उसी रूप में ग्रहण नहीं कर रहा ऐसे में उस संदेश का रूप बदल जाता है, कहा कुछ गया है, ग्रहण कुछ किया गया है। कई बार ऐसी मनोदशा भावनात्मक कारणों से भी होती है जिन्हें बदलना अत्यन्त कठिन होता है। कई बार भ्रम की स्थिति के कारण भी अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

2. **यांत्रिक**–यांत्रिक चुनौतियों को हम दो प्रकार से विभाजित कर सकते हैं। प्रथम शारीरिक अक्षमता या दोष के रूप में, दूसरा मशीनी अथवा यांत्रिकी खराबी होने पर संप्रेषण में बाधा उत्पन्न होना। हमारी वाक् और श्रव्य इन्द्रियों के अतिरिक्त जो और यंत्र हैं, वह प्रभावपूर्ण ढंग से हमारी बात को लोगों तक नहीं पहुँचा पाते। कई बार आवाज़ साफ नहीं निकलती, उच्चारण सही नहीं कर पाना, कुछ शब्द दबे हुए निकलना, हकलाहट या तुतलाहट जैसे कारण भी हम यांत्रिक चुनौतियों के अंतर्गत देखते हैं। लेकिन इन अवयवों के अलावा बाह्य उपकरणों अथवा यंत्रों में भी खराबी हो सकती है, कुछ यंत्रों के प्रभाव से हमारी आवाज़, टोन, स्वर, लहज़ा, बदल जाता है। ऐसे में भी अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

   इंटरनेट का काम करते हुए नेटवर्क का चले जाना, फोन पर बात करते हुए लाइन का कट जाना, बिजली चली जाना इत्यादि बाधाएँ हैं। जिससे प्रभावी संप्रेषण में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। वर्तमान युग इलैक्ट्रॉनिक संचार क्रांति का युग है। आज सूचना प्राप्त करने में गैजेट्स का उपयोग अधिक किया जाने लगा है। कई बार इन गैजेट्स में तकनीकी खराबी आ जाने से संप्रेषण प्रक्रिया पर प्रतिकूल असर पड़ता है। मौसम खराब होने पर या विद्युत सर्किट में खराबी आने पर सूचनाएँ प्राप्ति और संप्रेषण में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

3. **अर्थगत**–यदि संदेश अस्पष्ट व असंगत है या फिर श्रोताओं के नैतिक मूल्यों के अनुरूप नहीं है, तो भी प्रभावी संप्रेषण में बाधा उपस्थित होती है, संप्रेषण में अर्थ की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है, अर्थ की सामान्य स्वीकृति के बिना प्रेषक (स्रोत) तथा ग्रहणकर्त्ता के बीच संप्रेषण असम्भव है। वाक्-प्रतीक का भ्रष्ट संप्रेषण संदेश को बाधित करता है। अर्थ के ग्रहण के बिना सफल संप्रेषण नहीं हो सकता है। अर्थो में परिवर्तन होता रहता है। इस परिवर्तन के लिए ऐतिहासिक, सामाजिक घटनाएँ, भौगोलिक-सांस्कृतिक परिवेश आदि बातों के अतिरिक्त समाज के लोगों की मनः स्थिति, बौद्धिक-मानसिक धरातल में अन्तर, आयु में अन्तर जैसी अनेक बातें उत्तरदायी होती हैं। अलग-अलग भाषाओं में कुछ शब्दों के अर्थ अलग-अलग हो सकते हैं।

4. **भौतिक**–इसके अंतर्गत वक्ता और संदेश ग्रहण करने वाले श्रोता/ ग्रहणकर्त्ता के बीच की भौतिक दूरी से लेकर समय अंतराल तक को ले सकते हैं। हमारी ओर से प्रेषित क्षीण संदेश संप्रेषण में किस तरह बाधा उत्पन्न करता है, यह हम जान सकते हैं। दूर खड़ा व्यक्ति, पास खड़े व्यक्ति की अपेक्षा कम सुन पाएगा। यह बड़ी सामान्य सी बात है। स्पष्टता के अभाव में इनसे संचार में बाधा उत्पन्न होती है। सामान्यतः देखा जाता है कि पुस्तकों या आवश्यक दस्तावेजों के प्रकाशन में प्रकाशक काफी समय लगा देता है, जब यह सामग्री विलम्ब से पाठक के पास पहुँचती है, तो महत्त्वहीन हो जाती है। आर्थिक एवं वित्तीय सीमाएँ भी सूचना के संप्रेषण में बाधा उत्पन्न करती हैं।

5. **भाषिक**–सूचना के संप्रेषण में सबसे प्रमुख बाधा भाषा की होती है, क्योंकि विभिन्न देशों से सूचना अलग-अलग भाषाओं में प्राप्त होती है। चूँकि कोई एक व्यक्ति सभी भाषाओं का ज्ञाता नहीं होता है, अतः संप्रेषण की प्रक्रिया में भाषा बहुत बड़ी बाधा सिद्ध होती है। कम्प्यूटर से भाषा का मशीनी अनुवाद ठीक-ठीक न होने के कारण ज्ञान-विज्ञान के इस क्षेत्र का सही ज्ञान प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

भाषा से जुड़े कई पक्ष हो सकते है। जैसे- भाषा की भिन्नता, वक्ता और श्रोता द्वारा प्रयुक्त एक ही भाषा होने पर भी दोनों द्वारा अपनाए जाने वाले वाक्य-विन्यास की भिन्नता आदि। हमारे ही देश में अलग-अलग भाषा-भाषी लोगों के बीच भाषिक अन्तर के कारण भी संप्रेषण में कठिनाई आती है। ज्ञान-विज्ञान की कई ऐसी सूचनाएँ होती हैं, जिनमें तकनीकी और विषय-विशेष के पारिभाषिक शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है? भाषा का भव्य भवन निर्मित होता है शब्दों और वाक्यों से। वाक्य-रचना में स्पष्टता, अर्थ बोधकता और भाषा का प्रवाह रहना चाहिए। निर्जीव और निरर्थक शब्दों से बचा जाए और व्याकरण की दृष्टि से शुद्धता का ध्यान रखा जाए। वाक्यों में एक ही भावधारा, भावों की शृंखला, विचारों की परंपरा चलनी चाहिए। सूचना की भाषा स्पष्ट एवं मानक होनी चाहिए। भाषा का मूलरूप मिथकीय होता है जो लगातार संस्कार के माध्यम से विभिन्न रूप धारण करता है। सफल संप्रेषण के लिए उस भाषा का सांस्कृतिक, सामाजिक परिवेश दोनों पक्षों के लिए जाना-पहचाना होना चाहिए। भिन्न परिवेश के लोग परस्पर संचरण में निश्चित रूप से असुविधा अनुभव करते हैं। आज हमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र के नए-नए शब्द पढ़ने-सुनने को मिलते हैं। इन शब्दों का प्रयोग किन संदर्भो में किया जाता है। इसका ज्ञान होना आवश्यक है।

6. **सांस्कृतिक**–किसी समाज का सांस्कृतिक परिवेश उस समाज की भाषा का जनक होता है। संस्कृति, समाज और भाषा का गहन एवं आंतरिक संबंध है। भाषा अपने प्रवाह काल में सांस्कृतिक और सामाजिक संवेदनाओं से स्पंदित रहती है। भाषा अभिव्यक्ति का साधन है और सांस्कृतिक-समाज इसके आधार हैं। इस आधार द्वारा साधन में संस्कार के फलस्वरूप अर्थ-रूप सिद्धि प्राप्त होती है। संप्रेषण के लिए प्रचलित, सर्वज्ञात और सर्वस्वीकृत भाषा ही काम आती है। संदेश, प्रेषक के शब्दों और प्रतीकों का अर्थ बहुज्ञात यानि प्रचलित हो। उन शब्दों चिह्नों, संकेतों या प्रतीकों का अर्थ प्राप्तकर्त्ता के लिए भी वही हो, जो उनके लिए समाज, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान और साहित्य, कला, संगीत आदि क्षेत्रों में निर्धारित हैं।

   सूचना-संप्रेषण में मुख्य बाधाएँ जैसे भाषा, समय, आर्थिक-विपन्नता, प्रशिक्षित लोगों का अभाव, संप्रेषक और प्रापक की उम्र का अन्तर, शिक्षा में अंतर, वैचारिक मतभेद हो, सांस्कृतिक और भौगोलिक अंतर हो तो भी संदेश, संप्रेषण में बाधा आती है।

इस प्रकार स्पष्ट कहा जा सकता है कि सूचना का आदान-प्रदान किसी भी समाज के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। अतः इसके लिए संप्रेषण की बाधाओं को दूर कर समाज को उन्नत किया जा सकता है। निःसंदेह संप्रेषण ने समाजीकरण की दिशा में अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वाह करके सामाजिक परिदृश्य को बदला है। नई सूचनाओं से व्यक्ति और समाज की मानसिक क्षमता का विकास किया है, उनकी कामनाओं को स्वस्थ रूप देकर अभिरुचियों को समाज हित में निर्मित करके संप्रेषण ने जागृत जनमत तैयार कर समाज के लिए उपयोगी बनाया है। संप्रेषण के माध्यम मनोरंजन के साथ विकास के लिए संदेश देकर समाज का नव-निर्माण कर रहे हैं। सामाजिक विकास में संप्रेषण का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ग्लोबलाइज़ेशन के इस दौर में ऑनलाइन सूचनाएँ देने और लेने का सबसे बड़ा माध्यम सोशल मीडिया है।

सोशल मीडिया के ज़रिए संप्रेषण मौजूदा दौर की सबसे बड़ी आवश्यकता है। साइबर तकनीक ने एक आम आदमी को अपनी बात सारी दुनिया में कुछ क्षणों में पहुँचाने की ताकत दी है।

1.4.1 प्रश्नों की स्वयं जाँच करना

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए–

(1) सूचना का संप्रेषण किसके विकास के लिए अति महत्त्वपूर्ण है? स्पष्ट कीजिए।

(2) संप्रेषण की चुनौतियों को मुख्य रूप से कितनी श्रेणियों में बाँटा जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।

(ख) निम्नलिखित कथनों पर सही/ गलत के निशान लगाइए–

(1) वाक्–प्रतीक का भ्रष्ट संप्रेषण संदेश को बाधित करता है। (सही/ गलत)

(2) आर्थिक एवं वित्तीय सीमाएँ भी सूचना संप्रेषण में बाधा उत्पन्न करती हैं। (सही/ गलत)

(ग) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(1) लोगों की मनोवृत्ति, अभिमत और मूल्य प्रभावकारी संप्रेषण में ..... उत्पन्न करता है। (सहायता/ मदद/ बाधा)

(2) इस क्षेत्र में कई ऐसे ..... है, जिनके कारण उपलब्ध सूचना का सही संप्रेषण नहीं हो पाता है। (रूकावट/ खेद/ अवरोध)

(3) हमारी वाक् और श्रवण इन्द्रियों के अतिरिक्त ऐसे बहुत से ..... हैं जो प्रभावपूर्ण ढंग से हमारी बात को लोगों तक नहीं पहुँचा पाते। (तरीके/ तकनीक/ यंत्र)

1.5 अभ्यास के लिए प्रश्न

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1) संप्रेषण क्या है? स्पष्ट कीजिए।

(2) संप्रेषण के प्रमुख प्रकार क्या है? स्पष्ट कीजिए।

(3) सफल संप्रेषण के मार्ग में आने वाली बाधाओं को वर्णित कीजिए?

(4) मौखिक संप्रेषण से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए।

(5) लिखित संप्रेषण से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।

(6) संप्रेषण के परम्परागत माध्यमों का विश्लेषण कीजिए।

(7) संप्रेषण के आधुनिक प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

(8) संप्रेषण के आधुनिक माध्यमों और परम्परागत माध्यमों की विशेषताएँ लिखें।

(9) भाषा और संप्रेषण एक दूसरे के पूरक हैं? स्पष्ट कीजिए।

(10) जनसंचार माध्यमों में संप्रेषण की भूमिका स्पष्ट करें।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में दीजिए–

(क) संप्रेषण में सूचना अथवा जानकारी के साथ-साथ विचारों, भावनाओं, प्रश्न आदि का समावेश भी होता है। (.....)

(ख) संप्रेषण का काम संदेश को कूट बनाना है। (.....)

(ग) संदेश प्राप्तकर्त्ता, संदेशों को डीकोड करता है। (.....)

(घ) संचार मानव जीवन की निरंतरता की रक्षा करता है। (.....)

(ग) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(क) संप्रेषण का विषय-क्षेत्र अत्यंत ..... है। (व्यापक, संकुचित)

(ख) संप्रेषण-प्रक्रिया में अर्थ की निष्पत्ति ..... के घटको को पारस्परिक संबंध के अतिरिक्त संदर्भ से भी निर्धारित होती है। (वाक्य, शब्द)

(ग) यदि संप्रेषण प्रक्रिया में कोई अवरोध हो तो उसे ..... कहते है। (शोर, रूकावट)

(घ) संप्रेषण, संप्रेषक और ग्रहिता के बीच ..... है। (अत:क्रिया, अत:प्रक्रिया)

पाठ–2

संप्रेषण की संभावनाएँ एवं भ्रामक संप्रेषण और प्रभावी संप्रेषण में अंतर

डॉ. अनिल कुमार
स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली

2.1 प्रस्तावना

संप्रेषण सूचनाओं के आदान–प्रदान की एक ऐसी विशिष्ट अवधारणा है जो अपनी सहजता, सरलता के साथ अपनी सफलता व विफलता से संबंधित है। इस प्रक्रिया में दो या दो से अधिक व्यक्ति या समूह अपने भावों, विचारों, तथ्यों संबंधी जानकारी का आदान–प्रदान करते हैं। संप्रेषण की प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह ध्यान रखने लायक है कि इसमें संदेश या जानकारी के अर्थ, लक्ष्य एवं व्यवहार की समरूप समझ भी विकसित की जाती है। संप्रेषण मुख्य रूप से मानव संबंधों का एक ऐसा विशिष्ट उपकरण है जो लोगों को परस्पर एक–दूसरे के निकट लाने या उन्हें एक–दूसरे से दूर करने का कार्य करता है। संप्रेषण–प्रक्रिया वक्ता और श्रोता दोनों से समान रूप से जुड़ी हुई है। सामान्यतः संप्रेषण की प्रक्रिया में सूचना या ज्ञान को दूसरे लोगों के साथ साझा किया जाता है। चूँकि संप्रेषण एक सचतेन प्रक्रिया है। अतः सहज ही यह जिज्ञासा उठती है कि 'संप्रेषण की संभावनाएँ' क्या–क्या हैं और साथ ही 'भ्रामक संप्रेषण' और 'प्रभावी संप्रेषण' में क्या अंतर है।

प्रस्तुत अध्ययन–सामग्री में आप 'संप्रेषण की संभावनाओं' एवं 'भ्रामक संप्रेषण और प्रभावी संप्रेषण में अंतर' को पढ़ेंगे।

2.2 अधिगम का उद्देश्य

1. इस अध्ययन–सामग्री को पढ़कर आप संप्रेषण की संभावनाओं के विषय में जान सकेंगे।
2. संप्रेषण में भ्रामक संप्रेषण और प्रभावी संप्रेषण के अंतर को जान सकेंगे।
3. संप्रेषण की संभावनाओं सहित भ्रामक संप्रेषण और प्रभावी संप्रेषण की आवश्यकताओं को समझकर इन पर चर्चा–परिचर्चा एवं इन पर अपनी राय दे सकेंगे।

2.3 विषय–प्रवेश एवं विवेचन

मानव समाज में मानवीय समाज की सभी क्रियाएँ–प्रतिक्रियाएँ संप्रेषण पर ही आधारित हैं। बोलने, सुनने, देखने, सोचने, पढ़ने–लिखने यानी विचार–विमर्श में एक अनुमान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का लगभग 70 प्रतिशत समय संप्रेषण की प्रक्रिया में बीतता है। संप्रेषण एक प्रक्रिया है, केवल संदेश नहीं। इस प्रक्रिया के अंतर्गत एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से अपने विचारों, भावों एवं अनुभवों को साझा करता है। संप्रेषण विचारों के

आदान-प्रदान की प्रक्रिया है। संप्रेषण का सिद्धांत यह मानकर चलता है कि संप्रेषण का स्तर चाहे जो भी हो मानव संप्रेषण में व्यक्ति पूर्णत: सन्निहित रहता है। एक तथ्य और उल्लेखनीय है कि संप्रेषण की प्रक्रिया का न तो कोई निश्चित आरंभ है और न ही कोई अंत। संप्रेषण प्रक्रिया और उस के सामाजिक महत्त्व को देखते हुए यहाँ एक तथ्य यह उभरकर आता है कि संप्रेषण की संभावनाएँ क्या-क्या है और भ्रामक संप्रेषण और प्रभावी संप्रेषण में अंतर क्या है।

संप्रेषण की संभावना के स्पष्टीकरण हेतु सर्वप्रथम संप्रेषण को जानना आवश्यक है। संप्रेषण संदेश वाहक और संदेश प्राप्तकर्त्ता के बीच अंत:क्रिया है। संक्षेप में, संप्रेषण में एक व्यक्ति (संप्रेषणकर्त्ता) सूचना को सिग्नल के रूप में संकेतबद्ध करता है, जो दूसरे मनुष्य (संदेश प्राप्तकर्त्ता) के पास पहुँचते हैं। वह इस सिग्नल को संकेत मुक्त करता है और उचित विधि से प्रतिक्रिया करने में निपुण बनाता है। अमेरिकी विद्वान हैराल्ड डी. लासवेल संप्रेषण प्रक्रिया को व्यक्ति के विचार, व्यवहार, कार्य और तौर-तरीकों को प्रभावित एवं परिवर्तित करने वाले एक सशक्त माध्यम के रूप में देखते हैं। लासवेल[1] के अनुसार संप्रेषण-प्रक्रिया के वैज्ञानिक अध्ययन में निम्नलिखित बातों से संबंधित तत्त्व हैं-

कौन (कहता है)?

क्या (कहता है)?

किस माध्यम से (कहता है)?

किसको/किससे (कहता है)?

कितने प्रभाव से (कहता है)?

यहाँ संप्रेषण-प्रक्रिया के इन पाँचों तत्त्वों पर गहनता से विचार करें तो हम पाते हैं कि-

कौन → संप्रेषक है, क्या कहता है → संदेश है, किस माध्यम से कहता है → संप्रेषण का माध्यम है, किसको/ किससे → संदेश ग्रहणकर्ता है, और कितने प्रभाव से कहता है → प्रभाव है।

लासवेल द्वारा प्रस्तुत संप्रेषण-प्रारूप संप्रेषण क्षेत्र में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। लासवेल के इस संप्रेषण प्रारूप का हर स्तर पर वक्ता एवं श्रोता का शोध व विश्लेषण करें तो कौन यानी स्रोत का विश्लेषण, क्या कहता है यानी संदेश की अंतर्वस्तु का विश्लेषण, किस माध्यम से यानी माध्यम का विश्लेषण, किसको यानी श्रोता का विश्लेषण और किस प्रभाव से यानी श्रोता पर वक्ता के संदेश के प्रभाव का विश्लेषण।

उपर्युक्त आधार पर संप्रेषण किसी व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों को प्रभावित कर उनके ज्ञान, मान्यताओं, समग्रत: आचार-व्यवहार में परिवर्तन का सुनियोजित प्रयास माना जाता है। संप्रेषण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक या अनेक व्यक्ति विचारों, तथ्यों, भावों या प्रभावों का आदान-प्रदान इस तरह से किया जाता है जिससे कि प्रत्येक को संदेश का अर्थ व अभिप्राय और उसके उपयोग की सही समझ विकसित हो सके।

संप्रेषण में संप्रेषक, संदेश और संदेश ग्रहीता महत्त्वपूर्ण होते हैं। इसमें संप्रेषक संदेश की संरचना करता है। संदेश प्राप्तकर्त्ता इस संदेश को प्राप्त कर इस संदेश की संरचना को समझता है, और उसे एक अर्थ प्रदान करता है। इस तथ्य से स्पष्ट होता है संप्रेषण प्रक्रिया में एक बिंदु वक्ता से जुड़ा होता है और दूसरा श्रोता

से। संदेश किसी भी माध्यम द्वारा निर्दिष्ट व्यक्ति या समूह तक प्रेषित किया जा सकता। इस तरह संप्रेषण प्रक्रिया के महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं–

स्रोत → संदेश → कूट बनाना (संकेत संरचना) → माध्यम → संदेश प्राप्तकर्त्ता और → फीडबैक

इस आधार पर कहा जा सकता है कि संप्रेषण एक सामाजिक अंतर्क्रियात्मक प्रक्रिया है। वे स्पष्ट रूप में पारस्परिक विचारों, ज्ञान, अभिवृत्तियों एवं व्यवहारों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। यह एक द्विपक्षीय प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत दो या दो से अधिक मनुष्यों में परस्पर पृष्ठपोषण एवं अंत:क्रिया होती है जो विचारों के आदान-प्रदान को उत्साहित करती है। ऐसे में संप्रेषण भावों एवं विचारों सहित ज्ञान आदि का आदान-प्रदान है, जो दो व्यक्तियों या समूहों के मध्य घटित होता है। लेकिन संप्रेषक और संदेशग्रहीता के मध्य पारस्परिक स्थिति में संकेत, अभिव्यक्ति, भाषा व उच्चारण और परिवेश आदि संप्रेषण को प्रभावित करते हैं।

उपर्युक्त आलोक में संप्रेषण की संभावनाओं पर बात करने के क्रम में पहले संप्रेषण के तत्त्वों, महत्त्व एवं उसकी विशेषताओं पर बात करना आवश्यक रहेगा।

2.4 संप्रेषण के तत्त्व

संप्रेषण प्रक्रिया में संप्रेषण के आधाभूत तत्त्व तीन होते हैं–

1. स्रोत/संप्रेषक/ संदेश भेजने वाला
2. संदेश और
3. लक्ष्य/ग्राही या संदेश प्राप्त करने वाला।

परंतु संप्रेषण प्रक्रिया में जब तक माध्यम और फीडबैक की बात न की जाए, तब तक संप्रेषण प्रक्रिया की बात पूर्ण नहीं होती। इससे संप्रेषण में दो तत्त्व और जुड़ जाते हैं। अत: संप्रेषण प्रक्रिया के पाँच तत्त्व प्रमुखता से दिखाई देते हैं- 1. स्रोत, 2. संदेश, 3. माध्यम 4. श्रोता, 5. फीडबैक। संक्षेप में, संप्रेषण के तत्त्वों का विवरण इस प्रकार है–

1. **स्रोत**– संप्रेषण में स्रोत/ संचारक/ संप्रेषक वक्ता, संदेश प्रक्रिया का आरंभिक बिंदु होता है। स्रोत उन तरीकों को निर्धारित करता है जिनसे संदेश ग्रहण करने वाला प्रभावित हो। सफल एवं प्रभावी संप्रेषण प्रक्रिया हेतु स्रोत/संप्रेषक में भाषायी कौशल, सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहार, अपने विषय की जानकारी सहित श्रोताओं के ज्ञान एवं स्तर का ज्ञान होना भी जरूरी है। संप्रेषण को प्रभावशाली बनाने के लिए संप्रेषक में बोलने, लिखने, पढ़ने, सुनने और तर्क करने के कौशल होने आवश्यक हैं। इसके अतिरिक्त संप्रेषण में स्रोत की कतिपय विशेषताएँ हैं- विश्वसनीयता, विशेषज्ञता, आकर्षण, निष्पक्षता और सामाजिक प्रतिष्ठा आदि।
2. **संदेश**– संप्रेषक द्वारा बोले/कहे, लिखे या फिर सांकेतिक रूप में प्रस्तुत किए गए भाव संदेश हैं। संप्रेषण में संदेश की कुछ विशेषताएँ है- पहला संप्रेषक श्रोता की आवश्यकता को ध्यान में रखकर अपने संदेश को संप्रेषित करे। दूसरा संदेश इस तरह प्रस्तुत किया/ किये जाए कि श्रोताओं का पूरा ध्यान

अपनी ओर आकर्षित कर सके। तीसरा संप्रेषक को अपने संदेश में आवश्यकतानुसार प्रतीकों एवं चिह्नों का प्रयोग करना चाहिए ताकि श्रोता संप्रेषक के संप्रेष्य को सहजता से ग्रहण कर सके।

3. **माध्यम**– संप्रेषण में माध्यम संबोधक और संबोधित के मध्य सेतु का कार्य करता है। संप्रेषण के अनेक माध्यम हैं जैसे बातचीत/संवाद, सामूहिक चर्चा, ई मेल, इंटरनेट, ब्लॉग, वेबसाइट और तमाम सूचना एवं जनसंचार के माध्यम परंतु चूँकि हर माध्यम के अपने गुण–दोष होते हैं। अतः संप्रेषक को ही संप्रेषण हेतु अपनी समझ से किसी भी ऐसे माध्यम का चुनाव करना होता है जो उसके संदेश को उसके लक्ष्य यानी श्रोता तक यथावत् पहुँचा दे।

4. **श्रोता/संदेश प्राप्तकर्ता**– संप्रेषण–प्रक्रिया में संदेश ग्रहण करने वाला व्यक्ति श्रोता, संदेश प्राप्तकर्त्ता/ ग्राही या फिर लक्ष्य कहा जाता है। ग्राही एक अकेला व्यक्ति, एक समूह या फिर पूर्ण समाज भी हो सकता है। संप्रेषक को अपने संदेश के लक्षित व्यक्ति या समूह को पहचान कर उचित माध्यम से अपना संदेश संप्रेषित करना चाहिए। यहाँ एक बात और उल्लेखनीय है कि ग्राही संप्रेषक के जितना अधिक समरूप होगा संप्रेषण–प्रक्रिया के सफल होने की संभावना उसी मात्रा में बढ़ जाती है।

5. **प्रतिपुष्टि/फीड बैक**– संप्रेषण में श्रोता संदेश ग्रहण कर, उस संदेश के प्रति कोई प्रतिक्रिया करता है। यह प्रतिक्रिया ही जब संप्रेषक को मिलती है तो फीडबैक कहलाती है। कई बार संदेश प्राप्तकर्त्ता कोई प्रतिक्रिया नहीं करता परंतु संप्रेषक के लिए यह भी एक फीडबैक है। फीडबैक के द्वारा संप्रेषक को यह मौका मिलता है कि वह अपने संदेश के संबंध में अपनी अगली प्रतिक्रिया को ध्यान में रखते हुए अपने संदेश में आवश्यक संशोधन या सुधार करे। वस्तुतः फीडबैक के अभाव में कोई भी संप्रेषण निरर्थक ही होता है। यहाँ पर फीडबैक से ही यह पता चलता है कि संप्रेषण प्रक्रिया में संदेश को किस प्रकार व्याख्यायित किया गया है। यहाँ यह उल्लेख करना भी जरूरी है कि यह कोई आवश्यक नहीं कि जब अलग–अलग लोगों तक संदेश पहुँचे तो वे उसके प्रति समान प्रतिक्रिया करें। अलग–अलग श्रोता/लक्ष्य होने पर उनकी प्रतिक्रियाएँ भी संप्रेषक को अलग–अलग मिल सकती हैं। इस फीडबैक के आधार पर ही हम कह सकते हैं कि संप्रेषण का अभिप्राय सहभागिता व साझेदारी ही संप्रेषण– प्रक्रिया है।

2.5 संप्रेषण का महत्त्व

संप्रेषण और उसके तत्त्वों से अवगत होने के बाद हम पाते हैं कि मानव–जीवन में संप्रेषण का अत्यधिक महत्त्व है। न केवल शिक्षा एवं उद्यम के क्षेत्र में बल्कि सामाजिक जीवन में भी संप्रेषण के महत्त्व को निम्नलिखित नज़रिए से रेखांकित किया जा सकता है–

1. **समाज में सहयोग एवं विश्वास के विकास हेतु**– संप्रेषण के द्वारा समाज में परस्पर सहयोग एवं विश्वास विकसित होता है, जो सामाजिक जीवन की आधारशिला है। प्रभावी संप्रेषण के द्वारा शिक्षक अपने छात्रों में और किसी संगठन के सदस्यों के मध्य परस्पर सहयोग एवं विश्वास का विकास होता है।

2. **निर्णय लेने और योजना बनाने के लिए**– संप्रेषण का महत्त्व इस बात से भी उजागर होता है कि संप्रेषण निर्णय लेने और योजना बनाने में मदद करता है। यदि किसी समूह/संगठन में स्वस्थ संप्रेषण का अभाव होगा तो उसके सदस्य उचित निर्णय लेने और अपने कार्य संबंधी निर्णय लेने में गलती करेंगे। अत: किसी भी महत्त्वपूर्ण बात पर निर्णय लेने और उस पर योजना बनाने के लिए समुचित संप्रेषण आवश्यक है।
3. **नेतृत्व का आधार**– संप्रेषण समाज में नेतृत्व को आधार भी प्रदान करता है। समाज में नेतृत्व के तमाम कार्य नेता और जनसामान्य के मध्य स्वस्थ संप्रेषण के बिना असफल एवं असंभव हो जाते हैं।
4. **उद्देश्य-प्राप्ति का आधार**– संप्रेषण में भावों, विचारों और सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाता है। यह विचारों का आदान-प्रदान किसी न किसी निश्चित उद्देश्य को दृष्टि में रखकर किया जाता है। इससे उद्देश्य स्पष्ट हो जाते हैं और जब उद्देश्य स्पष्ट हों तो उन्हें प्राप्त करना आसान हो जाता है।
5. **समय और शक्ति की बचत**– संप्रेषण का महत्त्व इस तथ्य से भी प्रकट होता है कि समुचित/प्रभावशाली संप्रेषण के द्वारा समय और शक्ति दोनों की बचत होती है।
6. **कार्य-संतुष्टि के लिए**– संप्रेषण का महत्त्व इसलिए भी है कि इससे कार्य करने वालों के कार्य को प्रोत्साहित किया जाता है तो उन्हें अपने कार्य से संतुष्टि प्राप्त होती है।
7. **व्यवहार में परिवर्तन**– संप्रेषण का उद्देश्य है व्यवहार परिवर्तन। संप्रेषण प्रक्रिया में संप्रेषक द्वारा संप्रेषी तक जो भी तथ्य व सूचनाएँ संप्रेषित किए जाते हैं उनके फलस्वरूप संप्रेषी के व्यवहार में परिवर्तन होता है। यदि ऐसा नहीं होता है तो संप्रेषण अपने उद्देश्य में असफल होकर व्यर्थ हो सिद्ध होता है।

2.6 संप्रेषण की विशेषता

संप्रेषण में संदेश संप्रेषक और संदेश ग्राही दोनों के मध्य किसी उद्देश्य को लेकर संप्रेषण-प्रक्रिया होती है। संप्रेषण की सफलता हेतु इसका श्रोता के लिए सार्थक होना भी आवश्यक है अन्यथा संप्रेषण-प्रक्रिया उत्प्रेरक का कार्य नहीं कर पाएगी। संप्रेषक के संप्रेष्य/संदेश में उसके अनुभव, वर्तमान व्यवहार और साथ ही भविष्य की आवश्यकता संबंधी एक रूपरेखा विद्यमान रहती है। ग्राही पर संदेश के प्रभाव का मूल्यांकन भी फीडबैक के रूप में किया जाना चाहिए। उपर्युक्त आधार पर – अंतर्क्रियात्मकता, उद्देश्यपूर्णता, सर्वव्यापकता, प्रासंगिकता, निरंतरता, समरुपता एवं सम्पूरकता, अर्थ-स्थानांतरण और बोधगम्यता आदि संप्रेषण की कुछ प्रमुख विशेषताएँ प्रकट होती हैं। ये तमाम विशेषताएँ संप्रेषण में संबंधों को उत्पन्न करती हैं और संबंध संप्रेषण को उत्पन्न करते हैं। संक्षेप में, संप्रेषण की उपर्युक्त विशेषताओं का विवरण इस प्रकार है-

1. **अंतक्रियात्मकता**– संप्रेषण की प्रक्रिया में वक्ता और श्रोता के रूप में एक या एकाधिक व्यक्ति/व्यक्तियों दूसरे शब्दों में वक्ता और श्रोता के मध्य अंतर्क्रिया होती है। इसमें व्यक्तित्व, स्रोत की प्रामाणिकता यानी विश्वसनीयता, अभिवृत्ति की प्रकृति, संज्ञानात्मक स्थिरता या अस्थिरता आदि तत्त्व शामिल होते हैं।

2. **उद्देश्यपूर्णता**– संप्रेषण एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। संप्रेषणकर्त्ता किसी न किसी उद्देश्य से प्रेरित होकर ही अपनी बात किसी व्यक्ति या वर्ग यानी श्रोता के सामने रखता है। यही संप्रेषण की उद्देश्यपूर्णता कही जाती है। इसके अंतर्गत स्रोत, संदेश, माध्यम और संदेशप्राप्तकर्त्ता सम्मिलित रहते हैं।

3. **सर्वव्यापकता**– व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है और समाज में जीवन व्यतीत करने के लिए संप्रेषण अत्यावश्यक है। अत: संप्रेषण में सर्वव्यापकता का गुण निहित रहता है क्योंकि संप्रेषण एक सचेतन और सतत् प्रक्रिया है। जिसके फलस्वरूप इसका क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत होता है।

4. **प्रासंगिकता एवं निरंतरता**– संप्रेषण की प्रासंगिकता से तात्पर्य है संप्रेषण किसी न किसी प्रसंग के अंतर्गत होता है। जैसे- कक्षाकक्ष या किसी विचार संगोष्ठी में, किसी कम्पनी में या सांस्कृतिक रीति-रिवाजों में, किसी को नैतिक-अनैतिक शिक्षा देने आदि के संदर्भ में और हाँ, प्रासंगिकता की दृष्टि से संप्रेषण में एक तरह की कालवाचकता रहती है। संप्रेषण एक सोद्देश्य एवं सतत् प्रक्रिया है। इससे संप्रेषण में निरंतरता का गुण भी दृष्टिगत होता है।

5. **समरुपता एवं सम्पूरकता**– संप्रेषण सामान्यत: विचारों के आदान-प्रदान की एक दोहरी प्रक्रिया है। इसमें वक्ता और श्रोता परस्पर कभी श्रोता तो कभी वक्ता की भूमिका में परस्पर बदलाव होता रहता है। वक्ता और श्रोता में यदि समरूपता हो तो संप्रेषण की सफलता की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए इसमें समरुपता एवं सम्पूरकता का गुण पाया जाता है।

6. **अर्थ स्थानंतरण और बोधगम्यता**– संप्रेषण में वक्ता और श्रोता के सहसंबंध के फलस्वरूप वक्ता से श्रोता और फिर श्रोता से वक्ता के मध्य अर्थ स्थानांतरण और बोधगम्यता का गुण भी प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है।

संप्रेषण की उपर्युक्त विशेषताओं के आलोक में यह कहा जा सकता है कि संप्रेषण एक सतत् रूप से गतिमान प्रक्रिया है। इसमें वक्ता और श्रोता के मध्य किसी न किसी रूप में अंतर्संबंध विद्यमान रहता है। एक महत्त्वपूर्ण बात यहाँ ध्यान दने की यह है कि- "कुछ विद्वान 'संदेश' को वक्ता से अधिक श्रोता से जोड़ कर देखते हैं क्योंकि अब यह माना जा रहा है कि 'क्या कहा जा रहा है' से संदेश का अर्थ वक्ता से अधिक श्रोता की मन:स्थित, उसकी संज्ञानात्मक क्षमता (Cognition Skill) उसकी संप्रेषण-क्षमता (Communiation Skill) पर अधिक निर्भर करता है। अर्थग्रहण करते समय श्रोता का ज्ञान-भण्डार, मूल्य, दृष्टिकोण आदि अहम भूमिका निभाते हैं, इसलिए संप्रेषण-प्रक्रिया में श्रोता की प्रतिक्रिया बहुत अहमियत रखती है। टेरी इगल्टन के शब्दों में यदि कहें तो..... "All Communication involves Faith".[2] अत: संप्रेषण-प्रक्रिया में श्रोता का वक्ता पर विश्वास भी अत्यावश्यक है।

2.7 संप्रेषण की संभावनाएँ

संप्रेषण के तत्त्वों, महत्त्व एवं विशेषताओं को जानने के बाद अब संप्रेषण की संभावनाओं पर बात करना उचित रहेगा। संभावना से अभिप्राय है- किसी घटना या काम के फलस्वरूप वह स्थिति जिसमें उसके पूर्ण होने की उम्मीद हो। यहाँ संप्रेषण-प्रक्रिया की सामाजिक उपादेयता को देखते हुए संप्रेषण की संभावनाओं से आशय है - उचित संप्रेषण के क्या-क्या परिणाम मिल सकते हैं। यानी संप्रेषण की प्रक्रिया के बाद का

अनुमान। संप्रेषण प्रक्रिया के फलस्वरूप जो कार्य होते हैं उनके विषय में डॉ. श्रीकांत सिंह ने हेराल्ड डी. लासवेल[3] के हवाले से संप्रेषण के कार्यों को निम्नलिखित रूपों में विभाजित किया है–

1. सूचना/संदेश संग्रह एवं प्रसार
2. सूचना/संदेश विश्लेषण
3. सामाजिक ज्ञान एवं मूल्यों का प्रेषण

संक्षेप में, संप्रेक्षण के कार्य को देखते हुए इस कुछ विद्वान मनोरंजन को भी संप्रेषण के कार्यों के अंतर्गत गिनते है। इस प्रकार संप्रेषण के चार कार्य प्रमुख है। संप्रेषण की कतिपय संभावनाएँ हैं–

1. संप्रेषण एक सोद्देश्य प्रक्रिया है जिसमें विचारों का आदान–प्रदान किसी विशिष्ट उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाता है। अतः संप्रेषण की पहली संभावना यही है कि जिस उद्देश्य से समुचित संप्रेषण किया जाएगा, वह प्राप्त हो सकेगा।
2. संप्रेषण प्रक्रिया में वक्ता को अपने चिंतन–मनन द्वारा अपने संप्रेष्य (संदेश) को संप्रेषी के मन–मस्तिष्क में उतारने के लिए उचित रीति–नीति को अपना कर संदेश प्रसारित करने से पहले उस सूचना, तथ्य और विचार को पहले स्वयं हृदंगम अर्थात् अपने हृदय में उतार लेना चाहिए, जिससे कि वह उसके लाभ–हानि से अच्छी तरह परिचित हो सके और फिर आत्मविश्वास से अपनी बात श्रोता के समक्ष रखे। इससे संप्रेषण के प्रभावी होने की संभावना बढ़ जाती है।
3. संप्रेषण में संप्रेषक द्वारा संदेश को इस तरह भावमय बनाना और अभिव्यक्त करना चाहिए कि सम्प्रेषी को लगे कि यह संदेश उसी के लिए है और विशेषकर उसी के हित में है।
4. संप्रेषण की एक संभावना यह भी है कि संप्रेषक अपने श्रोताओं की आयु, रुचि एवं स्तर के अनुरूप अपने संप्रेषण माध्यम में परिवर्तन–परिवर्द्धन कर सकेगा।
5. चूँकि संप्रेषण प्रक्रिया में अनुभवों एवं विचारों का आदान–प्रदान किया जाता है। वक्ता और श्रोता में यह आदान–प्रदान प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनों रूपों में संपन्न होता है। संप्रेष्य संदेश में अनुभव, वर्तमान व्यवहार और भविष्य की आवश्यकता निहित रहती है। अतः दो व्यक्तियों या वर्गों या फिर समग्र समाज में सामंजस्य व सार्थकता का वातावरण संप्रेषण से ही हो सकेगा।
6. संप्रेषण प्रक्रिया में संदेश/सूचना संग्रह एवं प्रसार निहित है। अतः इससे समाज में लोगों की सूचना या संदेश समाज के अन्य लोगों या वर्गों तक पहुँचाते हैं। इस प्रकार संप्रेषण की एक संभावना यह भी बनती है कि संप्रेषण माध्यम सूचनाओं का संग्रह कर उनका प्रचार–प्रसार करते हैं। आज तकनीकी आधारित संप्रेषण माध्यमों– इंटरनेट, मेल, ब्लॉग आदि के द्वारा घर बैठा व्यक्ति किसी भी सूचना को तुरंत विश्वव्यापी रूप में प्रचारित–प्रसारित कर सकता है।
7. संप्रेषण प्रक्रिया व्यक्ति/वर्ग के समाजीकरण के एक अभिकरण/एजेंट का कार्य भी करती है। संप्रेषण प्रक्रिया के दौरान एक ही संदेश के प्रति समाज के अलग–अलग लोग अलग–अलग प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इस प्रतिक्रिया के फलस्वरूप समाज के लोगों के उचित दृष्टिकोण के निर्माण, और उसके अनुकरण में मदद मिलती है।

उपर्युक्त महत्त्वपूर्ण संभावनाओं के साथ-साथ संप्रेषण की कुछ उल्लेखनीय संभावनाएँ और भी हैं-

1. संप्रेषण द्वारा राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को बल प्रदान करने में मदद मिलती है।
2. संप्रेषण समाज में लोगों को क्रियाशील होने के लिए प्रेरणा प्रदान करता है।
3. संप्रेषण प्रक्रिया के द्वारा लोगों के सोचने-समझने और सीखने के नजरिये में भी परिवर्तन लाया जाता है।
4. संप्रेषण जनमत को प्रभावित करने के लिए भी महत्त्वपूर्ण रूप से उपयोगी है।
5. संप्रेषण प्रक्रिया सामाजिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तन में भी उपयोगी होता है।
6. यह समाज में नवीन विचारों एवं सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में भी सहयोगी है।
7. संप्रेषण समाज की ज्वलंत समस्याओं जैसे जाति, धर्म, लिंग और पर्यावरण संरक्षण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
8. संप्रेषण के द्वारा समाज में व्यक्ति की अभिव्यक्ति एवं व्यवहार परिवर्तन में सहयोग मिलता है।
9. संप्रेषण समाज के लोगों के आपसी संबंधों को सुधारने में भी उपयोगी हो सकता है।
10. संप्रेषण सामाजिक व्यवस्था को नियंत्रित, विकसित एवं स्थापित करने में भी सहायक हो सकता है।

2.7.1 प्रश्नों की स्वयं जाँच करना

प्र (क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सिर्फ हाँ या नहीं में दीजिए।

(i) संप्रेषण-प्रक्रिया वक्ता और श्रोता दोनों से समान रूप से जुड़ी है।

(ii) संप्रेषण-प्रक्रिया में स्रोत, संदेश, माध्यम, श्रोता और फीडबैक कुल पाँच तत्त्व होते हैं।

(iii) संप्रेषण समाज के लोगों के आपसी संबंधों को सुधारने में किसी प्रकार उपयोगी नहीं होता है।

प्र. (ख) निम्नलिखित खाली स्थान की पूर्ति उचित शब्द द्वारा कीजिए।

(i) संप्रेषण में माध्यम संबोधक और संबोधित के मध्य.....का कार्य करता है।

क. स्रोत ख. सेतु ग. सामूहिक चर्चा

(ii) संप्रेषण- प्रक्रिया में संदेश की संरचना.....करता है।

क. वक्ता ख. संदेश प्राप्तकर्ता ग. संदेश

(iii) संप्रेषण दो व्यक्तियों के मध्य विचारों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया है। उद्देश्यपूर्णता और ..... इसकी विशेषताएँ।

क. अर्थ स्थानंतरण ख. सर्जनात्मकता ग. संदेशग्राही

प्र. (ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए–

(i) संप्रेषण क्या है?

(ii) संप्रेषण के तत्त्वों का वर्णन कीजिए।

(iii) संप्रेषण की क्या-क्या संभावनाएँ हैं? स्पष्ट कीजिए।

2.8 भ्रामक संप्रेषण

मानव अस्तित्व के साथ ही संप्रेषण प्रक्रिया का उद्‌भव और विकास हुआ। संप्रेषण मानव समाज के साथ-साथ अन्य जीव-जंतुओं के समाज में भी विद्यमान रहता है। संप्रेषण मानवीय जीवन और अस्तित्व के लिए वायु के समान परम आवश्यक है। क्योंकि संप्रेषण मानव के आचार-व्यवहार को प्रभावित एवं नियंत्रित करता है।

संप्रेषण प्रक्रिया का प्रारंभ संप्रेषक और उसके संदेश से होता है। संदेश केवल एक सूचना का संप्रेषण ही नहीं है, अपितु संदेश प्राप्ति के बाद संदेश ग्रहीता पर एक प्रभावी प्रतिक्रिया में प्रतिपुष्टि/फीडबैक के रूप में जाना जाता है। संप्रेषण तभी सार्थक कहा जाएगा जब उसमें प्रतिपुष्टि भी हो। कई बार वक्ता यानी संप्रेषक जो संदेश श्रोता यानी संदेश ग्रहीता तक पहुँचाना चाहता है, वह ठीक उसी रूप में उस तक नहीं पहुँच पाता। इससे वह वक्ता का वही संदेश ग्रहण नहीं कर पाता जो वक्ता प्रेषित करना चाहता था। इससे एक भ्रम यानी अमंजस की स्थिति उत्पन्न होती है।

संप्रेषक का इच्छित संदेश जब किसी भ्रम, अवरोध या बाधा के चलते अपने गंतव्य स्थल तक ठीक उसी रूप में नहीं पहुँचता तो भ्रामकता का रूप ले लेता है। यदि विचारों की भाषा, या वर्णन स्पष्ट न हो तो संप्रेषित विचारों की व्याख्या ठीक-ठीक हो नहीं पाती और वक्ता के विचारों पर श्रोता की उचित प्रतिक्रिया उचित न हो पाने की स्थिति में संप्रेषण प्रक्रिया असफल हो जाती है। हाँ, आधी-अधूरी संप्रेषण प्रक्रिया वक्ता के अभिप्रेत को श्रोता तक नहीं पहुँचने देती। और श्रोता अपने अनुभव, अपने जीवन संदर्भ और अपने कार्य क्षेत्र आदि के अनुरूप संदेश का अर्थ ग्रहण करता/करते हैं। यह भ्रम की स्थिति ही संप्रेषण के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है।

भ्रामक संप्रेषण का प्रमुख कारण वक्ता और श्रोता के मध्य भाषाई दक्षता एवं वैचारिक समन्वयता का अभाव होता है। इसके अतिरिक्त जब वक्ता-श्रोता-संदेश और माध्यम में से किसी भी बिंदु पर संदेश के संप्रेषण में अवरोध या बाधा आ जाए तो उससे भी संदेश प्रेषण में भ्रामकता की स्थिति बन जाती है। भ्रामकता का मूल कारण है वक्ता और श्रोता के मध्य व्यवधान।

मानव जीवन में संप्रेषण प्रक्रिया एक जटिल भाषायी प्रक्रिया है। भाषा का आविष्कार ही संप्रेषण के लिए हुआ। इससे भाषा और संप्रेषण का दोहरा संबंध ठहरता है। संप्रेषण का मूल माध्यम यदि भाषा (सांकेतिक, वाचिक या लिखित) है तो भाषा का उद्देश्य है- संप्रेषण। जैसा कि पूर्व उल्लेख किया गया है कि संप्रेषण-प्रक्रिया एक जटिल भाषायी प्रक्रिया है। यह जटिलता उस समय और अधिक जटिल लगने लगती है जब मानव समाज के संज्ञानात्मक, भावी एवं ऐच्छिक स्तरों में भिन्नता होती है। इसी से संप्रेषण में एक भ्रामकता का जन्म होता है। भ्रामक से आशय है- भ्रम या असमंजस में डालने वाला।

भावाभिव्यक्ति का सबसे सहज और सशक्त माध्यम भाषा है और भाषा की मुख्य इकाई शब्द है। जिस संदर्भ में वक्ता शब्द का प्रयोग कर रहा होता है। ठीक उसी संदर्भ में श्रोता उस शब्द का अर्थ ग्रहण न करे तो अर्थांतर हो जाता है। उदाहरण के लिए –

'यहाँ ताजा भैंस का दूध मिलता है।'

इस वाक्य में दूध के स्थान पर भैंस के ताजा होने का अर्थ निकलता है। यहाँ वक्ता की जल्दबाजी या फिर व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग न करने कारण उसके भाषायी सामर्थ्य पर प्रश्न चिह्न लगता है। ऐसे संदर्भों में संप्रेषक और उसके संप्रेष्य संदेश के संबंध में भ्रम की स्थिति बन जाती है। ऐसे ही संप्रेषक यदि अपने वाक्य प्रयोग में उचित यति-गति, विराम चिह्न और बलाघात आदि का ध्यान न रखे तो वक्ता जो संप्रेषित करना चाहता है, ठीक उसका विपरीत अर्थ श्रोता ग्रहण करता है। जैसे –

रोको मत, जाने दो। और
रोको, मत जाने दो।

इन दोनों वाक्यों में अर्धविराम चिह्न एवं बलाघात के चलते शब्दों का अर्थ एकदम अलग-अलग निकलता है। ऐसे ही जब बातचीत/अभिव्यक्ति में सूक्तियों, मुहावरों आदि का प्रयोग किया जाता है, तब यदि श्रोता को उनका सही अर्थ-संदर्भ ज्ञात न हो तो अर्थ ग्रहण करने में भ्रम की स्थिति बन जाती है। इससे संप्रेषण में बाधा आती है और श्रोता गलत अर्थ ग्रहण कर सकता है।

प्रत्येक कार्य-क्षेत्र की एक अलग शब्दावली होती है। वक्ता जिस कार्य-क्षेत्र से संबंध रखता है वह उसी क्षेत्र की शब्दावली अधिक प्रयोग करता है। यदि श्रोता को वक्ता के कार्य क्षेत्र की शब्दावली का सही-सही ज्ञान न हो तो इससे भी भ्रम फैलता है।

जब वक्ता और श्रोता संप्रेषण की प्रक्रिया में शामिल हो, तब उनका भौतिक वातावरण अनुकूल न हो, जैसे – शोर-शराबा, एक साथ अनेक संदेशों/सूचनाओं का संप्रेषण, आदि बातें भी संप्रेषण प्रक्रिया में बाधा डाल कर भ्रम की स्थिति निर्मित करती हैं।

कई बार मौखिक अभिव्यक्ति में वक्ता के उच्चारण दोष के कारण भी प्रभावी संप्रेषण नहीं हो पाता बल्कि उल्टे भ्रम की स्थिति बन जाती है। जेसे कि बहुत से लोग – स, श, ष का उच्चारण एक ही तरह से करते है। श्रोता कई बार तय नहीं कर पाता कि वक्ता कौन से – स/श/ष वाला उच्चारण कर रहा है। ऐसे में वह अपने अनुसार कोई भी शब्द तय करके उसका अर्थ ग्रहण कर लेता है। जिससे कि संप्रेषण में भ्रम की पूरी-पूरी संभावना रहती है।

ऐसे ही जब श्रोता का वक्ता और उसके द्वारा संप्रेष्य या संदेश में पूर्ण विश्वास न हो तो उससे भी भ्रम की स्थिति बनती है। ध्यान या एकग्रता की कमी के चलते भी श्रोता वक्ता के संदेश को पूरी तरह से ग्रहण नहीं करता और आधे-अधूरे संदेश से भ्रामत्मकता पनपती है।

2.9 प्रभावी संप्रेषण

प्रभावी संप्रेषण से सीधा आशय है कि जिस उद्देश्य के लिए संप्रेषण की प्रक्रिया को क्रियान्वित किया गया वह अपने उद्देश्य से पूरी तरह से सफल रही। इसके लिए यह नितांत आवश्यक है कि संप्रेषण प्रक्रिया में आने वाली तमाम बाधाओं को यथासंभव दूर किया जाए। यदि संप्रेषण के मार्ग की बाधा भाषा की

द्विअर्थिता और शोर-शराबे को दूर नहीं किया जाता तो संप्रेषक, श्रोता तक अपने विचारों या भावों को प्रभावी ढंग से नहीं पहुँचा सकता। इस दशा में संप्रेषक को अपने उद्देश्य में पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी। वह श्रोता पर उसके आचार-व्यवहार पर अपने संप्रेषण का अपेक्षित प्रभाव नहीं छोड़ पाएगा। यह स्थिति किसी भी नज़रिए से मानव समाज के लिए उपयोगी नहीं ठहरती। अतः संप्रेषक से यह अपेक्षा है कि वह हर सावधानी का पालन करे जो उसके संप्रेषण को प्रभावी बना सके। संप्रेषण के आधारभूत तीन तत्त्व बताएँ है-

1. स्रोत/संप्रेषक
2. संदेश, और
3. संदेश प्राप्तकर्त्ता।

इसके लिए जरूरी है कि संप्रेषक संप्रेषण के सभी तत्त्वों को समग्रता से ध्यान में रखते हुए अपनी संप्रेषण-प्रक्रिया को क्रियान्वित करे। विद्वानों ने प्रभावी संप्रेषण के लिए इन तीनों तत्त्वों में, यथासंभव अधिक से अधिक सहभागिता विकसित की जाए। इसके लिए यह जरूरी है कि पूरी की पूरी संप्रेषण प्रक्रिया में संप्रेषित संदेश पूरी तरह से सुस्पष्ट एवं अर्थपूर्ण हो। सामान्यतः संप्रेषण-प्रक्रिया में जब संदेश ग्रहण करने वाले तक संदेश उसी अर्थ में पहुँच जाए जिस अर्थ में संप्रेषक पहुँचाना चाहता है, तो यह प्रभावी संप्रेषण कहलाएगा। इसके लिए यह अत्यावश्यक है कि संप्रेषक के पास संदेश संबंधी सूचना पूरी हो, जिससे कि वह अपने संदेश को अच्छी तरह से कोड कर सके यानी उसे शब्दों या संकेतों में सृजित कर सके। इसके फलस्वरूप संदेश प्राप्तकर्त्ता उस संदेश को सही-सही डिकोड कर संदेश को सही अर्थ में ग्रहण कर सके। इसके साथ-साथ संप्रेषक अपने संप्रेष्य को श्रोता/ग्राही तक पहुँचाने के लिए उचित माध्यम का चयन करे। यहाँ एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि संप्रेषक द्वारा जो संदेश भेजा जाए वह संदेश प्राप्तकर्त्ता की रुचि व क्षमता के अनुरूप हो। प्रभावी संप्रेषण के लिए यह भी आवश्यक है कि संप्रेषक यह सुनिश्चित करे कि उसका संप्रेष्य/संदेश ग्रहणकर्त्ता के लिए महत्त्वपूर्ण है।

प्रभावी संप्रेषण के लिए डॉ. सुशील त्रिवेदी[4] ने संप्रेषण प्रक्रिया के विषय में जो उल्लेख किया है वह बड़ा ही उपयोगी है। वे लिखते हैं-"वास्तव में जो संदेश भेजा जाता है और ग्रहण किया जाता है वह प्रेषक के ज्ञान और अनुभव के साथ ग्राही के ज्ञान और अनुभव को जोड़ता है। इस तरह संदेश दोनों के लिए साझा ज्ञान और अनुभव बन जाता है। यह कहना उचित होगा कि साझा अनुभव एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है और जितना अधिक साझा अनुभव और साझा ज्ञान होगा उतना ही आसान और प्रभावी संचार होगा। सहभागिता के लिए आवश्यक है कि व्यक्तियों और उद्देश्यों को आपस में जोड़ा जाए। हम 'संप्रेषण' की अपेक्षा संप्रेषण-प्रक्रिया को अधिक आसानी से समझ सकते हैं। चित्र के माध्यम से यदि देखें तो संचार या संप्रेषण प्रक्रिया कुछ इस प्रकार होती है:

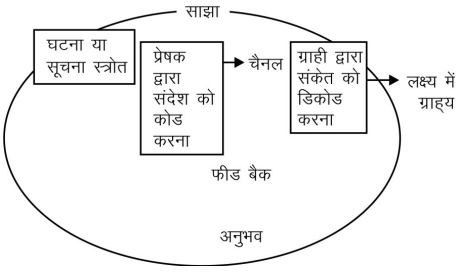

प्रभावी संप्रेषण प्रक्रिया के लिए यह नितांत आवश्यक है कि हम सामने वाले अर्थात् वक्ता की बातों व हाव-भाव को समझे और उसकी प्रतिक्रिया के अनुरूप अपनी बात का सिलसिला परिवर्तित-परिवर्द्धित करते हुए अपनी बात उचित माध्यम से रखें।

प्रभावी संप्रेषण हेतु यह तथ्य सदैव ध्यान रखना चाहिए कि यदि श्रोता संदेश का वही अर्थ ग्रहण नहीं करता है जो कि संप्रेषक को अभिप्रेत है। ऐसे में आवश्यक है कि वह अपने संदेश का उपचार करे। संदेश उपचार यानी वक्ता संदेश को भाषा, भाव-भंगिमा एवं संकेतों से इस प्रकार सृजित करे कि वह सीधा श्रोता के मन-मस्तिष्क में उतर जाए। संदेश उपचार संदेश को श्रोता के अनुरूप सहज, सरल, उपयोगी, प्रासंगिक एवं ग्राह्य बनाने का प्रयास होता है। किसी भी सफल वक्ता या प्रशिक्षक की वास्तविक सफलता का रहस्य होता है- आवश्यकतानुसार विचारों को संप्रेषित करने की विलक्षण प्रतिभा। संप्रेषक को संप्रेषित संदेश पर श्रोता की प्रतिक्रिया की अनुकूलता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि वह अपने संदेश को कितना सामयिक, प्रासांगिक, स्पष्ट, सरल, ग्राह्य, प्रवाहपूर्ण एवं श्रोता के लिए उपयोगी बनाकर प्रस्तुत करता है।

संप्रेषण एक ऐसी विशिष्ट प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य के व्यवहार एवं सामाजिक-आर्थिक व अन्य संबंधों का निर्माण होता है। विद्वानों ने प्रभावी संप्रेषण के लिए सात 'सी' के सिद्धांत को महत्त्वपूर्ण बताया है। प्रभावी संप्रेषण के सात 'सी'[5] हैं- 1. विश्वसनीयता (Credibility), 2. सन्दर्भ (Context), 3. विषय-वस्तु (Content), 4. स्पष्टता (Clarity), 5. निरन्तरता एवं एकमतता (Continuity & Consistency), 6. माध्यम (Channal), 7. प्राप्तकर्ता की क्षमता (Capability of Audience)। संक्षेप में, उपर्युक्त सात सी का विवरण इस प्रकार है-

1. **विश्वसनीयता (Credibility)-** संप्रेषण का आधार विश्वास है, जो संप्रेषणकर्त्ता/संचारक की नीयत पर निर्भर है। यह संप्रेषणकर्त्ता की इस इच्छा से भी प्रभावित होता है कि वह श्रोता को कितनी सूचना प्रदान करना चाहता है। प्राप्तकर्ता का सूचना-प्रेषक (संचारक) में पूर्ण विश्वास होना चाहिए। प्राप्तकर्ता में संप्रेषक की सामर्थ्य के प्रति भी सम्मान होना चाहिए।
2. **सन्दर्भ (Context)-** संप्रेषण-प्रक्रिया का अपने आसपास के वातावरण के साथ पूर्णतः संदर्भित होना चाहिए यानी अपने वातावरण के साथ तालमेल होना चाहिए। संप्रेषण-प्रक्रिया द्वारा जिन संदेशों का आदान-प्रदान होता है वे सब हमारे जीवन से किसी न किसी रूप में संदर्भित होते है। इस संदर्भ के अनुसार संदेश ग्रहणकर्ता संप्रेषण प्रक्रिया में सहभागी बनकर फीडबैक प्रदान करता है। संदर्भ ठीक होने पर ही संदेश प्राप्त करने वाला संदेश की पुष्टि करता है अन्यथा वह संदेश को अनदेखा कर देता है। इसके लिए जरूरी है कि सन्दर्भ की दृष्टि से संदेश को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। उसमें परस्पर विरोधाभास नहीं दिखाई देना चाहिए।
3. **विषय-वस्तु (Content)-** विषय-वस्तु के आधार पर श्रोताओं का निर्धारण होता है, अर्थात् किन लोगों के लिए किस संदेश की आवश्यकता है। अतः प्रेषित संदेश प्राप्तकर्त्ता के लिए अर्थपूर्ण (meaningful) होना चाहिए और उसके विश्वासों के अनुरूप होना चाहिए।

4. **स्पष्टता (Clarity)**- प्रभावी संप्रेषण के लिए विचारों और अभिव्यक्ति में स्पष्टता अत्यावश्यक है। संप्रेषण प्रक्रिया का चक्र मस्तिष्क में किसी विचार के उत्पन्न होते ही आरंभ हो जाता है। ऐसे में यदि विचार ही स्पष्ट नहीं होगा तो संबंधित संदेश भी स्पष्ट और प्रभावी नहीं हो सकेगा। संक्षेप में, स्पष्टता से आशय है- संदेश स्पष्ट होना चाहिए/संदेश की भाषा सरल एवं समझने योग्य होनी चाहिए। शब्दों का चयन उचित होना चाहिए और उनका ही अर्थ होना चाहिए ताकि संप्रेषक और संदेश प्राप्तकर्ता संदेश का एक ही अर्थ ग्रहण कर सकें।

5. **निरन्तरता एवं एकमतता (Continuity & Consistency)** - संप्रेषण एक सतत् गतिशील प्रक्रिया यानी कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है। संदेश को प्राप्तकर्ता तक पहुंचाने के लिए उसे लगातार दोहराना पड़ता है। इसलिए संदेश की पुनरावृत्ति के बाद भी उसमें समानता नवीनता व रोचकता होनी चाहिए।

6. **माध्यम (Channal)**- संप्रेषण-प्रक्रिया में संप्रेषक द्वारा केवल उन्हीं स्थापित माध्यमों का उपयोग किया जाना चाहिए, जिन्हें संदेश प्राप्तकर्ता उपयोगी और सार्थक समझता हो। नए माध्यमों का चुनाव करना प्राय: कठिन होता है और कई बार वह प्रभावहीन भी साबित होता है। जैसे कि अशिक्षित और कम्प्यूटर के प्रयोग से अछूते व्यक्ति/वर्ग के लिए तकनीकी आधारित संप्रेषण माध्यम- ईमेल, इंटरनेट, ब्लॉग, आदि निरर्थक सिद्ध होंगे। ऐसे ही गूँगे-बहरे व्यक्ति के लिए संप्रेषण का भाषण माध्यम सर्वथा बेकार सिद्ध साबित होगा।

7. **प्राप्तकर्ता की क्षमता (Capability of Audience)** -संप्रेषण में प्राप्तकर्ता की क्षमताओं, जैसे कि उनकी भाषा, आयु, वर्ग, संस्कृति इत्यादि को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। यदि उन की क्षमताओं और आवश्यकताओं का ध्यान नहीं रखा जाएगा, तो संदेश निष्प्रभावी या अर्थहीन हो जाएगा।

2.10 भ्रामक संप्रेषण और प्रभावी संप्रेषण में अंतर

भ्रामक संप्रेषण और प्रभावी संप्रेषण को समझने के पश्चात् यदि हम इन दोनों पर गौर करें तो इनमें कुछ आधारभूत अंतर को इस प्रकार समझा जा सकता है–

1. भ्रामक संप्रेषण का सबसे बड़ा कारण होता है, जब श्रोता और वक्ता में परस्पर विश्वास या भरोसा न हो, ऐसी स्थिति में जब वक्ता कुछ कहता है तो श्रोता उसकी बात को पहले तो सुनता ही नहीं या फिर बेमन से सुनता है। इससे वह वक्ता के संप्रेष्य में रुचि नहीं लेता और फिर जो आधा-अधूरा संदेश बेमन से उसने ग्रहण किया है, वह भ्रामकता को जन्म देता है। इसके विपरीत प्रभावी संप्रेषण की सबसे पहली आवश्यकता ही है श्रोता की वक्ता पर विश्वासनीयता। इस विश्वास के चलते ही श्रोता वक्ता की बात/संप्रेष्य को ध्यान से सुनने और समझने और फिर संदेश के अनुरूप आचार-व्यवहार करने का प्रयास करता है।
2. जब संप्रेषण-प्रक्रिया में वक्ता के संदेश में अस्पष्टता और विरोधाभास होगा तो श्रोता के मन में उस संदेश के प्रति भ्रामकता बढ़ेगी। इसलिए प्रभावी संप्रेषण के लिए जरूरी है कि वक्ता पहले अपने संप्रेष्य संदेश को भलीभाँति समझकर सुनिश्चित कर ले। जिससे कि भाषा और भाव के सदर्भ की दृष्टि से वक्ता का संदेश संदर्भानुसार ठीक हो।

3. जब वक्ता श्रोता की आयु, भाषायी ज्ञान एवं कार्य-क्षेत्र आदि का ध्यान नहीं रखता या रख पाता तो ऐसी दशा में भी भ्रामकता फैलती है। इस नज़रिए से एक उदाहरण बड़ा रूचिकर है। 'भारतेंदु हरिश्चंद्र जी का प्रहसन 'अंधेर नगरी' प्राथमिक विद्यालय से लेकर एम.ए. तक के पाठ्यक्रम में पढ़ा-पढ़ाया जाता है। परंतु आयु के विकास के साथ इसके पढ़ने-पढ़ाने में स्पष्ट अंतर दिखता है। प्राइमरी में जहाँ बकरी की मौत के आरोप एक से दूसरे पर, दूसरे से तीसरे पर सहज हँसी का कारण बनता है, तो बी.ए., एम.ए. में यही पाठ्य सामग्री (व्यंग्यात्मक रूप से) समाज में शासक के अविवेक को उजागर करती है। ऐसे ही प्रत्येक कार्य-क्षेत्र की अलग शब्दावली होती है,जैसे कि सर्राफे बाजार में चाँदी उछली/गिरी, सोना चढ़ा। सामान्यत: चाँदी और सोना उछलते/गिरते या चढ़ते नहीं लेकिन समय-समय पर इनके बाजार-भाव में उतार-चढ़ाव के चलते इनके साथ ये शब्द प्रयुक्त होते हैं।
4. भ्रामकता का एक कारण यह भी है कि जब वक्ता/श्रोता को एक साथ अनेक सूचनाएँ प्रदान करने की कोशिश करता है तो इस स्थिति में कई बार श्रोता किसी भी सूचना को ठीक से ग्रहण नहीं कर पाता तथा आवश्यक संप्रेष्य पर ध्यान कंद्रित नहीं कर पाता। इसके विपरीप प्रभावी संप्रेषण के लिए जरूरी है कि श्रोता को यथासंभव सभी सूचनाएँ एक-एक करके धीरे-धीरे प्रदान करे। इससे श्रोता संप्रेष्य को ग्रहण करने में रुचि भी लेगा और आवश्यक संदेश को ग्रहण भी कर सकेगा।
5. भ्रामक संप्रेषण के लिए भौतिक वातावरण भी उत्तरदायी है। जैसे कि भीड़भाड़ वाले वातावरण में सामान्य रूप से परस्पर बातचीत करना और समझना पूर्णत: अंसभव नहीं तो मुश्किल ज़रूर है। इसी प्रकार कई बार उचित प्रकाश व्यवस्था का न होना, अस्पष्ट हस्तलेख, बधिरता, अंधपन आदि भौतिक बाधाएँ सामान्यत: भ्रामक संपेषण के लिए उत्तरदायी हैं। इन समस्त भौतिक बाधाओं का उचित संदेशोपचार कर हम अपने संप्रेषण को प्रभावी बना सकते हैं
6. श्रोता जब संप्रेषक के संप्रेष्य को ध्यानपूर्वक नहीं सुनता तो इससे भी भ्रामकता पनपती है। अत: प्रभावी संप्रेषण की पहली और सर्वप्रमुख आवश्यकता है कि श्रोता संप्रेषक के संदेश को ध्यानपूर्वक सुने। अन्यथा वक्ता की बात श्रोता द्वारा ठीक तरह से न सुनने और समझने के परिणामस्वरूप वह संप्रेषक के प्रति उचित प्रतिक्रिया नहीं कर पाएगा। ऐसी स्थिति में अनेक भ्रामकता की स्थितियाँ बन सकी हैं।

संक्षेप में, भ्रामक संप्रेषण और प्रभावी संप्रेषण में अंतर को देखते हुए अपने संप्रेषण को प्रभावी बनाने के लिए जरूरी है कि संप्रेषक को संप्रेषण की तमाम बाधाओं को यथासंभव दूर कर देना चाहिए। वास्तव में, "वास्तविक संदेश वही होता है जो कि संपूर्ण बाधाओं को पार कर श्रोता वर्ग तक अपने उसी रूप में पहुँचते हैं। संचार प्रक्रिया भिन्नता के अनुरूप ही संचार की बाधा के भी अनेक रूप होते हैं जैसे श्रोता को सूचना का प्राप्त न होना, सूचना के चयन में विसंगतियाँ, संचार में दुरूहता एवं अस्पष्टता, अप्रासंगिक सन्देश, संचार मार्ग एवं संचार माध्यमों की यान्त्रिक बाधा, श्रोता द्वारा संचार ग्रहण में दोष, सूचना पुनर्प्रेषित करने में दैहिक बाधा, प्रतिपुष्टि या प्रतिक्रिया में पुनर्प्रेषण का न होना आदि।"[6]

2.10.1 प्रश्नों को स्वयं जाँचना–

प्र. (क) खाली स्थान की पूर्ति उचित शब्द भरकर कीजिए।

(i) प्रभावी संप्रेषण के लिए स्रोत, संदेश और संदेश प्राप्तकर्ता में यथासंभव अधिक से अधिक .....होनी चाहिए।

क. संप्रेषणशीलता ख. सहभागिता ग. परस्पर निर्भरता

(ii) श्रोता हमेशा वही अर्थ ग्रहण नहीं करता जो कि संप्रेषक को .....होता हैं।

क. अभिप्रेत ख. ज्ञात ग. उपचार

(iii) संप्रेषण में जब वक्ता श्रोता की आयु, भाषायी ज्ञान एवं ..... आदि का ध्यान नहीं रखता तो भ्रामकता हो सकती है।

क. कार्य-क्षेत्र ख. लिंग ग. प्रदेश

प्र. (ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में दीजिए।

(i) संप्रेषण के तत्त्व सामान्यतः संप्रेषक, संदेश, संदेश प्राप्तकर्त्ता माने जाते हैं।

(ii) संप्रेषण से राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को भी बल मिलता है।

(iii) संप्रेषण निष्प्रभावी हो जाता है यदि संदेश ग्रहण करने वाला उसे अपने मतलब का न समझे तो।

(iv) प्रभावी संप्रेषण के लिए विद्वानों ने 'सात सी' नहीं माने।

(v) संप्रेषण में जरूरी नहीं कि अर्थ स्थानांतरण और बोधगम्यता जरूरी हो।

प्र. (ग) अभ्यास के लिए प्रश्न–

समीक्षात्मक प्रश्न–

(1) संप्रेषण को स्पष्ट करते हुए संप्रेषण की संभावनाओं का विवेचन कीजिए।

(2) प्रभावी संप्रेषण क्या है? प्रभावी संप्रेषण की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

(3) संप्रेषण में भ्रामक संप्रेषण क्या है? यह प्रभावी संप्रेषण से किस प्रकार भिन्न है।

(4) संप्रेषण प्रक्रिया को बताते हुए भ्रामक संप्रेषण और प्रभावी संप्रेषण में अंतर बताइए।

संदर्भ

1. *जनमाध्यम संप्रेषण और विकास*, देवेंद्र इस्सर, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, कृष्णानगर, दिल्ली, सं. 1989, पृ. 79
2. *संप्रेषण: चिंतन और दक्षता*, डॉ. मंजु मुकुल, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली, सं.- 2017, पृ. 47
3. *मानव संचार शास्त्र*, डॉ. श्रीकांत सिंह, प्रिया पुस्तक सदन, दिल्ली, सं.- 2013, पृ.- 85
4. *सोशल मीडिया*, डॉ. सुशील त्रिवेदी, एकता प्रकाशन, दिल्ली, सं.- 2012, पृ.- 8-9
5. *समकालीन संचार सिद्धांत*, ले. सुस्मिता बाला, सं. अम्बरीष सक्सेना, डी.पी.एस. पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, सं. 2007, पृ.- 51-52
6. *मानव संचारशास्त्र*, डॉ. श्रीकांत सिंह, प्रिया पुस्तक सदन, दिल्ली, सं. 2013, पृ.-96

'संप्रेषण के विभिन्न माध्यम'

(एकालाप, संवाद, सामूहिक चर्चा, कम्प्यूटर-इटंरनेट, ई-मेल, ब्लॉग, वेबसाइट)

डॉ. अनिल कुमार
स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली

1.1 प्रस्तावना

मानव समाज के लिए संप्रेषण का बड़ा महत्त्व है। संप्रेषण का सामान्य अर्थ है–वक्ता जो भावाभिव्यक्ति करना चाहता है वह श्रोता तक ठीक उसी रूप में पहुँचे। अपने भावों/ विचारों को इस कौशल से प्रस्तुत करना कि हम जो कहना/ समझाना चाहते हैं, सामने वाला उसका वही भाव समझे। इससे संप्रेषण में एक तरह की संवादिता निहित रहती है। यह तात्कालिक विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था एवं वर्गों तथा एक संदर्भ वर्ग से दूसरे संदर्भ वर्ग, एक उप-संस्कृति से अन्य उप-संस्कृति वर्ग द्वारा प्रभावित होता है।[1] इस तरह मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को अन्यों तक पहुँचाने के लिए एकालाप, संवाद, सामूहिक चर्चा और आज सूचना-क्रांति के युग में इंटरनेट, ई-मेल, ब्लॉग, वेबसाइट आदि द्वारा संप्रेषण की प्रक्रिया को क्रियान्वित करता है। आज सूचना एवं तकनीकी के विकास ने संप्रेषण के क्षेत्र में क्रांति कर दी है। कुल मिलाकर वर्तमान युग में संप्रेषण का महत्त्व निर्विवाद रूप से महसूस किया जा रहा है। इसलिए संप्रेषण के विभिन्न माध्यमों के विषय में जानना अत्यावश्यक है। ताकि संप्रेषण हेतु इन माध्यमों का समुचित एवं प्रभावी प्रयोग किया जा सके।

प्रस्तुत अध्ययन सामग्री में आप संप्रेषण के विभिन्न माध्यमों के बारे में पढ़ेंगे।

1.2 अधिगम का उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर छात्र निम्नलिखित कार्य कर सकने में सक्षम हो सकेंगे-

1. संप्रेषण के विभन्न माध्यमों, उनके महत्त्व एवं विशेषताओं को जान जाएँगे।
2. संप्रेषण की प्रक्रिया में संप्रेषण माध्यमों–एकालाप, संवाद, सामूहिक चर्चा, इंटरनेट, ई-मेल, ब्लॉग और वेबसाइट आदि की अवधारणा और महत्त्व से अवगत हो सकेंगे।
3. संप्रेषण प्रक्रिया में परंपरागत एवं तकनीकी माध्यमों एवं उनके प्रभावकारी प्रयोग के विषय में जान जाएँगे।
4. संप्रेषण माध्यमों पर चर्चा-परिचर्चा एवं इन पर अपनी राय दे सकेंगे।

1.3 संप्रेषण के विभिन्न माध्यम

संप्रेषण भावाभिव्यक्ति संबंधी भाषा पर आधारित एक सचेतन प्रक्रिया है। इसमें बल इस बात पर दिया जाता है कि वक्ता जो कहना चाहता है, श्रोता तक वह बात ठीक उसी रूप में पहुँचे। संप्रेषण का अंग्रेजी

पर्याय 'कम्युनिकेशन' है, जिसकी व्युत्पत्ति लैटिन के 'केम्युनिस' शब्द से हुई है। इस केम्युनिस शब्द का अर्थ है–संयुक्त या सांझा। अतः संप्रेषण की प्रक्रिया में में वक्ता और श्रोता में समानुभूति एवं भागीदारी का होना आवश्यक है।

माध्यम और परिस्थिति के आधार पर यदि हम गौर करें तो संप्रेषण के कई भेद प्रकट होते हैं। माध्यम के आधार पर–मौखिक, सांकेतिक और लिखित भेद दिखाई देते हैं तो परिस्थिति के अनुसार–स्वाभाविक (जिसमें बिना किसी यंत्र आदि के मौखिक या सांकेतिक रूप से विचार का आदान-प्रदान होता है।) यांत्रिक (जिसमें तकनीकी आधारित यंत्र फोन, दूरदर्शन आदि सम्मिलित रहते) हैं। वास्तव में, संप्रेषण माध्यम ही संचार प्रक्रिया को क्रियान्वित करते हैं। आज संप्रेषण के माध्यमों के अंतर्गत प्रेषक (संप्रेषक) और प्रापक (संदेश गृहीता) की दृष्टि से–एकालाप, संवाद, सामूहिक चर्चा जैसे परम्परागत माध्यमों के साथ-साथ तकनीकी विकास के साथ इंटरनेट, ई-मेल, ब्लॉग और वेबसाइट आदि अनेक माध्यम प्रभावी संप्रेषण माध्यम के रूप में उभरकर आए हैं।

संप्रेषण-प्रक्रिया में माध्यम का स्थान बड़ा महत्त्वपूर्ण है। यह माध्यम ही है जो संप्रेषणकर्त्ता और संप्रेषणगृहीता दोनों के बीच सेतु बनता है। इस माध्यम के द्वारा ही संदेश श्रोता तक और श्रोता की प्रतिक्रिया को संदेश सम्प्रेषक तक पहुँचाता है। संप्रेषण की इसी प्रक्रिया के पूर्ण होने के फलस्वरूप समाज में समाजोपयोगी विचार एवं व्यवहार का निर्माण किया जाता है। इसी तथ्य को देखते हुए कहा जा सकता है कि "ज्ञान, विज्ञान एवं तकनीक के तीव्र विकास के इस युग में संप्रेषण की महत्ता स्वयं सिद्ध है। आज इस बात की और भी आवश्यकता है कि संप्रेषण को इतना सरल, सुलभ एवं सुगम बनाया जाए कि त्वरित गति से विकसित हो रहे ज्ञान-विज्ञान के दीपक, विचारों, भावनाओं, अनुभवों तथा अपेक्षाओं की लौ में मानव जाति का मार्गदर्शन करते रहें। कोई भी ज्ञान, विज्ञान या तकनीक अपने आप में अर्थहीन है, यदि सही ढंग से, सही समय पर, और सही समुदाय के बीच उसका संप्रेषण शीघ्रता से करके उसका लाभ न उठाया जाए। जो भी समाज संप्रेषण में पीछे रह जाएगा, वह विकास की प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाएगा।"[2] वस्तुतः संप्रेषण प्रक्रिया द्वारा एक व्यक्ति, किसी भी माध्यम के प्रयोग द्वारा, दूसरों के साथ अपना ज्ञान, विचार, सूचनाएँ, भावनाएँ आदि सब कुछ जिसमें सम्मिलित रहता है, साझा करता है ताकि प्रत्येक को सम्यक् संदेश का अर्थ, लक्ष्य व प्रयोग के विषय में संयुक्त ज्ञान प्राप्त हो जाए। यहाँ एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि संप्रेषण एक बहुआयामी प्रक्रिया है, इसलिए इसके कुछ निश्चित नियम और माध्यम निर्धारित नहीं किए जा सकते। संप्रेषण की पूरी प्रक्रिया वक्ता और श्रोता के मध्य संप्रेषित संदेश के आस-पास घूमती है। वक्ता जब एकालाप से संभाषण तक का सफर तय कर लेता है तो तभी उसका संप्रेष्य संप्रेषण का रूप ग्रहण कर पाता है।

यहाँ सहज ही एक जिज्ञासा इस सवाल के रूप में उठती है कि संप्रेषण के कौन-कौन से माध्यम हैं। यहाँ माध्यम का अर्थ है–साधन, उपाय, आधार यानी जिसके द्वारा हम अपने कार्य को अंजाम दें आदि। यानी माध्यम वह साधन है जिसकी सहायता से कोई कार्य सिद्ध होता है। यहाँ माध्यम से अभिप्राय है–दो बिंदुओं को जोड़ने वाला। सूचना प्रदान करने वाले रेडियो, पुस्तक, लेख, पत्र-पत्रिकाएँ, दूरदर्शन, मौखिक शब्द, चित्र, भाव-भंगिमाएँ आदि सभी माध्यम किसी न किसी रूप में संप्रेषण की श्रेणी में आते हैं। परन्तु प्रत्येक माध्यम, प्रत्येक संप्रेषक, प्रत्येक श्रोता, प्रत्येक समय अथवा प्रत्येक उद्देश्य के लिए समान रूप से उपयोगी नहीं हो सकता। उदाहरणार्थ एक पढ़ा-लिखा संप्रेषक निरक्षर श्रोता तक अपना संप्रेषण या संदेश पहुँचाने के लिए

पत्र-पत्रिका को माध्यम नहीं बना सकता।"[3] संप्रेषण के लिए संदेश एवं सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए संचार माध्यमों का समाज से गहरा एवं निकट संबंध है। इससे समाज में जन सामान्य की रुचि एवं हितों को स्पष्ट किया जाता है। संप्रेषण समाज के 'मन' और 'मत' दोनों को परिवर्तित व परिष्कृत करने की क्षमता रखता है। यही कारण है कि समाज पर संचार माध्यमों का अनादिकाल से प्रभाव रहा है। समाज में सूचना एवं संदेश के संप्रेषण माध्यम समाज की विकास प्रक्रिया से ही जुड़े हुए हैं।

वास्तव में, कुछ प्राचीन वर्षों में तकनीकी उन्नति के परिणामस्वरूप, संप्रेषण के अनेक नवीन साधन अस्तित्व में आए हैं, जिन्होंने महत्त्वपूर्ण विधियों द्वारा संप्रेषण प्रक्रिया को प्रभावित किया है। बीसवीं शताब्दी के अन्त में दूरभाष ने, वैयक्तिक पारस्परिक संप्रेषण को अधिकांश सीमा तक कम कर दिया था। 1960 में फोटोस्टेट मशीन ने, कार्बन पेपर के प्रयोग को लगभग समाप्त कर दिया। तत्पश्चात् 1980 के पश्चात् सूचना एवं संप्रेषण, संगठनों के प्राचीन संप्रेषण रूपों का स्थान नवीन इलेक्ट्रॉनिक तकनीकी यन्त्रों ने ले लिया। पेजर, कान्फ्रैंसिंग, ई-मेल, सेलूलर फोन आदि नवीन संप्रेषण साधनों का जन्म हुआ, जिन्होंनें संप्रेषण की दुनिया को पूर्णत: परिवर्तित कर दिया है।"[4]

यहाँ कुछ विशिष्ट संप्रेषण माध्यमों को संक्षेप में विभिन्न संदर्भों में देखेंगे।

1.3.1 एकालाप

संप्रेषण का एक विशिष्ट माध्यम है- एकालाप या स्वगत सम्प्रेषण। कोई भी भाव या विचार सर्वप्रथम व्यक्ति के मन मस्तिष्क में ही उठता है। मन ही मन वह अपने इस विचार पर चिंतन-अनुचिंतन कर किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है। यही एकालाप है। अंग्रेजी में इसे 'मॉनोलॉग' कहते हैं। यहाँ व्यक्ति स्वयं ही वक्ता और श्रोता, दूसरे शब्दों में सम्बोधक और सम्बोधित होता है। नाटक या सिनेमा के संदर्भ में यदि हम देखें तो पात्र की वह स्थिति जब व्यक्ति अपने स्वागत भाषण के माध्यम से पूरी कथा या स्थिति को उद्घाटित करता है।

एकालाप में व्यक्ति अपने आपसे बात करता है, एक तरह से वह अपने मन में उठ रहे भावों और विचारों के आधार पर किसी निर्णय पर पहुँचता है। संप्रेषण के इस माध्यम में सम्प्रेषणकर्त्ता और संप्रेषणग्रहीता दोनों एक ही होता है। यह मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति चिंतन-मनन करता है। संप्रेषण के इस माध्यम के अंतर्गत सम्प्रेषक यानी वक्ता अपने आपको गढ़ रहा होता है। जैसे कि एक व्यक्ति सोचता है कि वह कल अपने बेटे के स्कूल जाएगा और उसके कक्षा अध्यापक/अध्यापिका से मिलकर उसकी प्रगति (Progress) का पता लगाएगा। परंतु उसे कुछ देर बाद ध्यान आता है कि कल तो उसे पहले अपने ऑफिस जाना जरूरी है। बेटे के स्कूल में, मैं अगले दिन जा सकता हूँ परंतु ऑफिस का काम नहीं टाला जा सकता।

एकालाप की प्रक्रिया में एकलाप के दो रूप या भेद कहे जा सकते हैं-स्थिर एवं गत्यात्मक। स्थिर एकालाप में वक्ता किसी एक विचार बिंदु तक ही सीमित रहता है। गत्यात्मक एकालाप में वक्ता स्वयं से ही सवाल-जवाब करने लगता है। इस तरह की संप्रेषण प्रक्रिया एक अकेले व्यक्ति के मस्तिष्क में हमेशा चलती रहती है। मस्तिष्क में सतत् रूप से गतिमान चिंतन-मनन अपने आपसे बातचीत एकालाप संप्रेषण ही है। इस संबंध में डॉ. अमरसिंह वधान का मत है कि "कई बार व्यक्ति के जीवन में ऐसे अवसर भी आते हैं जब वह अकेला अपने आप में किसी विषय पर मनन करता है, तर्क-वितर्क करता है। ऐसी स्थिति में भी संप्रेषण की पूर्ण प्रक्रिया घटित होती है और इसे अंत:व्यक्ति संप्रेषण "एकालाप" कहते हैं।"[5] व्यक्ति के मस्तिष्क में उठ रहे संदेश पर उसे कैसी प्रतिक्रिया प्रकट करनी है, यह उसी क्षण प्राप्त प्रत्युत्तर के आधार पर, वह

निर्धारित करता है। अत: इस तरह के संप्रेषण माध्यम को एकालाप कहते हैं, जहाँ व्यक्ति स्वयं को ही कोई संदेश दे रहा होता है। जब हम किसी विषय पर चिंतन-मनन कर रहे होते हैं, या पढ़ रहे होते हैं तो एकालाप की प्रक्रिया स्वत: प्रारंभ हो जाती है।

1.3.2 संवाद

संप्रेषण माध्यमों में एकालाप से अगला चरण है- 'संवाद'। संवाद यानी दो या दो से अधिक लोगों की आपस में बातचीत की क्रिया। इसमें वक्ता और श्रोता दोनों अलग-अलग प्रत्यक्ष रूप से एक-दूसरे के सामने होते हैं। संवाद का अंग्रेजी पर्याय है - डायलॉग, जिसका अभिप्राय है- दो या दो से अधिक लोगों की परस्पर बातचीत। संवाद या बातचीत की भाषा सहज, सरल, स्वाभाविक, उत्साह और उत्सुकतावर्धक होनी चाहिए। बातचीत में वाक्य छोटे-छोटे और चुस्त होने चाहिए। इन गुणों के अभाव में संवाद नीरस और ऊबाऊ हो जाएगा। संप्रेषण की प्रक्रिया में संवाद से आशय है, दो या दो से अधिक व्यक्तियों या समूहों के मध्य मौखिक बातचीत। इस प्रकार की स्थिति को वार्त्तालाप, संभाषण या कथोपकथन आदि भी कहा जाता है। संवाद में वक्ता संप्रेषण प्रक्रिया का प्रारंभिक बिंदु है, जहाँ से इस प्रक्रिया की शुरुआत होती है। और श्रोता की प्रतिक्रिया इसे विकास प्रदान करती है।

प्रतिपाद्य एवं शैली की दृष्टि से संवाद के दो-दो भेद दिखाई देते हैं। **प्रतिपाद्य की दृष्टि से स्थिर एवं गत्यात्मक संवाद।** स्थिर संवाद में वक्ता और श्रोता की स्थिति स्थिर रहती है। मुख्य भूमिका वक्ता की रहती है। श्रोता बस सुनता रहता है जैसे कक्षा में अध्यापक का पढ़ाना या फिर किसी सभा आदि में किसी नेता का भाषण। इसके विपरीत गत्यात्मक संवाद में वक्ता और श्रोता की स्थिति क्रमश: वक्ता और श्रोता और श्रोता और वक्ता के रूप में परस्पर बदलती रहती है।

शैली की दृष्टि से संवाद के **मौखिक** और **लिखित** दो रूप दिखाई देते हैं। मौखिक संवाद में मौखिक एवं सांकेतिक रूप से भावाभिव्यक्ति की जाती है। इस तरह के संवाद में एक तरह की अनौपचारिकता विद्यमान रहती है। जबकि लिखित संवाद में एक तरह की औपचारिकता रहती है। यह ज्यादा स्थायी एवं स्पष्ट संवाद होता है।

समग्रत: संप्रेषण के संवाद माध्यम के लाभ यह है चूँकि इसके अंतर्गत भावों एवं विचारों का आदान-प्रदान एक-दूसरे के आमने-सामने सामान्यत: बोलकर व आंगिक हाव-भाव के माध्यम से किया जाता है। अत: संप्रेषण का यह सबसे सस्ता और प्रचलित माध्यम है। संप्रेषण के इस माध्यम के अंतर्गत संप्रेषणकर्त्ता कभी वक्ता तो कभी श्रोता की भूमिका में होता है। मुख्य बात इसमें यह है कि संप्रेषणकर्त्ता से श्रोता तुरंत सूचना से संबंधित जानकारी प्राप्त कर अपनी जिज्ञासा एवं शंकाओं का समाधान पा सकता है। वस्तुत: जब, दो व्यक्ति आपस में बात कर रहे होते हैं तो वे दोनों अपने-अपने अनुभवों के आधार पर प्रतिक्रिया प्रकट कर रहे होते हैं। इसीलिए मीडिया विशेषज्ञ विलबर श्रेम (Wilbur S. Chramm) अपनी पुस्तक Effects of Mass Communication में ऐसी स्थिति को 'अनुभव-क्षेत्र- कहते हैं। उनके अनुसार परिवेश, ज्ञान, आस्था तथा अन्य जानकारियाँ संदेश के प्राप्तकर्ता का अनुभव-क्षेत्र निर्मित करते हैं।"[6] संप्रेषण की संवाद-प्रक्रिया में व्यक्ति अपने संदेश द्वारा समाज की मन:स्थिति का ही निर्माण करने का कार्य करता है। उदाहरण के लिए किन्हीं दो व्यक्तियों के मध्य विचार विनिमय, कक्षा में अध्यापक और छात्रों के मध्य बातचीत।

1.3.3 सामूहिक चर्चा

संप्रेषण के एकालाप व संवाद का ही और अधिक विकसित रूप है- सामूहिक चर्चा। इसके अंतर्गत दो से अधिक व्यक्ति जब सामूहिक रूप से किसी विशिष्ट विषय पर सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं, तो इसे ही सामूहिक चर्चा कहा जाता है। सामान्यत: समूह के सभी सदस्यों के एक समान उद्देश्य होते हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए वे सभी मिलकर प्रयास करते हैं। वास्तव में किसी संगठन (व्यावसायिक) में वर्तमान समस्याओं और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए मौखिक चर्चा करके किसी निष्कर्ष पर पहुँचकर निर्णय लिया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में यह एक प्रचलित शिक्षा विधि है, जिसमें छात्रों को स्वत: पठन-पाठन एवं समस्याओं पर सामूहिक रूप से सोचने-विचारने का अवसर प्रदान किया जाता है। इससे छात्रों में सीखने एवं किसी विषय पर अपनी बात रखने की आदत विकसित होती है। इसके अतिरिक्त औद्योगिक इकाइयों में कार्य करने और कार्यक्षेत्र में आने वाली बाधाओं के निराकरण में मदद मिलती हैं। इस सामूहिक चर्चा के द्वारा कार्यक्षेत्र संबंधी बाधाओं के निराकरण के साथ-साथ उत्पादन लक्ष्य को भी आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। संप्रेषण के इस माध्यम के अंतर्गत एक परिवार के सदस्यों का आपसी विचार विनिमय, कक्षा में विद्यार्थी और शिक्षक का परस्पर विचार-विमर्श या फिर एक संगठन के कर्मचारी जब इकट्ठे होकर आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं आदि सामूहिक चर्चा के उदाहरण हैं। सामूहिक चर्चा में समूह के (लगभग) सभी सदस्य सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। अत: चर्चा के माध्यम से समूह के समक्ष रखी गई समस्या के तमाम पहलुओं पर बात की जाती है और एक सर्वमान्य और प्रभावशाली निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है।

संप्रेषण के सामूहिक चर्चा माध्यम विषय की स्पष्टता के लिए सामूहिक-चर्चा की सफलता की शर्तें, उद्देश्य, आयोजन की कुछ पूर्व शर्तें, सामूहिक चर्चा के सदस्यों से अपेक्षित व्यवहार एवं सामूहिक चर्चा के गुण-दोष आदि पर दृष्टिपात करना यहाँ आवश्यक है।

सामूहिक चर्चा की सफलता की शर्तें- सामूहिक चर्चा की सफलता के लिए सर्वप्रथम समूह के सदस्यों को चर्चा के उद्देश्य स्पष्ट हो। इससे समूह के सदस्य उन उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास करेंगे। इसके अतिरिक्त समूह के सदस्यों का व्यवहार सकारात्मक होना चाहिए अन्यथा निष्कर्ष पर पहुँचने और निर्णय लेने में बाधा पहुँचेगी। समूह के सदस्य निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति के मार्ग के तमाम प्रसंगों पर भलीभाँति विचार-विनिमय करते हैं। इसके लिए सभी सदस्यों सक्रिय रूप से अन्य सदस्यों की बात को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए और बिना पूर्वाग्रह एवं बिना किसी संकोच के अपनी बात रखनी चाहिए। सामूहिक चर्चा के समय सभी सदस्यों में परस्पर सहृदयता एवं सहनशीलता से अपने विचार रखने चाहिए। सामूहिक चर्चा के दौरान सभी सदस्यों को चाहिए कि वे प्रत्येक सदस्य के विचारों को सुने और आलोचनात्मक रूप से उचित ढंग से प्रोत्साहित एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करते हुए, उचित निष्कर्ष लें। इसके साथ ही सामूहिक चर्चा के दौरान सदस्यों से यह भी अपेक्षित है कि वे अपनी बात रखते समय भाषायी शुद्धता (व्याकरण सम्मत भाषा हो, भाषा में द्विअर्थिता, अस्पष्टता और अशुद्धता न हो) और संक्षिप्तता का ध्यान रखें।

सामूहिक चर्चा के उद्देश्य- सामूहिक चर्चा का उद्देश्य होता है समूह के सदस्यों के विचारों के आदान-प्रदान के द्वारा संगठन के लक्ष्यों की प्राप्ति के मार्ग में आ रही बाधाओं का निराकरण। चूंकि सामूहिक चर्चा में समूह के सदस्य एक तरह से विषय-विशेषज्ञ होते हैं। अत: ऐसे व्यक्तियों का परस्पर बातचीत के

बाद निर्णय लेना रचनात्मक परिणाम प्रदान करता है। सामूहिक चर्चा के आयोजन के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना भी अत्यावश्यक है, जैसे- सामूहिक चर्चा के लिए समूह के लोगों को सूचित करना कि किस दिन, कहाँ पर और किस समय पर किस उद्देश्य से मिलकर उन्हें सामूहिक चर्चा करनी है। इसके साथ ही सामूहिक चर्चा की पूर्व पृष्ठभूमि के रूप में सदस्यों के समक्ष लिखित रूप में इससे पूर्व की बैठक की कार्यवाही और निर्णयों की जानकारी होनी चाहिए ताकि समय की बचत हो और उचित निष्कर्ष पर पहुँचते हुए शीघ्रातिशीघ्र निर्णय लिए/लिया जा सके।

प्रभावी सामूहिक चर्चा के लिए समूह के सदस्यों से अपेक्षा की जाती है कि सामूहिक चर्चा में सभी सदस्य सकारात्मक एवं क्रियात्मक रूप से भाग लें और समूह के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उचित निर्णय लेने में यथासंभव अपना योगदान, अपनी वैयक्तिक आकांक्षाओं को छोड़कर प्रदान करें।

संप्रेषण के सामूहिक चर्चा माध्यम के गुण ये हैं कि इसमें किसी विशिष्ट विषय पर निर्णय विस्तार से चर्चा-परिचर्चा के बाद उचित निर्णय आसानी से लिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त चूँकि विषय की गम्भीरता को देखते हुए सभी अपनी-अपनी राय रखते हैं, अत: उचित निर्णय लेने में आसानी रहती है। संप्रेषण की इस विधि का एक प्रमुख लाभ यह है कि समूह के सभी सदस्यों को सोचने-समझने, वैचारिक आदान-प्रदान और संवाद कायम कर निर्णय लेने हेतु प्रेरित करने का एक प्रभावशाली तरीका है। इससे समूह के सदस्य एक-दूसरे से सीख भी सकते हैं और वे दूसरों को सीखा भी सकते हैं। लेकिन जब समूह के सभी सदस्य मन से सामूहिक चर्चा में भाग न लें तो बहुत संभव है कि कोई गलत फैंसला भी लिया जा सकता है। यह इस संप्रेषण माध्यम का एक बड़ा दोष कहा जाएगा। इसमें समय भी अधिक लगता है। कई बार किसी विषय पर आम सहमति न बनने के कारण सदस्यों को समझौतेवश निर्णय लेना पड़ता है। इसके अतिरिक्त इसमें किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत विचार का पता नहीं चलता क्योंकि निर्णय सारे समूह का होता है। अत: कई बार व्यक्तिगत राय/मत दबकर रह जाता है।

1.3.4 प्रश्नों की स्वयं जाँच करना

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर केवल 'हाँ' या 'ना' में दीजिए–

(I) आज सूचना एवं तकनीकी युग में संप्रेषण का महत्त्व निर्विवाद है। (.....)

(II) संप्रेषण की प्रक्रिया में माध्यम सेतु का कार्य करता है। (.....)

(III) संप्रेषण प्रक्रिया में प्रत्येक माध्यम, प्रत्येक सम्प्रेषक, प्रत्येक श्रोता और प्रत्येक उद्देश्य के लिए समान रूप से उपयोगी हो सकता। (.....)

प्रश्न 2. खाली स्थान पर उचित शब्द भरिए–

(I) संप्रेषण के एकालाप माध्यम में व्यक्ति .....आपसे बात करता है।

(II) ..... में संप्रेषणकर्त्ता और संप्रेषणग्रहीता दोनों एक ही होता है।

(III) संप्रेषण का सबसे सस्ता और प्रचलित माध्यम ..... है।

(IV) दो व्यक्तियों के मध्य विचार-विनिमय, संप्रेषण के ..... माध्यम का उदाहरण है।

(V) संप्रेषण के ..... माध्यम के अंतर्गत वक्ता कभी श्रोता तो कभी वक्ता की भूमिका में रहता है।

(VI) संप्रेषण के ..... माध्यम में दो से अधिक व्यक्ति विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

1.4 इंटरनेट

संप्रेषण के परम्परागत माध्यम-एकालाप, संवाद, सामूहिक चर्चा के साथ तकनीकी आधारित इंटरनेट, ई-मेल, वेबसाइट आदि भी बड़े महत्त्वपूर्ण संप्रेषण माध्यम हैं।

आज सूचना एवं सम्प्रेषण का सर्वाधिक क्रांतिकारी माध्यम है– कम्प्यूटर-इंटरनेट। इंटरनेट अलग-अलग कम्प्यूटर नेटवर्कों का एक नेटवर्क है जिसमें हर नेटवर्क एक-दूसरे से जुड़ा होता है और जो आँकड़ों का आदान-प्रदान करता है। इंटरनेट का नाम ही है– 'इंटरनेशनल नेटवर्क'। यह विश्व की सर्वाधिक कारगर सूचना प्रणाली है। इसका अपना अलग ही मायावी/जादुई संसार है। इसका परस्पर जुड़े कम्प्यूटरों का विश्वव्यापी समुदाय होने के करण ही इसे महाजाल यानी इंटरनेट कहा जाता है। इसी से आज सारा विश्व सिमटकर लैपटॉप के रूप में मनुष्य के घुटनों पर आ गया है। आज इंटरनेट विराट स्तर पर मानवीय संबंधों एवं संस्कृतियों को जोड़ने के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान और व्यापार का भी एक सहज, सशक्त माध्यम अपनी संप्रेषणीयता के कारण बन रहा है।

'इंटरनेट' के उद्‌भव और विकास की पृष्ठभूमि अमेरिकी रक्षा विभाग, पेंटागन से जुड़ी हुई है। कम्प्यूटर की विकास यात्रा में पहले प्रत्येक कम्प्यूटर का स्वतंत्र अस्तित्व एवं प्रयोग होता था, परंतु समय के साथ कम्प्यूटर की सामग्री को दूसरे कम्प्यूटर पर आदान-प्रदान, प्रसंस्करण, संग्रहण एवं सूचना प्रेषण आदि हेतु भेजने की आवश्कता महसूस हुई। दूसरे विश्वयुद्ध के पश्चात् रूस और अमेरिका में महाशक्ति बनने की परस्पर होड़ लग गई। जब सन् 1957 में सोवियत संघ ने स्पूतनिक-1 उपग्रह आकाश में सफलतापूर्वक भेजा तो अमेरिका की बेचैनी बढ़ गई। और परिणामस्वरूप सन् 1958 ई. में अमेरिका ने अपनी सेना रक्षा संबंधी एक उन्नत तंत्र के विकास हेतु उच्च स्तर पर रक्षा अनुसंधान प्रकल्प संस्थान (Defence Advance Research Project Agency-DARPA) की स्थापना की। इसका प्राथमिक लक्ष्य कम्प्यूटरों के तंत्रज्ञान में अनुसंधान करना था। इसका उद्देश्य अंतरिक्ष या उपग्रह से होने वाले संभावित हमले से बचने के लिए प्रक्षेपणास्त्रों का विकास करना था। इस संस्थान ने अपना उपग्रह तैयार कर रूस को तकनीकी क्षेत्र में करारा जवाब दिया। इसी समय अमेरीका ने कम्प्यूटर तंत्रज्ञान में तरक्की हेतु जोसेफ लिक्लिंडर के नेतृत्व में सूचना प्रसंस्करण तंत्रज्ञान संस्थान (IPTO- Information Processing Technique Office) स्थापित किया गया और इसे इंटरनेट विकास का जिम्मा सौंपा गया। लिक्लिंडर ने लारैंस की सहायता से कम्प्यूटरों से सूचनाओं के आदान-प्रदान की योजना बनाई। उसने एक ऐसा विशिष्ट कम्प्यूटर तंत्र बनाया जो संवाद, संदेश, सूचना का वहन, प्रेषण एवं प्रसंस्करण करने की क्षमता रखता था। इसका सफल प्रयोग अर्पानेट (ARPAent) के जरिए अक्टूबर, 1969 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स और स्टेनफोर्ड अनुसंधान संस्थान के बीच सूचना प्रेषण से किया गया और इंटरनेट का आरंभ हुआ।

इस संबंध में यहाँ एक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इंटरनेट का उद्‌भव और विकास भले ही अमेरिका में रूस के संभाव्य सैनिक हमले और हानि के समय भी संपर्क बनाए रखने की सतर्कता से हुआ हो, परंतु

बाद में उसका प्रयोग सैनिक क्षेत्र के साथ-साथ विज्ञान, अभियांत्रिकी और ग्रंथालय आदि में करना आवश्यक और उचित समझा गया। और समय के साथ आज यह संपर्क साधनों का रचनात्मक विस्तार बनकर सार्वजनिक और सार्वत्रिक हो गया है।

इंटरनेट की वर्तमान विकास-यात्रा के विषय में डॉ. अजय कुमार सिंह उल्लेख करते हैं- "इंटरनेट का आरम्भ 1979 में एक शैक्षिक नेटवर्क 'यूजनेट-न्यूज' के रूप में हुआ। इसका पहला सार्वजनिक विस्तार सरकारी नियन्त्रण में हुआ। आठवें दशक के उत्तरार्द्ध में अमेरिकी सरकार ने 'नेशनल साइन्स फाउण्डेशन' के माध्यम से पाँच सुपर कम्प्यूटर केन्द्रों की स्थापना की जो इंटरनेट के प्रमुख संयोजक बिन्दु बने और इनके द्वारा कई विश्वविद्यालयों और अनुसन्धान प्रयोगशालाओं को आपस में जोड़ा गया। अमेरिका में ही इस प्रणाली ने विकसित होकर सन् 1990 तक अपना वर्तमान स्वरूप ग्रहण किया। इस समय इंटरनेट पर पूरे विश्व में 10 लाख से भी अधिक वेबसाइट किसी-न-किसी माध्यम से परस्पर जुड़े हुए हैं।"[7]

1.5 ई-मेल

इंटरनेट पर आधारित संप्रेषण का एक विशिष्ट माध्यम है- ई-मेल। ई-मेल यानी इलेक्ट्रॉनिक मेल से आशय है इंटरनेट के द्वारा किसी कम्प्यूटर या अन्य उपकरण से संदेश भेजने का तरीका। इसके लिए एक ई-मेल पते की जरूरत होती है, जो यूजर-नेम और डोमेन नेम से मिलकर बनता है। "सन् 1972 ई. में ई-मेल का अर्पानेट से प्रचलन हुआ। इसने @ चिह्न को प्रचलित कर सर्वप्रयोगी बनाया। इससे टेलिनेट की व्यवस्था का विस्तार हुआ। इससे सुदूर होने वाले संगणक से संपर्क (Log in) संभव हुआ। इस व्यवस्था से किसी बात पर आम राय (Request for Comments-RFC) की प्रक्रिया आरंभ होकर समाज महाजाल का (Social Network) प्रचार, प्रसार एवं विस्तार संभव हुआ। इसी का नतीजा है आज के फेसबुक, आर्कुट, ट्विटर, ब्लॉग्ज, आदि। भले वे पवरर्ती काल में आम बने।"[8]

वास्तव में, ई-मेल इंटरनेट आधारित मेल या संदेश है। जिसमें टेक्सट मैसेज का आदान-प्रदान करने के लिए तथा फाइल अटेचमेंट हेतु इंटरनेट को कनेक्ट किया जाता है। अब तो ई-मेल पर टेक्सट मैसेज ही नहीं अपितु फोटो आदि भी भेजा जा सकता है। आज संप्रेषण माध्यम के रूप में ई-मेल भी एक सशक्त माध्यम बनकर उभर रहा है। किसी भी संगठन में अधिकारी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को ई-मेल के द्वारा संदेश सम्प्रेषित कर सकता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा जगत् में शिक्षक या ट्यूटर आदि पाठ्य-सामग्री या पाठ्य-सामग्री से संबंधित सामग्री अपने विद्यार्थियों को आसानी से और शीघ्रता से भेज सकता है। संक्षेप में, संप्रेषण माध्यम के रूप में ई-मेल एक ऐसा विशिष्ट माध्यम है जिसमें कोई भी सूचना, संदेश, पत्र या फोटो आदि दुनिया के किसी भी कोने में तत्काल पहुँचाया जा सकता है। और हाँ, इसके लिए खर्चा लगभग नहीं के बराबर आता है। इससे ई-मेल द्वारा संप्रेषण कायम करने में समय और धन दोनों की ही बचत होती है। बस, शर्त यह है कि आपको थोड़ा कम्प्यूटर और उसके तकनीकी प्रयोग का ज्ञान हो।

1.6 ब्लॉग

आज सूचना तकनीकी के युग में भावाभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है-'ब्लॉग'। पहले लोग डायरी लिखते थे और सामान्यत: उसे वे औरों से छिपाकर रखते थे। परंतु आज ब्लॉग इंटरनेट पर लिखी गई एक

विशिष्ट डायरी ही है जिसे दूसरे भी पढ़ सकते हैं। डायरी की भाँति इसमें गोपनीयता नहीं होती। इसीलिए इसे ऐसी डायरी कहा जा सकता है जिसे लेखक सबसे साझा करना चाहता है। यानी ब्लॉग एक तरह से लेखक की सार्वजनिक डायरी है। आज के व्यस्ततम् जीवन में ब्लॉग के द्वारा व्यक्ति अपनी बातों को दूसरे से शेयर (साझा) करते हैं। इसे विश्वभर में एस.एम.एस. की भाँति तत्काल पढ़ा जा सकता है। "अभिव्यक्ति की बेचैनी ब्लॉगिंग का प्राण तत्त्व है और तात्कालिकता इसकी मूल प्रवृत्ति है। विचारों की सहज अभिव्यक्ति ही ब्लॉग की ताकत है, यही इसकी कमजोरी भी। जो अच्छा लिखते हैं उनके ठिकानों या ब्लॉगों पर स्वत: भीड़ हो जाती है, उनके ब्लॉगों में टिप्पणियों की बहार आ जाती है। ऐसे कई ब्लॉग हीरो ब्लॉगिंग की दुनिया ने दिए हैं जो सिर्फ अपने लेखों, भाषा या रचनात्मकता के लिए ही नहीं तकनीकी मार्ग-दर्शन देने और नए ब्लॉगरों व ब्लॉग परियोजनों को प्रोत्साहित करने के लिए भी जाने जाते हैं।"[9] यही कारण है कि संप्रेषण माध्यम के रूप में ब्लॉगिंग के जरिए कोई भी व्यक्ति अपने भावों, विचारों व अनुभवों को दूसरों तक तुरंत पहुँचा सकता है।

ब्लॉग की शुरुआत ठीक-ठीक कब हुई, इस पर स्पष्ट रूप से कुछ कहना मुश्किल है। फिर भी इस विषय में इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता नाम की पुस्तक में डॉ. अजय कुमार सिंह ने उल्लेख किया है- "ब्लॉग की शुरुआत 1994 में एक युवा अमेरिकन छात्र जस्टिन हॉल ने की। उसने अपने निजी अनुभवों को इंटरनेट वेबसाइट पर लिखकर लोगों के साथ बाँटना शुरू किया। इसके बाद जॉन बारजर ने 1997 में इसे वेब लॉग (Weblog) यानी इंटरनेट डायरी का नाम दिया। बाद में 1999 में पीटर्स मरहॉल्ज ने इसे संक्षिप्त करके वी ब्लॉग कर दिया।"[10] बाद में यह वेब ब्लॉग ही संक्षिप्त होकर केवल 'ब्लॉग' रह गया। इसकी खूबी यह है कि जो कहीं न कहा जा सके उसे आप ब्लॉग में कहिए। अपने मन की बात कहिए और पक्ष या विपक्ष में बेशुमार राय जुटाइए। इसने सूचना का विकेंद्रीकरण कर सूचना के दायरे को बढ़ाया है। ब्लॉग की विशेषता यह है कि "अपनी संरचना में ब्लॉग एक निजी वक्तव्य या निजी अनुभव या निजी विचार सरीखा है लेकिन ये जितना निजी लिखने में है, प्रतिक्रिया और पारस्परिकता में उतना ही सार्वजनिक है।"[11]

1.7 वेबसाइट

आज सूचना एवं संप्रेषण माध्यम के रूप में वेबसाइट भी इंटरनेट पर संप्रेषण का विशाल स्रोत बन गया है। इंटरनेट पर सूचना एवं जानकारियों का अधिकांश अनुप्रयोग वेबसाइट द्वारा ही संचालित होता है। इसने इंटरनेट प्रयोक्ताओं को स्थाई रूप से एक नवीन विश्व बनाने और विकसित करने का अवसर प्रदान किया है। वेबसाइट या वर्ल्ड वाइड वेब (WWW) इंटरनेट प्रयोग करने वाले लोगों के लिए बहुत ही लोकप्रिय साधन है। इस पर व्यक्ति अपनी रुचि अनुसार विभिन्न विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकता है। विश्व के किसी भी देश की कोई भी महत्त्वपूर्ण रिपोर्ट जो इंटरनेट पर उपलब्ध है, वह एक साथ कई वेबसाइटों पर आसानी से प्राप्त की जा सकती है बस, शर्त यह है कि आपका कम्प्यूटर सिस्टम उसे डाउनलोड करने में सक्षम हो।

वेबसाइट के माध्यम से इंटरनेट ने सम्पूर्ण विश्व की एक लघु समुदाय की परिकल्पना को साकार कर दिया है। इंटरनेट के उपभोक्ता आज हर महाद्वीप, हर देश, हर नस्ल, हर धर्म, हर लिंग और हर उम्र के लोग हैं। इस विश्व समुदाय की स्थापना से व्यापार, कारोबार और विज्ञापन के लिए नया क्षेत्र मिला है। इसमें नये-नये ढंग के अवसर हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ आज इंटरनेट का इस्तेमाल अपने उत्पादों के बारे में सूचना व

उनसे संबंधित सेवाएँ देने, अपनी कॉरपोरेट पहचान को कायम करने, अपने ब्रांड नाम के प्रति जागरुकता लाने व उसके प्रति वफादार ग्राहक बनने, ग्राहकों को विभिन्न सेवाएँ देने और बिक्री संबंधी लेन-देन व अनुसंधान के लिए कर रही हैं।

वेबसाइट पर उत्पादकों, निर्यातकों और छोटे कारोबारियों से इंटरनेट से काफी फायदा हो रहा है। कुछ साल पहले तक नेट पर विज्ञापन करना उतना फायदेमंद नहीं था। क्योंकि इसके प्रयोक्ता बहुत कम लोग थे। लेकिन अब स्थिति बहुत बदल गई है। दरअसल, अब नेट पर मौजूदगी कंपनियों के लिए सिर्फ प्रतिष्ठा की बात नहीं बल्कि यह उनकी अनिवार्यता बन गई है। अन्यथा वे प्रतियोगिता की दौड़ में बाजार क्षेत्र से बाहर हो जाएँगी। कंपनियाँ अब अपने उत्पादों के विज्ञापन के लिए वर्ल्ड वाइड वेब को एक वैकल्पिक माध्यम के रूप में अपना रही हैं। वेबसाइट पर विज्ञापन के कई फायदे हैं, कम-से-कम खर्च पर विज्ञापन दुनिया भर में पहुँच जाता है, तुरंत उस पर प्रतिक्रिया मिल जाती है। इससे कम्पनियाँ शीघ्र अपने ग्राहकों से आवश्यक संवाद कायम कर उनके मन में उठ रही शंकाओं का निराकरण कर सकती हैं।

सूचना एवं संप्रेषण के दृष्टिकोण से आज इंटरनेट सिर्फ व्यापारियों, कारोबारियों और विज्ञापन एजेंसियों के लिए ही नहीं है, बल्कि शिक्षा, राजनीति, इतिहास, विज्ञान, धर्म, रोजगार आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए इंटरनेट पर वेबसाइट एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। इतना ही नहीं, वेबसाइट पर संसार के विभिन्न स्थानों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और वहाँ की संस्कृति, परंपरा, रहन-सहन और वहाँ के लोगों के बारे में जान सकते हैं। इंटरनेट पहले ही शिक्षा, सूचना और मनोरंजन का विशाल स्रोत बन चुका है। इन मकसदों में इसका बड़े पैमाने पर इस्तेमाल हो रहा है। और इसका माध्यम वेबसाइट बन रही है।

अत: संप्रेषण के वेबसाइट माध्यम का लाभ यह है कि सूचना एवं संप्रेषण के लिए आज कोई भी व्यापारी या संस्थान अपनी वेबसाइट बनाकर या बनवाकर अपने विचारों का समाज में वैश्विक स्तर पर प्रचार-प्रसार कर सकता है। संक्षेप में, वेबसाइट के जरिए कोई भी इंटरनेट उपभोक्ता इच्छित सूचना प्राप्त कर सकता है। प्रारंभ में इसमें केवल लिखित सामग्री ही प्राप्त होती थी परंतु आज इसमें लिखित के साथ-साथ चित्र, ध्वनि, कार्टून आदि सब भी उपलब्ध है।

संप्रेषण के इन विभिन्न माध्यमों को जान लेने व समझ लेने के क्रम में हमें यह तथ्य सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि संप्रेषण एक मन का दूसरे मन से मिलन है, एक विचार का दूसरे विचार से सहमति या असहमति है। व्यक्ति और समाज के बीच संप्रेषण, एक ऐसा संबंध निर्मित करता है, जिसके इर्द-गिर्द समाज का सामाजिक ताना-बाना रूप-आकार ग्रहण करता है। व्यक्ति या समूह किसी एक उद्देश्य से संप्रेषण-सूत्र में बँधते है। यह मंशा या उद्देश्य संप्रेषण-संबंध को भी प्रभावित करते है और साथ ही संप्रेषण-प्रक्रिया को भी परिचालित करती हैं। इसे मानव समाज में उद्दीपन और अनुक्रिया के सहसंबंध के रूप में देखा जाना चाहिए। संप्रेषण के बिना समाज में व्यक्ति के सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। संप्रेषण कभी भी सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक शून्यता में नहीं होता। अत: संप्रेषण उस सामाजिक संदर्भ से प्रभावित होता है जिससे यह क्रियाशील होता है।

समग्रत: आज संप्रेषण माध्यमों ने बड़ी प्रगति कर ली है। एकालाप से शुरू होने वाला संप्रेषण क्षणभर में विश्वव्यापी रूप ले लेता है। यह तथ्य एक एस.एम.एस. मैसेज, या एक छोटी सी वीडियो क्लिप के वायरल होने वाले प्रभाव के परिणामस्वरूप देखा जा सकता है। आज व्यक्ति संप्रेषण की जटिल प्रक्रिया और

उससे भी अधिक प्रभावशाली संप्रेषण की विकासशील प्रणालियों को समझने की आवश्यकता अनुभव करने लगा है। जैसे-जैसे मानव समाज तकनीकी रूप से विकसित होता जा रहा है, उसी अनुपात में सूचनाओं के संप्रेषण माध्यमों की दृष्टि से भी विकसित होता जा रहा है। वास्तव में यह सब सूचना एवं तकनीकी क्रांति का परिणाम है। आज एक व्यक्ति एकालाप के रूप में जो कुछ सोचता है वह सब, वह तुरंत ही ई-मेल, ब्लॉग और वेबसाइट आदि के माध्यम से विश्वव्यापी स्तर पर प्रचारित-प्रसारित कर सकता है और इससे समाज में व्यक्तियों के मध्य एक ऐसी सामान्य सहमति का निर्माण किया जाता है जो आमतौर पर सामान्यत: आमने-सामने नहीं मिलते। यही कारण है कि रेमंड विलियम्स सम्पूर्ण सांस्कृतिक प्रक्रिया को एक संप्रेषण व्यवस्था के रूप में मान्यता देते थे। व्यक्ति के पास सर्वाधिक कारगर और शक्तिशाली हथियार 'संप्रेषण' दक्षता ही है। जो व्यक्ति संप्रेषण दक्षता में जितना अधिक कुशल होता है, वह समाज में उतना ही अधिक सफल एवं सम्मानित स्थान प्राप्त करता है। संप्रेषण मनुष्य के मस्तिष्क के चिंतन एवं बोध का आधार है। इसी के फलस्वरूप संप्रेषण मानव व्यवहार की सामाजिक प्रक्रिया से गहनता से जुड़ा है। आवश्यकता है हमें संप्रेषण के विभिन्न माध्यमों को समझने और उनमें पारंगत होने की।

1.7.1 खाली स्थान पर उचित शब्द भरिए-

(1) इंटरनेट का उद्‌भव और विकास सन् ..... एक शैक्षिक नेटवर्क 'यूजनेट-न्यूज' के रूप में हुआ।

(2) इंटरनेट का हिंदी पर्याय ..... है।

(3) ई-मेल का प्रचलन वर्ष ..... से प्रचलित हुआ।

(4) ..... एक तरह की इंटरनेट पर लिखी गई डायरी है।

(5) अमेरिकन छात्र ..... ने ब्लॉग की शुरुआत की।

(6) ..... ने सूचना का विकेंद्रीकरण कर सूचना के दायरे को बढ़ाया है।

(7) संप्रेषण की सूचना एवं तकनीकी विकास के फलस्वरूप सारे विश्व का ज्ञान एक छोटे ..... के रूप में व्यक्ति के घुटनों में आ गया है।

1.7.2 अभ्यास के लिए प्रश्न

प्रश्न (क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(I) संप्रेषण माध्यम के रूप में 'एकालाप' का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

(II) संप्रेषण के 'संवाद' एवं 'सामूहिक चर्चा' माध्यमों में साम्य-वैषम्य लिखिए।

(III) ब्लॉग किसे कहते हैं।

(IV) सूचना एवं संप्रेषण के क्षेत्र में वेबसाइट के महत्त्व को बताइए।

(V) संप्रेषण में विभिन्न माध्यमों में से किसने सर्वाधिक क्रांतिकारी भूमिका अदा की है।

(VI) सामूहिक चर्चा संप्रेषण माध्यम का विवेचन विश्लेषण कीजिए।

प्रश्न (ख) निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा लिखिए-

माध्यम, ई-मेल, संवाद, सामूहिक चर्चा, वेबसाइट, इंटरनेट, एकालाप

प्रश्न (ग) संप्रेषण के परंपरागत एवं तकनीकी माध्यमों का विवेचन व उनके गुण-दोष लिखिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्पों को चुनकर पूरा करें–

1. इंटरनेट का उद्‌भव और विकास हुआ .....। (अमेरिका/कनाडा/इंग्लैंड)
2. संप्रेषण का सबसे सस्ता माध्यम है .....। (संवाद, सामूहिक चर्चा, ब्लॉग)
3. संप्रेषण प्रक्रिया में माध्यम वक्ता और श्रोता के बीच ..... का काम करता है। (माध्यम/सेतु)

प्रश्न (घ) संप्रेषण के तकनीकी आधारित माध्यमों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *जनमाध्यम संप्रेषण और विकास,* देवेन्द्र इस्सर, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, सं.- 1989, पृ.-12
2. *भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी*, डॉ. अमरसिंह वधाान, भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृ.-30
3. *भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी*, डॉ. अमरसिंह वधान, भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृ.-37
4. *सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी*, प्रो. सोहन राज तातेड़, श्री कविता प्रकाशन, पृ.-51
5. *भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी*, डॉ. अमरसिंह वधाान, भावना प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2000, पृ.-32
6. *दृश्य-श्रव्य माध्यम कला एवं तकनीक*, गौरीशंकर रैणा, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2009, पृ.-17
7. *इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता*, डॉ. अजय कुमार सिंह, लोकभारती प्रकाशन, सं.- पृ.-220
8. *हिंदी वेब साहित्य*, डॉ. सुनील कुमार लवटे, राजकमल प्रकाशन, सं. 2013, पृ.-36
9. डॉ. बलबीर कुन्दरा, *जनसंचार: बदलते परिप्रेक्ष्य में*, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 पृ.-286
10. डॉ. अजय कुमार सिंह– *इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद- पृ.-225
11. वेब पत्रकारिता, *नया मीडिया नये रुझान*, शालिनी जोशी-शिवप्रसाद जोशी, राधाकृष्ण, सं. 2012, पृ.-75

पाठ-1

व्यक्तित्व और भाषिक अस्मिता आयु, लिंग, वर्ग, शिक्षा

-डॉ. ओम मिश्रा
डॉ. भीमराव अम्बेडकर कॉलेज

1.1 प्रस्तावना

मौखिक व लिखित दोनों रूपों में भाषा का प्रयोग किया जाता है। लिखित रूप में भाषा अलग-अलग रूप में प्रयुक्त की जाती है, जैसे-साहित्यिक भाषा, गैर-साहित्यिक भाषा। साहित्यिक रचना रामचरितमानस की भाषा व साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं की भाषा साहित्यिक भाषा होती है। कार्यालयी-भाषा, तकनीकी व विज्ञान की भाषा गैर साहित्यिक भाषा होती है। इसके अलावा इलेक्ट्रानिक माध्यमों में दृश्य भाषा अलग-अलग प्रकार की होती है। मौखिक भाषा में भी भाषिक अस्मिता की दृष्टि अन्तर स्पष्ट: दृष्टिगोचर होता है। इलेक्ट्रानिक माध्यमों की भाषा का स्वरूप दृश्य-श्रव्य का मिश्रण होने के कारण ज्यादा प्रभावी होता है। संप्रेषण एक भाषिक प्रक्रिया है। भाषा समाज के प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रयुक्त की जाती है। यह अलग-अलग समाजों में अलग-अलग होती है। व्यक्ति इनमें से किसी का सदस्य होता है। एक या अधिक भाषा का प्रयोग करता है। इसी भाषा के द्वारा वह अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। भाषा, व्यक्ति के विचारों को गतिशील बनाती है।

1.2 अधिगम के उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्नलिखित ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे-

1. व्यक्तित्व, संप्रेषण व आयु के अन्त:संबंध का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. संप्रेषण किस प्रकार आयु, वर्ग, लिंग, शिक्षा को अन्त: प्रभावित करता है, यह समझ सकेंगे।
3. संप्रेषण में वर्ग भिन्नता की स्थिति के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. संप्रेषण के गुणों के बारे में जान सकेंगे।
5. संप्रेषण की व्यक्तित्व निर्माण में क्या भूमिका है? यह समझ सकेंगे।
6. संप्रेषण के नकारात्मक व सकारात्मक पक्ष के बारे में जान सकेंगे।

1.3 व्यक्तित्व

'व्यक्तित्व' शब्द अंग्रेजी के पर्सनेल्टी (Personality) का पर्याय है। जिसकी उत्पत्ति यूनानी भाषा के 'पर्सोना' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'मुखोटा'। व्यक्तित्व का तात्पर्य प्राचीन काल में व्यक्ति बाह्य गुणों से लगाया जाता था परंतु अब बाह्य गुणों के अलावा आन्तरिक गुणों को भी व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है। विभिन्न विद्वानों ने व्यक्ति को परिभाषित किया है। व्यक्ति की समस्त अनुक्रियाओं,

प्रतिक्रियाओं तथा जैविक गुणों के समुच्चय को व्यक्तित्व माना गया है। यहाँ पर कैम्फ (Kempf) तथा मार्टन प्रिंस के द्वारा दी गई परिभाषाएँ प्रस्तुत हैं। कैम्फ (1919) के शब्दों में–व्यक्तित्व उन प्राभ्यास संस्थाओं का या उन अभ्यास के रूपों का समन्वय है जो वातावरण में व्यक्ति के विशेष सन्तुलन को प्रस्तुत करता है। मार्टन प्रिंस (Morton Prince) के शब्दों में–व्यक्तित्व, व्यक्ति की समस्त जैविक, जन्मजात विन्यास, उद्वेग, रुझान, क्षुधाएँ, मूल प्रवृत्तियाँ तथा अर्जित विन्यासों एवं प्रवृत्तियाँ का समूह है।

आयु, लिंग, वर्ग, शिक्षा व्यक्तित्व निर्मित आयु, लिंग, वर्ण, अवस्था के आधार पर पृथक-पृथक रूप से होती है। अस्मितामूलकता भी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। व्यक्तित्व के अधययन के बारे में प्राचीन काल से ही अध्ययन किए जाते रहे हैं। व्यक्तित्व के बारे में निम्न सिद्धान्त प्रचलित हैं–ट्रेट थ्योरी, टाइप थ्योरी, साइको एनलाइटिक थ्योरी (सिगमण्ड फ्रायड), विहैवरिष्ट थ्योरी (बी.एफ. स्कीनर), शोसल कॉगनटिव थ्योरी (अलवर्ट वैन्डुरा)। इन सिद्धान्तों में व्यक्तित्व के बारे में अलग-अलग विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

संक्षेप में कहें तो व्यक्तित्व का अर्थ मुखौटा है। सरल शब्दों में व्यक्तित्व किसी भी शारीरिक बनावट, गठन, वेश-भूषा, रंग आदि सभी को मिलकर निर्मित होता है। तभी तो आपस में बातें करते लोगों को देखा होगा कि उनका व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली है या उसका कितना मोहक व्यक्तित्व है। तात्त्विक दृष्टि से इसको आन्तरिक व बाह्य दोनों रूपों में जाना जाता है। जैसे किसी व्यक्ति को आक्रामक व्यक्तित्व वाला, सहनशील व्यक्तित्व वाला, लज्जावान आदि प्रकारों में बाँटा गया है। इससे व्यक्तित्व का एक पक्ष ही उभर कर आता है जो बाहरी है तथा आंतरिक पक्ष भी इसका एक घटक है। व्यक्तित्व के कारण ही व्यक्ति एक-दूसरे से पृथक होते हैं। अतः पृथक विशिष्ट विशेषताएँ या गुण जो पृथक व्यक्ति में होते हैं इन्हीं गुणों के कारण प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग अस्तित्व होता है। 'विटिंग एवं विलियम-तृतीय' ने व्यक्तित्व को परिभाषित करते हुए लिखा है–''व्यक्तित्व विशेषताओं का समुच्चय है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए विशिष्ट होता है तथा जिसके आधार पर किसी व्यक्ति की अस्मिता एवं व्यवहार प्रतिरूपों का निर्धारण होता है तथा अस्मिता व व्यवहार प्रतिरूपों का निर्धारण जिसके आधार पर किया जाता है।''

अतः व्यक्तित्व स्थायी गुणों का समुच्चय है जिसके कारण समान व्यवहार-समुच्चय का दर्शन एक व्यक्ति में होता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक आलपोर्ट ने व्यक्तित्व को निम्न प्रकार परिभाषित किया है–''व्यक्तित्व, व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक गुणों का एक गतिशील संगठन है, जो उसे वातावरण के प्रति संयोजित करता है।''

1.3.1 व्यक्तित्व के सिद्धान्त

व्यक्तित्व एक बहुआयामी तंत्र है। यह एक जटिल प्रक्रिया है। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व का गहन अध्ययन कर कुछ निष्कर्ष निकाले हैं तथा बताया कि व्यक्तियों के व्यक्तित्व में संगतता तथा व्यवहारगत विभिन्नताएँ पायी जाती हैं।

इसके लिए विद्वानों ने व्यक्तित्व के अध्ययन के प्रकार बताये हैं–

टाइप तथा शील गुण के सिद्धांत में व्यक्ति के व्यक्तित्व के शील, गुण, स्वभाव, चित्त आदि को प्रमुखता दी गई है। इस सिद्धान्त में शील, गुण के आधार पर व्यक्तित्व को कई भागों में बाँटा गया है।

व्यक्तित्व के टाइप सिद्धांत के अनुसार कुछ समानताओं के आधार पर व्यक्तित्व को कई वर्गों में विभक्त किया गया। यह कार्य प्राचीनकाल से ही होता रहा है। भारतीय औषधि विज्ञान के जनक कृषि वैज्ञानिक चरक ने व्यक्तित्व को विभाजित करने के लिए तीन तत्त्वों को प्रमुखता दी है–(1) वात, (2) कफ, (3) पित्त।

1. 'वात' तत्त्व वाले लोगों में आकाश तथा वायु तत्त्व होता है।
2. 'पित्त' तत्त्व वाले लोगों में वायु तथा अग्नि तत्त्व होता है।
3. 'कफ' तत्त्व वाले लोगों में जल तथा पृथ्वी तत्त्व होता है।

इसके अलावा मूलत: जिन पाँच तत्त्वों से प्राणी की निर्मित बताई गयी है इनके अलग-अलग मिश्रण से व्यक्ति का संगठन होता है। इनमें से कुछ तत्त्व अन्त:क्रिया कर व्यक्तित्व को निर्मित करते हैं। इनकी प्रधानता को प्रमुखता देकर ही कृषि चरक ने तीन प्रकार के व्यक्तित्व बताये हैं–

1. वातज,
2. पित्तज,
3. कफज।

इसी प्रकार के व्यक्तित्व के तत्त्वों पर आधारित वर्गीकरण शेल्डन नामक वैज्ञानिक ने भी किया। उन्होंने व्यक्तित्व को निम्न प्रकारों में बाँटा है–(1) गोलाकृतिक, (2) आयाताकृतिक, (3) लंबाकृतिक।

इसके समान ही क्रेश्मर महोदय ने धातु, स्वभाव एवं शारीरिक गठन के आधार पर व्यक्तित्व को दो प्रमुख भागों में बाँटा है–

(1) साइक्लायड–ये व्यक्ति सामाजिक, सुस्वभाव, विनोद प्रिय आवेगी, चंचल मनोदशा के होते हैं।

(2) सिज्वायड–ये व्यक्ति असामाजिक, शांत, गंभीर और अल्पभाषी होते हैं।

उन्होंने उपरोक्त के आधार पर तीन प्रकार के व्यक्तित्व बताएँ हैं–(1) कृशकाय वाले, (2) पुष्टकाय वाले, (3) स्थूलकाय वाले।

जुंग द्वारा किया गया वर्गीकरण–जुंग को व्यक्तित्व अध्ययन का महान (दादा) प्रपितामह माना गया है। उन्होंने व्यक्तित्व को दो भागों में बाँटा हैं–(1) अन्तर्मुखी, (2) बहिर्मुखी।

उन्होंने इनके विशेष लक्षणों के बारे में विस्तृत अध्ययन कर जानकारी को क्रमबद्ध रूप से वर्णित किया है–

व्यक्तित्व शील गुणों का समुच्चय है। व्यक्ति के शील गुण उसके पृथक-पृथक गुणों को प्रदर्शित करते हैं जैसे–हंसमुख होना, उत्साही, पढ़ाकू, लड़ाकू। जिन गुणों या विशेषताओं के आधार पर लोग एक-दूसरे से अलग होते हैं शीलगुण कहलाते हैं। यह शीलगुण व्यक्तित्व की आधारभूत इकाइयाँ होते हैं। अत: ट्रेट, व्यक्तित्व के घटक हैं और इसमें शील-गुणों का मिश्रण होता है। आलपोर्ट ने इस सिद्धांत की खूब वकालत की उसका मानना है कि शीलगुण व्यक्ति के व्यवहारों का निर्धारण करते हैं। शील-गुणों की मात्रात्मक भिन्नताओं के आधार पर वैयक्तिक विभिन्नताओं का भी वर्णन किया जा सकता है।

कैटेले ने व्यक्तित्व का कारकीय विश्लेषण किया है। उसने शीलगुणों की व्याख्या परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों के रूप में की है। आइजेंक ने भी व्यक्तित्व के 'पदानुक्रम सिद्धांत' का प्रतिपादन किया तथा इसके वृहद घटकों की पहचान की है। जिन्हें व्यक्तित्व का लघु प्रकार बताया है।

स्प्रैंगर ने 6 प्रकार के व्यक्तित्व बताये हैं–(1) सैद्धांतिक प्रकार, (2) आर्थिक प्रकार, (3) सौंदर्यपरक, (4) सामाजिक, (5) राजनीतिक, (6) धार्मिक। इसके अलावा अन्य प्रमुख मनोवैज्ञानिक सिद्धांत हैं–अन्त:मानसिक सिद्धांत (सिगमंड फ्रायड के 'इंटरप्रिटेशन ऑफ डीम सिद्धांत पर आधारित) तथा कार्ल जुंग का विश्लेषणात्मक सिद्धांत, 'अल्फ्रेड एड्ल' का सिद्धांत, एरिक फ्रॉम का सिद्धांत, केरेन हॉनी का सिद्धांत, सुलिवन का सिद्धांत, एरिक एरिक्सन का मनोसामाजिक सिद्धांत, मर्रे का आवश्यकता सिद्धांत प्रमुख हैं।

इसके अलावा व्यक्तित्व के अन्य उपागम भी बताये गए हैं जिनमें व्यावहारवादियों, मानवतावादियों में रोजर्स, मॉस्लो, वेन्दुरा के उपागम प्रमुख हैं। इसके अलावा व्यक्तित्व का पंच घटक मॉडल अभी तक का प्रासंगिक मॉडल है।

1.3.2 निम्नलिखित प्रश्नों की स्वयं जाँच कीजिए–

प्रश्न–1 (क) व्यक्तित्व शब्द युनानी भाषा के किस शब्द से निर्मित है?

(ख) क्रेश्मर महोदय के अनुसार व्यक्तित्व के कितने प्रकार बताये गये हैं, केवल नाम लिखिए?

(ग) शेल्डन महोदय के अनुसार बताये गये व्यक्तित्व के प्रकारों के नाम लिखिए?

(घ) जुंग ने व्यक्तित्व के कितने प्रकार बताये हैं, मात्र उनके नाम लिखिए?

प्रश्न–2 कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से चयन कर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(क) गोलाकृतिक, व्यक्तित्व का.....प्रकार है। (एक/दो)

(ख) .....अल्पभाषी, शान्त, गम्भीर होते हैं। (सिज्वायड/क्रज)

(ग) पुष्टकाय वाले.....होते हैं। (मजबूत/कमजोर)

(घ) .....व्यक्तित्व अधययनशास्त्र के ग्राण्डफादर हैं। (जुंग/मार्क्स)

1.4 व्यक्तित्व और भाषिक अस्मिता : आयु, लिंग, वर्ग, शिक्षा

यहाँ पर भाषिक अस्मिता पर चर्चा करने से पूर्व अस्मिता शब्द पर प्रकाश डालना सम्यक् है। अस्मिता का आशय पहचान से है, जैसे–स्त्री वर्ग के लिए स्त्री अस्मिता, दलित अस्मिता आदि।

विश्व में वैयक्तिक भिन्नता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग पहचान होती है। इसी पहचान को हम अस्मिता कहते हैं। आज जातीय अस्मिता, भाषिक अस्मिता आदि शब्द खूब प्रचलन में हैं। अस्मितामूलक विमर्श भी आज लगभग विश्व के सभी साहित्य व अनुशासनों में दृष्टिगोचर होता है। लगभग समान व्यक्तिगत विशेषताओं को वर्गबद्ध किया जा सकता है। इन समान वर्गों की भी अपनी निजी पहचान होती है। यह व्यक्ति के स्वभाव उसके कार्यों व भाषा में भी झलकती है। इसी कारण लोग अन्य को उसकी भाषिक अस्मिता के कारण पहचान लेते हैं कि वह किस स्थान के रहने वाले हैं या उसके कार्य के आधार पर भी पहचान लेते हैं कि वह किस स्थान का रहने वाला है। जैसे–क्या तुम बिहार से हो? सूरदास,

तुलसीदास, जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत आदि की अपनी भाषिक पहचान है। इसी कारण शारीरिक अस्मिता, सामाजिक अस्मिता, भौगोलिक अस्मिता, जातीय अस्मिता, राष्ट्रीय अस्मिता भी अलग-अलग पहचान प्रदर्शित करती हैं। यह अस्मिता वर्ग विशेष, समाज विशेष, देश विशेष की भाषा में भी दृष्टिगोचर होती है।

अस्मिता और भाषा का संबंध मणिकांचन है। अस्मिता का परिचय भाषा में सहज ही दिख जाता है। यही धीरे-धीरे भाषिक अस्मिता का रूप लेती है जैसे–भोजपुरी गीत धीरे-धीरे भोजपुरी भाषा की व उसके बोलने वाले लोगों की पहचान या अस्मिता बन गयी। इसी संबंध को व्यक्त करने के महत्व को व्यक्त करते हुए लिखा है–''भाषा-सूत्र के अभाव में व्यक्ति और समाज विशृंखल हो जायेंगे।''

भाषा और अस्मिता का संबंध पुराना है। व्यक्तित्व और भाषा का आपसी संबंध भी बहुत महत्त्वपूर्ण है और भाषायी दक्षता भी संप्रेषण को पूर्णतः प्रभावित करती है। समाज के सभी आयु, लिंग, वर्ग, अवस्था के लोगों के अनुरूप भाषा का प्रयोग संप्रेषण को प्रभावी बनाता है। प्रत्येक आयु वर्ग के स्तर पर भाषिक भिन्नता मिलना स्वाभाविक है। यही भिन्नता लिंग, वर्ग व शैक्षिक स्तर पर भी मिल जाती है। सामाजिक अस्मिता के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए अन्यथा व्यक्तित्व निर्माण अवश्य प्रभावित होगा। श्रोता अपनी भाषा के अनुसार ही अर्थ ग्रहण करता है। भाषिक संरचना की समझ व शुद्ध उच्चारण का भी ज्ञान श्रोता व वक्ता को होना चाहिए।

जब लोग संस्कारयुक्त, शिक्षित हो जाते हैं तो विनम्र भाषा का प्रयोग करने लगते हैं। भाषा प्रयोग हमारी संस्कृति को भी प्रदर्शित करता है। मानव समय-समय पर शिष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं। जैसे–क्षमा करें, माफ करें आदि शिष्टाचार युक्त भाषा का प्रयोग करते हैं तब शब्द अपने विशिष्ट अर्थ को अभिव्यक्त करने लगते हैं। बातचीत के दौरान जब सुन्दर शब्दों का प्रयोग किया जाता है तब भी अर्थ बदल जाते हैं।

भाषा सामाजिक है क्योंकि यह समाज में जन्म लेती है तथा समाज में ही विकसित होती है। व्यक्ति समाज से ही भाषा को अर्जित करता है। समाज के अनुकुल ही भाषा जन्म लेती है। समाज यदि उन्नतशील होता है तो भाषा भी विकसित होती रहती है। प्रत्येक भाषा की संरचना भिन्न-भिन्न होती है। इसी कारण प्रत्येक भाषा की अलग-अलग पहचान व सत्ता होती है। इसी कारण एक भाषा दूसरी भाषा से अलग होती है। भाषा में ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ आदि की संरचना में अन्तर होता है।

भाषिक अस्मिता के कारण भाषा में भाव संप्रेषण व भाषा ग्रहण की क्षमता पृथक-पृथक होती है। अलग-अलग अस्मिताओं के कारण भाषा में परस्पर आदान-प्रदान की क्षमता भी अलग-अलग होती है। भाषा समाज द्वारा निर्धारित यादृच्छिक प्रतीक है। समाज कुछ प्रतीकों का निर्धारण करता है वे कुछ न कुछ अर्थ देते हैं जो अलग-अलग अवयवों के लिए अलग-अलग शब्दों को (द्वारा निर्मित) निर्मित करते हैं।

आयु, लिंग, वर्ग, शिक्षा के आधार पर भाषा के प्रयोक्ता अलग-अलग होते हैं। प्रयोक्ता का स्तर, रहन-सहन, उसका शैक्षिक स्तर आदि भाषा के रूपों को निर्धारित करता है। भाषिक अस्मिता, भाषा-निर्माण के स्तरों को निर्मित करती है, जैसे–एक भाषा का निर्माण करने वाला क्षेत्र है और दूसरी भाषा का निर्माण करने वाला विशेष समुदाय है तो अन्तर अवश्य होगा। इसी प्रकार वर्ग की बात करें तो एक स्थान पर रहने वाले लोग वर्ग में विभक्त होते हैं तथा वे अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए अलग-अलग भाषा का प्रयोग करते होंगे। समय के साथ-साथ ये वर्ग/टुकड़े अलग-अलग स्थानों पर रहने के कारण इनकी भाषा में

रूपान्तरण होकर भाषा के कई रूप बन जाते हैं। इसी प्रकार विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर भी भाषा में अन्तर दृष्टिगोचर होता है।

संप्रेषण समाज का प्रमुख आधार है। इसके बिना जीवन चल ही नहीं सकता, सम्प्रेषण, संदेश के द्वारा किसी भी आयु, वर्ग, लिंग के लोगों को आपस में जोड़ता है यह सीमाविहीन है। विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक आयु, वर्ग, लिंग के व्यक्ति संप्रेषण से एक दूसरे से मिलते हैं व एक दूसरे से प्रभावित होते हैं। विभिन्न वर्गों तथा विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोग अलग-अलग ढंग से संप्रेषण करते हैं जैसे–रूसी या अमेरिकन आयु, वर्ग, लिंग के लोग; चीनी, अफ्रीकी लोगों के आयु, वर्ग लिंग के लोगों से भिन्न ढंग से संप्रेषण करते हैं। सम्प्रेषण के बारे में 'कुण्ट्ज' एवं ओ डोनेल ने कहा है–''संप्रेषण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सूचनाओं का हस्तांतरण है, चाहे वह उसमें विश्वास व्यक्त करे या न करे।'' अतः संप्रेषण समाज के एक आयु वर्ग से दूसरे आयु वर्ग, एक लिंग से दूसरे लिंग के लिए, दूसरे लिंग के एक वर्ग से दूसरे वर्ग के लोगों के बीच विचारों को सम्प्रेषित करता है। संप्रेषण दो तरफी प्रक्रिया है जिसमें दोनों अलग-अलग आयु, लिंग, वर्ग के हो सकते हैं, जैसे–धनी वर्ग, गरीब वर्ग, स्त्री-पुरुष, उभयलिंग आदि के आदि। अतः ''संप्रेषण समस्त मानव प्राणियों के बीच व्यापक विनिमय की प्रक्रिया है इसका आशय यह कि जिस प्रक्रिया के द्वारा अर्थ समझे जाते हैं और प्राणियों में समझ पैदा होती है तभी संदेश पूर्णता प्राप्त करता है कि जब सम्प्रेषक यह विश्वास कर ले कि प्रापक ने संदेश समझ लिया है।''

आयु व्यक्ति की भाषा को प्रभावित करता है। आयु के हिसाब से बड़ों को सम्मानित भाषा में पुकारना तथा छोटों को प्यार से पुकारना। बड़ों के लिए 'आप' शब्द का प्रयोग करना व आत्मीय जनों के लिए तू शब्द का प्रयोग करना संप्रेषण के आयु सन्दर्भ को व्यक्त करता है। इस प्रकार आयु के संदर्भ में ही सामाजिक, छोटों-बड़ों को अभिवादनयुक्त शब्दों में पुकारते हैं। एक तरु सामाजिक बड़ों को प्रमाण, नमस्ते करते हैं तो बड़े-छोटे को आशीर्वाद देते हैं। बड़ों की भाषा सम्यक्, गम्भीर दायित्वयुक्त, नैतिक होती है तो छोटों की भाषा में खेलने, शिक्षा, मनोरंजन आदि से संबंधित प्रधान शब्दों का प्राचुर्य होता है। आयु आन्तरिक व्यक्तित्व को भी प्रभावित करती है जिससे उम्र बढ़ने के साथ-साथ भाषा भी बदल जाती है। उम्र के साथ-साथ शब्दावली समृद्ध हो जाती है तथा स्मरण शक्ति कम हो जाती है। उम्र के साथ-साथ भाषण क्षमता, लम्बा भाषण, धारा प्रवाह भाषण देना कठिन हो जाता है, कम उम्र के लोग जोर-जोर धारा प्रवाह, तुकबन्दी, निरन्तर भाषण, बेहतर स्वर, सुर, लयतान के साथ बोल सकते हैं। उम्र के साथ-साथ शारीरिक संरचना में भी परिवर्तन आते हैं। जैसे-जबड़ा, दाँत आदि की बनावट, सामर्थ्य शक्ति कम हो जाती है जिसमें भाषा भी प्रभावित होती है।

लिंग का भाषा पर बहुत प्रभाव पड़ता है। स्त्री, पुरुष, किन्नर स्त्री (पुरुष जैसा अनुभूति) पुरुष (स्त्री जैसी अनुभूति), किन्नर (पुरुष या स्त्री जैसा अनुभूति) सारे अपने-अपने ढंग की भाषा का प्रयोग करते हैं। लिंग भेद विश्व की सभी भाषाओं में दिखाई देता है। भाषिक अस्मिता भी विश्व की सभी भाषाओं में दिखती है। कुछ पुरुष जटिल भाषा, कड़क भाषा बोलते हैं कुछ नम्र भाषा। इसी प्रकार कुछ स्त्रियाँ जटिल भाषा तो कुछ नम्र भाषा का प्रयोग करती हैं। पुल्लिंग व स्त्रीलिंग बालक किशोर के लिए समाज में भिन्न भाषिक प्रकार्य प्रयुक्त किए जाते हैं। भाषिक अस्मिता व व्यक्तित्व एक दूसरे से अन्योन्याश्रित हैं। यदि हम लिंग व भाषा की बात

करें तो स्पष्ट है कि लिंग व भाषा का भी पृथक सम्बन्ध है। हिंदी की लिंग व्यवस्था पर सादृश्यता दृष्टिगोचर होती है।

लिंग व भाषिक अस्मिता को निम्न उदाहरण द्वारा अच्छे ढंग से समझा जा सकता है–यदि एक नट जाति के राजस्थान के कन्याओं का विवाह उत्तर प्रदेश की नट जाति की ही कन्याओं से हो जाता है तो इसमें राजस्थान की नट जाति की लड़की की भाषा अपने पति से भिन्न होती है बाद में उसकी भाषा उसकी माता-पिता की भाषा से भिन्न हो जाती है। महिलाओं की भाषा में लगभग सभी विकसित समाजों में भी अन्तर दृष्टिगोचर होता है। कई भाषाओं में स्त्री-पुरुष द्वारा समान शब्दों का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए याना भाषा में महिलाओं के द्वारा हिरन के लिए (इ) शब्द प्रयोग करती है जबकि पुरुष (इं.द) शब्द प्रयुक्त करते हैं। इसी तरह जापानी भाषा में किसी व्यापक के लिए जो स्वादिष्ट लगता है उसे (Umai) तथा यदि कोई व्यंजन स्त्रियों को स्वादिष्ट लगता है तो (Oisii) शब्द प्रयुक्त किया जाता है।

लिंग के आधार पर यदि भारतीय समाज की हिंदी भाषा की समीक्षा करें तो स्पष्ट होता है तो अधिकांश स्थानों पर पुरुष प्रधानता के कारण पुरुषों को स्त्रियाँ नाम लेकर नहीं पुकारती हैं तथा पति को तुम या तू कहकर बुलाती हैं, जबकि कहीं 'आप' या पति का नाम लेकर बुलाती हैं। इसी प्रकार भारतीय समाज में अधिकांश स्थानों में स्त्रियों की भाषा में रसोई से संबंधित ज्यादा शब्द मिल जाते हैं तथा शिशु के पालन-पोषण, किशोरों की सेवा, पति की सेवा से संबंधित शब्दों का ज्यादा अंश मिल जाता है। कुछ विद्वान स्त्री की शारीरिक कोमलता को उसकी भाषा की कोमलता तथा सबलता से जोड़ते है तथा पुरुष की मांसलता व कठोरता की उसकी कठोर भाषा से जोड़ते हैं। इसी तरह अधिकांश भारतीय परिवारों के अन्दर स्त्री वर्ग की भाषा में अन्तर मिल जाता है। लड़कियों को पल-पल शिष्ट भाषा में प्रयोग के लिए ताने मारे जाते हैं, जबकि पुरुष वर्ग को नहीं।

जबकि शोधों से स्पष्ट है कि पुरुषों के द्वारा अपशब्दों का भी प्रयोग किया जाता है, कहीं-कहीं पर स्त्रियाँ भी अपशब्दों का प्रयोग करती हैं, परन्तु पुरुष अधिक। इस प्रकार स्त्रियों का प्रतिष्ठाबोध, उनकी अस्मिताबोध पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालता है जिससे उनकी भाषा भी नम्र होती है।

परिवार के द्वारा पृथक लिंग के बीच संप्रेषण अलग-अलग ढंग से किया जाता है। लड़कों को अलग प्रकार से स्त्री-पुरुष तथा लड़कियों को, किन्नर वर्ग को अलग-अलग प्रकार से संबंधित किया जाता है। सामाजिक संस्था, सामाजीकरण की प्रक्रिया में लड़कों, लड़कियों, किन्नरों आदि के प्रति अलग-अलग पद्यतियों को अपनाया जाता है। प्रो. कृष्ण कुमार ने समाजीकरण तथा शिक्षा विषय पर विस्तृत रूप में अलग-अलग लिंगों के समाजीकरण के लिए समाज द्वारा प्रयुक्त आधारों का स्पष्ट वर्णन किया है। इसमें संप्रेषण के प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते है। हालांकि उन्होंने संप्रेषण पर जोर नहीं दिया फिर भी संप्रेषण द्वारा विभिन्न वर्गों के समाजीकरण पर व्यापक विवेचन किया है अतः स्पष्ट है कि समाजीकरण की प्रक्रिया में संप्रेषण लिंग आधारित भूमिका का निर्वाह करता है। लड़कियों के लिए स्त्रीलिंग शब्दों का प्रयोग किया जाता है। पुरुषों के लिए पुल्लिंग, स्त्री के स्त्रीलिंग शब्दों का विश्व के सभी समाजों में किया जाता है। हालाँकि हम इस स्त्रीलिंग शब्दावली के पक्ष में नहीं है इसी से समाज में दोहरी प्रणाली विकसित हुई कि पुरुष तथा स्त्री दो अलग-अलग इन्टिटी हैं। हालांकि इस सन्दर्भ में जेन्डर जस्टिस विषय विचारधाराएँ विश्व में व्याप्त हैं जो जेन्डर को अलग-अलग ढंग से व्याख्यायित करते हैं।

वैज्ञानिकों ने अध्ययनों के उपरान्त स्पष्ट किया है कि वर्ग की भी अपनी पहचान (अस्मिता) होती जो कतिपय विशेषताओं पर आधारित होती है। इन विशेषताओं का उनकी भाषा के साथ भी संबंध होता है। इसी प्रकार प्रत्येक वर्ग, लिंग, आयु, वर्ग, शिक्षा स्तर का प्रभाव भी लोगों की भाषा पर पड़ता है। भाषिक अस्मिता में जो घटक संयुक्त होते हैं उनमें राष्ट्रीयता, जाति, भौगोलिक, क्षेत्रीय, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक आदि सभी घटक समाहित हैं। भाषिक अस्मिता क्षेत्र, जाति आदि के अलावा रंग आदि के साथ भी जुड़ी है। जैसे प्रत्येक समाज में रंगों के लिए अलग-अलग शब्दों का प्रयोग किया जाता है। भाषिक अस्मिता प्रासंगिक व सान्दर्भिक सन्दर्भों में भी दिखाई देती है। निम्न वर्ग के बालक/बालिकाओं की भाषिक अस्मिता उनके व्यक्तित्व को अलग तरह के संदर्भों में प्रभावित करती है तो दूसरी तरफ मध्य व उच्च वर्ग की स्थिति, उसकी भाषिक अस्मिता, उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करती है।

वर्ग एक समूह का बोध कराता है यह अलग-अलग वस्तुओं के लिए अलग-अलग है जैसे–शिक्षक वर्ग, भाषा वर्ग, पुरुष वर्ग, महिला वर्ग। समाज विभिन्न वर्गों/स्तरों में विभाजित है–धनी, वृद्ध आदि। इसी तरह वर्ग के साथ-साथ स्तर भी एक वर्ग विभिन्नता का द्योतक है। उच्च-वर्ग, मध्यम-वर्ग, निम्न-वर्ग, शोषक-वर्ग, शोषित-वर्ग, सर्वहारा-वर्ग सभी की अलग-अलग भाषा होती हैं। अतः धनाढ्य-वर्ग की भाषा तथा गरीब-वर्ग की भाषा में प्रबल अन्तर दिखाई देता है। इसी प्रकार मध्यम-वर्ग की भाषा में उच्च-वर्ग की भाषा की तरफ ललक ज्यादा होती है। यह भाषा, उच्च-वर्ग के लोगों के व्यक्तित्व के निर्माण व अस्मिता के आधार पर निर्धारित व निर्मित होती है। जो निम्न व मध्यम वर्ग से भिन्न होती है।

किसी भी वर्ग में भाषा का अनुकरण माता से प्रारम्भ होता है। माता की गोद बालक की प्रथम पाठशाला होती है। उसी से प्रत्येक वर्ग का शिशु अपनी प्रारम्भिक भाषा सीखता है। उम्र के साथ-साथ वह शिक्षा ग्रहण करता है तथा भाषा विकास करता है अतः बालक माता की भाषा के अनुकरण से भाषा विकास करता है। अतः स्पष्ट है कि प्रथमतः बालक को माता की भाषा के अनुकरण से भाषा सीखने में मदद मिलती है। इसे विभिन्न विद्वानों ने जैसे–बर्नस्टीन ने 'पब्लिक' और 'फार्मल' नाम दिया है। पब्लिक को आत्मिक अनुकरण तथा फॉर्मल को व्यापक अनुकरण कहा जाता है।

संप्रेषण प्रक्रिया में प्रेषक अनेक संकेतों द्वारा, इशारों द्वारा संदेश को प्रापक तक पहुँचाता है। प्रापक इन प्राप्त संकेतों को पढ़ता है, उन्हें समझता है एवं व्यवहार में लाता है। व्यक्ति से समाज में दो स्तरों पर होने वाला संप्रेषण कई स्तरों पर प्रभावित होता है। जैसे–लिंग, आयु, सामाजिक, आर्थिक स्तर। सामाजिक वर्ग में मानव की आयु, लिंग, आर्थिक स्तर, सामाजिक स्तर आदि मुख्य हैं। एक प्रौढ़, व्यस्क और बच्चों के मध्य, पुरुष व स्त्री के मध्य, दो भिन्न-भिन्न आर्थिक स्तरों के व्यक्तियों के मध्य, विभिन्न सामाजिक स्तरों के मध्य जैसे–मालिक, नौकर, शिक्षक, छात्र, अधिकारी वर्ग, कर्मचारी वर्ग, शिक्षित वर्ग व अशिक्षित वर्ग इन सभी वर्गों के व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति अपनी बात का सही अर्थ में संप्रेषण करते हैं। इसी कारण थियोहेमैन ने लिखा है–''संप्रेषण एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति तक संदेशों, तथ्यों, विचारों, सूचनाओं तथा समझ पहुँचाने की प्रक्रिया है।'' इसी प्रकार सी.जी. ब्राउन ने लिखा–''एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के मध्य सूचनाओं का प्रेषण, संप्रेषण कहलाता है...।''

इसमें वर्ग के आधार पर मित्र वर्ग, रिश्तेदार वर्ग, शिक्षित वर्ग, अशिक्षित वर्ग, वृद्ध आयु वर्ग, शिशु आयु, किशोर आयु वर्ग, व्यस्क आयु वर्ग, चिकित्सक वर्ग, इंजीनियर वर्ग, व्यवसायी वर्ग, गैर-व्यवसायी वर्ग,

शासन वर्ग, प्रशासक वर्ग, छात्र गर्व, शिक्षक वर्ग, स्त्री वर्ग, पुरुष वर्ग सभी के बीच संप्रेषण की व्यापक प्रक्रिया चलती रहती है। इस प्रकार विभिन्न आयु वर्ग, लिंग के बीच चलनेवाली यह प्रक्रिया उनके व समाज के बीच की क्रिया-प्रक्रिया का परिणाम है इसका फलक अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक है।

अतः सभी आयु के वर्ग के, लिंग के लोगों के मध्य संप्रेषण एक पुल का काम करता है। तभी तो राबर्ट डी. बर्थ ने कहा है–''बिना संप्रेषण मानवीय संबंधों की स्थापना तथा बिना मानवीय संबंधों की स्थापना के संप्रेषण असम्भव है। आयुवर्ग के संप्रेषण में शिष्टता की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिष्टता से नम्रता आती है, व्यवसाय में शिष्ट भाषा में संप्रेषण ज्यादा प्रभावशाली होता है इसमें लिंग, वर्ग कोई अन्तर नहीं डाल पाता अतः आयु, लिंग, वर्ग के भेद के आधार पर संप्रेषण में संक्षिप्तता, सरलता, सशक्त सद्भाव अवश्य होना चाहिए। इसके अलावा संक्षिप्तता, विचारों की पूर्णता, विशिष्ट व महत्त्वपूर्ण तथ्यों का सामन्जस्य, स्पष्ट विचार निरूपण-प्रेषण होना भी अनिवार्य है। यदि वर्ग संप्रेषण की बात करें तो वर्ग संप्रेषण में साम्यवादी मॉडल, वर्ग-केन्द्रित मॉडल, वैदिक मॉडल आदि प्रमुख हैं। साम्यवादी मॉडल के अनुसार दो वर्गों में संप्रेषण की घटना घटित होती है–

1. शोषक वर्ग,
2. शोषित वर्ग।

शोषक-वर्ग, शोषित-वर्ग के प्रति, विद्रोह की आवाज सम्प्रेषित करता है। इस मॉडल में सभी को समरस जीवन जीने की सलाह दी जाती है व व्यवहृत किया जाता है। इस मॉडल में मजदूर वर्ग, **लेनिन** के विचारों से प्रभावित था तथा रूस, क्यूबा, चीन आदि अनेक देश इस वर्ग-संघर्ष को सम्प्रेषित कर रहे थे। इसमें वर्ग अन्तर को खत्म करने पर बल दिया गया था।

उदारवादी मॉडल भी वर्ग-संघर्ष को उजागर करता है। इस युग में समाज, सरकार से अपने अधिकारों के लिए (अविकसित वर्ग) अपनी आपत्ति दर्ज करा सकता था।

वैदिक मॉडल में संप्रेषण के द्वारा विभिन्न लिंगों, वर्गों के बीच मौखिक व लिखित संप्रेषण होता है। यह संप्रेषण भारतीय मूल्यों के अनुसार होता है। विभिन्न विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण करने के कारण इस मॉडल पर अन्य संप्रेषण विचारों ने भी प्रभाव डाला। धीरे-धीरे यहाँ के निवासियों पर अंग्रेजों के विचारों का भी प्रभाव पड़ा जिसने भारतीयों के व्यक्तित्व पर बहुत प्रभाव डाला जो आज तक लगभग 80 प्रतिशत भारतीयों पर दृष्टिगोचर होता है।

इस प्रकार भौतिकताप्रिय लोग, शान्तिप्रिय लोग, संतुष्टिप्रद लोगों का व्यक्तित्व तद्विषयक संप्रेषण से ही निर्मित होता है। विभिन्न वर्गों के बीच विकृत सूचना को रोककर उचित सूचना पहुँचाने में संप्रेषण महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। सूचना से उत्पन्न दुष्परिणाम को बचाता है। लोगों के भ्रान्ति न फैले इसका निवारण भी संप्रेषण के माध्यम से होता है। अतः संप्रेषण विभिन्न वर्गों के बीच मधुर संबंध स्थापन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

कभी-कभी वर्ग संप्रेषण दिग्भ्रमित भी करता है जैसे सभी समुदायों में धर्म के ठेकेदार वर्ग के द्वारा लोगों को दिग्भ्रमित किया जाता है। इसी तरह डिजिटल स्तर पर, इसी प्रकार अलग-अलग अवस्था की आयु के लोगों के मध्य भी संप्रेषण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। जैसे–अधिक आयु को लोग संगठन, नियोजन,

निर्देशन, नेतृत्व एवं अभिप्रेरण आदि में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। संप्रेषण से समाज के सारे कार्यों को करने में पूरी मदद मिलती है। उच्च-कर्तव्यनिष्ठ, परिपक्व, समझ तथा अधिक उम्र के व्यक्ति संप्रेषण द्वारा ही अन्य व्यक्तियों को कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसी प्रकार घरों में माता-पिता तथा उम्र अनुभवी बन्धु-बान्धव पड़ोसी, समाज वाले भी कम उम्र के लोगों को संप्रेषण द्वारा परिपक्व व्यक्तित्व के निर्माण में मदद करते हैं। आज हम सूचना-क्रांति के युग में विश्व में किसी भी कोने में सूचना प्राप्त कर सकते हैं। जन माध्यमों के बढ़ने के कारण समय व काल-संकुचन से विश्व एक परिवार बन गया है तथा सभी आयु, वर्ग, लिंग के लोग, संप्रेषण के माध्यम से जीवन को सुचारू रूप से अग्रसर कर रहे हैं। जो एक समाज निर्माण का आधार है। इसलिए पीटर्स ने कहा–''अच्छा संप्रेषण सुदृढ़ प्रबन्ध की नींव हैं।''

विभिन्न आयु, वर्ग, लिंग के प्राणी संप्रेषण के द्वारा ही अपनी भावनाओं को दूसरों तक पहुँचाते हैं। अपने कष्टों को बाँटते हैं तथा दूसरों के कष्टों को सुनते हैं। आपसी सम्पर्क से अपने ज्ञान की परिधि को विस्तृत करते हैं। नये-नये आयामों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। विश्व के विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि सभी आयु के, वर्ग के, लिंग के लोगों में संप्रेषण के द्वारा सकारात्मक सोच विकसित हो। नकारात्मक संप्रेषण सभी के लिए घातक है। आज के युग में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सभी स्तरों पर संप्रेषण की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आज ग्लोबल विलेज में सभी आयु के, लिंग के, वर्ग के, सामाजिकों, संस्कृतियों को मध्य आने का अवसर मिला है।

व्यक्ति की भाषा, उसकी शिक्षा स्तर के अनुसार निर्मित होती है इससे व्यक्ति की भाषिक व राष्ट्र अस्मिता का ज्ञान हो जाता है। भाषा, व्यक्ति के शैक्षिक स्तर से उसी प्रकार जुड़ी होती है जिस प्रकार उसका शरीर। इस प्रकार भाषा व शैक्षिक स्तर का मणिकांचन संयोग है।

विभिन्न संस्थाओं में एक वर्ग जैसे प्रशासक वर्ग, मानव संसाधान अधिकारी वर्ग, क्लर्क वर्ग, मल्टीटारिकंग स्टाफ आदि के बीच संप्रेषण का महत्त्वपूर्ण स्थान है यह एक कर्मचारी से दूसरे कर्मचारी के विचारों से अवगत कराता है, आदेश, निर्देश का आदान-प्रदान करता है। कर्मचारी भी उचित विषयों पर अपनी राय अधिकारियों को देता है। अतः इन वर्गों के बीच बिना संप्रेषण के कुछ भी नहीं हो सकता। अतः इस वर्ग अन्तर में संप्रेषण के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता है। इसी तरह वृद्ध वर्ग, युवा वर्ग, शिक्षित-अशिक्षित आदि वर्गों में संप्रेषण की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जैसे–डिजिटल प्लेटफार्म पर आज गन्दे कान्टेन्ट डालकर एक वर्ग, युवा वर्ग को दिग्भ्रमित कर रहा है। कुछ गलत तरह की आदतें जैसे शराब पीना आदि विकसित कर रहा है।

अतः व्यक्ति का लिंग, आयु, वर्ग-आर्थिक, सामाजिक आदि अनेक कारक हैं जिनके कारण संप्रेषण प्रभावित होता है। एक वृद्ध एवं युवा, बच्चे व शिशु के बीच में संप्रेषण की प्रकृति, स्त्री और पुरुष के मध्य, दो भिन्न वर्ग के लोगों व समूह के प्रति, शिक्षित-अशिक्षित व्यक्तियों के बीच संप्रेषण का महत्त्व व प्रकृति भिन्न-भिन्न होती है। जिस प्रकार व्यक्तिगत स्तर पर व्यक्ति की उम्र, वर्ग, लिंग आदि की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है उसी प्रकार सामाजिक स्तर पर आयु में छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष, शिक्षित-अशिक्षित वर्ग, उच्च-निम्न वर्ग, सभी के आधार पर संप्रेषण की प्रक्रिया व प्रकृति भिन्न-भिन्न होती है। इन भेदों का संप्रेषण पर पूर्ण प्रभाव पड़ता है। संप्रेषण की भिन्नता भी इसी कारण दृष्टिगोचर होती है। जैसे–विशेष उम्र विशेष लिंग, वर्ग के प्राणी के साथ एक जैसा संप्रेषण सम्भव नहीं है वैसे भिन्न वर्ग, आयु, लिंग के साथ सम्भव

नहीं हो सकता। इसी कारण संप्रेषण में विषमता आती है व इसकी प्रकृिया बहुआयामी (मल्टीडायमेन्शनल) व जटिल (काम्प्लेक्स) बनती जाती है।

अत: स्पष्ट है कि व्यक्तित्व और भाषिक अस्मिता की संप्रेषण में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। संप्रेषण अलग-अलग व्यक्तित्व को अलग-अलग तरह प्रभावित करता है और भाषिक अस्मिता भी संप्रेषण की प्रक्रिया का अपने ढंग से परिणाम में परिवर्तित करती है।

1.5 निम्नलिखित प्रश्नों की स्वयं जाँच कीजिए–

(क) निम्न प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए–

1. संप्रेषण के प्रमुख आधारों के नाम लिखिए?
2. संप्रेषण का अर्थ एक पंक्ति में लिखिए?
3. साइक्लाइड व्यक्ति के लक्षण एक पंक्ति में लिखिए?
4. सिज्वाइड व्यक्ति के लक्षण एक पंक्ति में लिखिए?
5. वैज्ञानिक कृषि चरक ने कितने प्रकार के व्यक्ति बताए है?
6. वैज्ञानिक कृषि चरक ने व्यक्ति के व्यक्तित्व को निर्मित करने वाले कितने तत्व बताए है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों पर सही/गलत पर निशान लगाओ–

1. क्षेत्रीय भाषा व समूह की भाषा में अन्तर होता है। (सही/गलत)
2. लिंग के कारण भाषा में अन्तर दिखता है। (सही/गलत)
3. भाषा में लिंग, ध्वनि, रूप, वाक्य, अर्थ आदि घटक होते है। (सही/गलत)

(ग) निम्न प्रश्नों के आगे दिए गए शब्दों पर सही का निशान लगाइए–

1. लोगों की भाषा वर्ग के अनुरूप होती है। (अपने शिक्षित वर्ग/अशिक्षित वर्ग)
2. व्यक्ति भाषा को कहाँ से अर्जित कता है। (समाज से/आकाश से)
3. भाषा किसके अनुकूल होती है। (समाज के/देश के)
4. लड़कियों का व किन्नरों का समाजीकरण कैसा होता है। (लड़कों से पृथक/लड़को के समान)
5. उन्नतशील समाज की भाषा कैसी होती है। (अवनतिशील/उन्नतशील)
6. भाषा कहाँ जन्म लेती है। (समाज में/समुद्र में)

1.6 अभ्यास के लिए प्रश्न–

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. ग्लोवल विलेज का आशय स्पष्ट कीजिए?
2. संप्रेषण के साम्यवादी मॉडल पर प्रकाश डालिए?

3. संप्रेषण के गुणों का वर्णन कीजिए?
4. संप्रेषण के रूपों का वर्णन कीजिए?
5. व्यक्तित्व और भाषिक अस्मिता के संबंध पर प्रकाश डालिए?
6. भाषा व लिंग विषय पर लेख लिखिए?
7. संप्रेषण व्यवसाय के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है स्पष्ट कीजिए?
8. संप्रेषण प्रबंधन का एक महत्त्वपूर्ण घटक है स्पष्ट कीजिए?
9. संप्रेषण कैसे प्रभावपूर्ण होता है स्पष्ट कीजिए?
10. संप्रेषण आयु, लिंग, वर्ग व शैक्षिक स्थिति से प्रभावित होता है स्पष्ट कीजिए?

(ख) निम्न प्रश्नों में सही/गलत का निशान लगाइए–

1. भाषा सामाजिक है। (सही/गलत)
2. संप्रेषण से प्राणियों में समझ पैदा होती है। (सही/गलत)
3. सन्देश तभी पूर्णता प्राप्त करता है जब प्रेषक विश्वास कर ले कि प्रापक ने संदेश समझ लिया है। (सही/गलत)
4. लेनिन के विचारों को साम्यवादी मॉडल में प्रमुखता दी गई है। (सही/गलत)

(ग) प्रश्नों के आगे दिए गये रिक्त स्थान में 'हाँ' या 'ना' लिखिए–

1. संप्रेषण संदेशों, तथ्यों, विचारों, सूचना तथा समझ पहुँचाने की प्रक्रिया है। (.....)
2. एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच सूचनाओं का प्रेषण संप्रेषण है। (.....)
3. संप्रेषण समस्त मानव प्राणियों के बीच व्यापक विनिमय की प्रक्रिया है। (.....)
4. बिना संप्रेषण मानवीय सम्बन्धों की स्थापना तथा बिना मानवीय सम्बन्धों की स्थापना के संप्रेषण असम्भव है। (.....)
5. अच्छा संप्रेषण सुदृढ़ प्रबन्ध की नींव है। (.....)
6. समाज में अलग-अलग लिंग के लिए अलग-अलग भाषा का प्रयोग किया जाता है। (.....)

(घ) रिक्त स्थानों की पूर्ति सामने दिए गए शब्दो में कीजिए–

1. संप्रेषण के गुणों में.....समाहित है। (भाषिक संरचना की समझ/संगीत/यंत्र)
2. संप्रेषण का .....एक गुण है। (बलाघात/पदमैत्री/मशीन)
3. संप्रेषण में.....का महत्त्वपूर्ण स्थान है। (सुर/रास्ता/कलम)

पाठ–2

प्रभावी संप्रेषण के गुण एवं प्रभावी व्यक्तित्व के निर्माण में संप्रेषण की भूमिका

–डॉ. ओम मिश्रा
डॉ. भीमराव अम्बेडकर कॉलेज

2.1 प्रस्तावना

आज संप्रेषण के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है। ग्लोबलाइजेशन के दौर में जहाँ सम्पूर्ण विश्व ग्लोबल विलेज के रूप में कार्य व्यापार कर रहा है वहाँ संप्रेषण की भूमिका और भी बढ़ जाती है क्योंकि यह व्यक्ति, व्यक्ति व समाज के बीच त्रिकोणीय संबंध स्थापन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी कारण संप्रेषण की उपयोगिता नि:सन्देह महत्त्वपूर्ण है। आज संप्रेषण के एक से एक नवीन उपागमों का नित्य आविष्कार किया जा रहा है। इन संप्रेषण के माध्यमों ने समाज के एक छोर के लोगों की दूरियाँ दूसरे छोर के लोगों के साथ कम कर दी हैं। संप्रेषण दो तरफा प्रक्रिया है इसका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है इसमें सूचनाओं एवं विचारों दोनों का आदान–प्रदान सम्मिलित है। यह प्रबन्ध प्रक्रिया का भी एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है तथा राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर सूचना संप्रेषण में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। आज संप्रेषण के माध्यम और भी विस्तृत और विशाल होते जा रहे हैं।

2.2 अधिगम का उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर छात्र निम्नलिखित अधिगमों का अर्जन कर सकेंगे–

1. सम्प्रेषण के गुणों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. संप्रेषण की व्यक्तित्व निर्माण में क्या भूमिका है? यह समझ पाएँगे।
3. संप्रेषण के घटकों एवं कार्यों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. संप्रेषण के कार्यों के बारे में जान सकेंगे।
5. संप्रेषण के नकारात्मक व सकारात्मक गुणों के बारे में जान सकेंगे।
6. संप्रेषण की क्रिया विधि से परिचित हो सकेंगे।

2.3 संप्रेषण

संप्रेषण शब्द अंग्रेजी शब्द Comunication (कम्युनिकेशन) का समानार्थी है। यह लैटिन भाषा के 'कम्यूनिस' शब्द से उद्‌भवित है जिसका हिंदी में 'संप्रेषण' शब्द पर्याय है। संप्रेषण दो ध्रुवीय प्रक्रिया है। भाषा यह अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत है। इसके द्वारा विचारों का स्थानान्तरण होता है। यह जीवन का महत्त्वपूर्ण घटक है। इसके मूल तत्त्व निम्न हैं–(1) प्रेषक, (2) माध्यम, (3) संदेश, (4) प्रापक, (5) प्रतिपुष्टि।

संप्रेषण के निम्न रूप हैं–

1. संप्रेषण का अन्तः वैयक्तिक रूप,
2. संप्रेषण का अन्तर वैयक्तिक रूप
3. जनसंचार विषयक रूप

संप्रेषण एक भाषिक प्रक्रिया है जो प्रेषक तथा प्राप्तकर्ता के बीच घटित होती है और माध्यम दोनों के बीच में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। मूलतः संप्रेषण के निम्न प्रकार हैं–(1) संप्रेषण के मौखिक प्रकार, (2) संप्रेषण के लिखित व प्रकार।

2.3.1 प्रभावी संप्रेषण के गुण

प्रभावी संप्रेषण के गुणों में शुद्ध उच्चारण, भाषिक संरचना की समझ, भाषा-व्यवहार, शब्द सामर्थ्य आदि प्रमुख हैं। इन गुणों से युक्त संप्रेषण अधिक प्रभावशाली होता है। भाषिक संरचना का ज्ञान संप्रेषण का प्रभावी गुण है। भाषा का व्याकरण भी संप्रेषण को प्रभावी बना देता है। बिना व्याकरणिक ज्ञान के संदेश का प्रेषक व प्रापक दोनों संदेश को पूर्णरूपेण प्राप्त नहीं कर सकते हैं। शब्द-सामर्थ्य प्रत्येक शब्द का अलग ही प्रभाव डालता है, इसके लिए विभिन्न शब्द-सामर्थ्य को निरूपित करने के लिए विद्वानों द्वारा अभिधा, लक्षणा, व्यंजना आदि शब्द शक्तियों का प्रयोग किया गया है। जिससे बात अधिक प्रभावशाली हो जाती है जैसे–तुम तो बड़े विद्वान हो, इससे व्यंग्य के सन्दर्भ में अलग अर्थ निकलता है कि तुम मूर्ख हो, विद्वान नहीं हो।

1. **प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता**–संप्रेषण में प्रामाणिकता की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। प्रामाणिक संप्रेषण का महत्त्वपूर्ण अंग हैं इसके बिना संप्रेषण की सत्यता संदेह में है। टीकाकार विषयवस्तु को लगभग समरूपता के साथ ही प्रस्तुत करता है। ताकि प्रामाणिकता बनी रहे। प्रामाणिक व विश्वसनीय सामग्री संप्रेषण को प्रभावी बनाती है।
2. **शुद्ध उच्चारण**–वाणी की स्पष्टता संप्रेषण को प्रभावी बनाती है। इससे प्रेषक की बात प्रापक तक ठीक तरीके से पहुँचती है। श्रवणीयता, वाक् स्पष्टता से ही पूर्ण होती है। प्रापक सन्देश को ठीक-ठीक समझ जाता है। सुरलहर अनुतान बलाघात भी भाषिक संप्रेषण को प्रभावी बनाता है।
3. **शिष्टता**–संप्रेषण में शिष्टता सदैव उसे प्रभावी बनाती है इससे संप्रेषण गत्यात्मक एवं प्रभावी होता है। शिष्टता होने के कारण संप्रेषण नम्रतायुक्त हो जाता है। किसी भी प्रकार के संप्रेषण में उससे संबधित समाज की भाषा की शिष्टता उसे अनुकूल व प्रभावोत्पादक बनाती है। प्रेषक व प्रापक दोनों को बराबर सम्मान मिलना चाहिए और समान शिष्टाचार होना चाहिए। इसमें लिंग, आयु, वर्ग, जाति का कोई भेद नहीं होना चाहिए। संदेश में शिष्ट व कठोर भाषा का प्रयोग भी हो सकता है।
4. **शुद्धता**–संदेश में शुद्धता का होना अत्यन्त अनिवार्य हैं। शुद्धता लाने के लिए यह आवश्यक है कि इसमें मानक भाषा प्रयुक्त होनी चाहिए। इसमें प्रयुक्त सूचना आँकड़े अंक, क्रम आदि शुद्ध होना चाहिए। इसमें तथ्यों का प्रयोग इसकी विश्वसनीयता को और भी बढ़ाता है। अशु संदेश प्रेषित नहीं करना चाहिए।

5. **सूचनाओं की बोझिल न होना**–संप्रेषण का गुण यह भी है कि उसमें सूचनाएँ बोझिल होने के कारण उसकी प्रभावपूर्णता खत्म हो जाती है। इससे प्रापक को संदेश समझने में देर लगती है। कुछ समस्याएँ व जटिलताएँ भी आती हैं।

6. **फीडबैक**–श्रोता (प्रापक) के द्वारा फीडबैक (प्रतिपुष्ठि) प्रतिक्रिया भी संप्रेषण का प्रधान गुण है। इसी से पता चलता है कि संप्रेषण प्रभावपूर्ण हुआ है की नहीं।

7. **वाक्कला**–वाक्कला का भी संप्रेषण पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यदि वक्ता तेज बोलता है तो भी संदेश का प्रापक उसे समझ नहीं सकता। बोलने की गति मध्यम होनी चाहिए न अधिक तीव्र न ही अधिक जोर। तीव्र गति की आवाज सुनने में दिक्कत करती है तथा धीमी गति की आवाज सुनाई नहीं देगी अत: सामान्य गति से किया गया संप्रेषण ज्यादा प्रभावशाली होता है।

8. **विचारों की समानता**–संप्रेषण में विचारों की समानता होनी चाहिए। प्रेषक व प्रापक के विचार जब तक एक जैसे न होंगे तब तक उसमें संप्रेषण प्रभावी न होगा। उन दोनों की मानसिकता भी समान होनी चाहिए। मानसिकता के अनुकूल संप्रेषण एवं उद्देश्यपूर्ण संप्रेषण ही प्रभावपूर्ण होता है। जब प्रापक व प्रेषक में संप्रेषण के विचारों की समानता होगी तभी संप्रेषण का उद्देश्य पूर्ण होता है। असमान विचारधारा के लोगों के बीच संप्रेषण एकदम अप्रभावी रहता है।

9. **श्रोता और वक्ता की समरसता**–वक्ता या श्रोता की घमण्ड भी संप्रेषण में बाधक होता है जिससे संप्रेषण प्रभावी नहीं होता है। दोनों अपने-अपने घमण्ड में डूबे रहते हैं इसमें संदेश का संप्रेषण नहीं हो पाता है। अत: श्रोता और वक्ता की अहमतापूर्ण स्थिति भी संप्रेषण को प्रभावपूर्ण नहीं बनाती वह प्रभावी ही रहता है।

10. **संस्कृति की समानता**–संप्रेषण का एक गुण संस्कृति की समानता भी है क्योंकि समान संस्कृति वाले प्रेषक व प्रापक संदेश को शीघ्र समझ लेते हैं। सामुदायिक अन्तर, सांस्कृतिक विभिन्नता, भाषायी अन्तर सभी संप्रेषण में बाधक हैं। स्वतंत्रता से पूर्व के भारतीय समाज की बात करें तो उस समय इसी कारण मुस्लिम संस्कृति या ब्रिटिश संस्कृति के समुदाय के लोगों की विषयवस्तु भारतीय हिन्दू संस्कृति के लोगों में सम्प्रेषित करना कुछ कठिन हुआ था।

11. **भाषा की समानता**–संप्रेषण का एक गुण भाषा की समानता भी है। असमान भाषा वालों के बीच संप्रेषण प्रभावशील नहीं होता है। जैसे–एक व्यक्ति जो सन्देश का प्रेषक है तथा दूसरा जो प्रापक है एक उर्दू जानता है जबकि दूसरा उर्दू नहीं जानता तो दोनों में संप्रेषण सम्भव नहीं है।

12. **समान विषयवस्तु**–श्रोता और वक्ता के मध्य संप्रेषण की विषयवस्तु भी सरल होनी चाहिए जो दोनों के मतलब की व अनुकूल होनी चाहिए। यदि विषयवस्तु में भिन्नता है तो कभी संप्रेषण प्रभावी नहीं होगा जैसे उच्च शिक्षित हिंदी विषय के छात्रों को गणित के जटिल विशेष क्षमता ज्ञान स्थिति की विषयवस्तु परोसना प्रभावी स्थिति को प्राप्त न होगी।

13. **बाधारहित**–संप्रेषण बाधारहित होना चाहिए अन्यथा संप्रेषण प्रभावी नहीं होगा। प्रेषक से प्रापक तक संदेश बिना बाधा के पहुँचना चाहिए अन्यथा सम्प्रेषक प्रभावी नहीं होगा। बाधा संप्रेषण की पूर्णता को कम करता है। प्रेषक द्वारा प्रेषिक संदेश आधा-अधूरा पहुँच पाता है जिससे सम्प्रेषक की बात जिस मात्रा में प्रापक तक पहुँचना चाहिए पहुँच जाता है–वक्ता-संदेश-श्रोता।

14. **पूर्णता**–संप्रेषण का एक गुण यह भी है कि संप्रेषण स्वयं में पूर्ण होना चाहिए। जिससे कि प्राप्तकर्ता उसको उचित प्रकार से समझ सके। अपूर्ण संदेश से भ्रम पैदा होता है तथा बार-बार विषयवस्तु की जानकारी लेने के लिए प्राप्तकर्ता को प्रेषक से जानकारी लेनी पड़ती है इससे अन्यथा व्यवधान उत्पन्न होता है। अत: संचार प्रक्रिया अपूर्ण हो जाती है और बाधायुक्त हो जाती है। कुछ विद्वानों ने प्रभावी संप्रेषण के निम्न घटक बताये हैं–
    - संप्रेषण में संप्रेषण करने वाला कौन-(Who)है।
    - संप्रेषण की विषय वस्तु क्या-(What) है।
    - संप्रेषण कब–(When) किया गया।
    - संप्रेषण कहाँ–(Where) किया गया।
    - संप्रेषण क्यों–(Why) किया गया।
    - संप्रेषण कैसे–(How) किया गया।
15. **संक्षिप्तता**–प्रभावी संप्रेषण का एक गुण संक्षिप्तता भी है। सूचनाएँ हमेशा सीधी, संक्षिप्त होने से ज्यादा जल्दी सम्प्रेषित हो जाती हैं। लम्बी, गहरी, जटिल सूचनाएँ भी सरल तरीके से यदि छोटे-छोटे ढ़ग से प्रेषित की जाती हैं तो समझ में आती हैं।
16. **आवश्यक शब्दावली**–संप्रेषण के लिए आवश्यक शब्दावली संप्रेषण को प्रभावशाली बनाती है। शब्दों के अनावश्यक प्रयोग से संप्रेषण बोझिल बन जाता है। अनेक शब्दों के बजाय कुछ शब्दों, चुनिन्दा शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। संदेश संक्षेप में सभी बातों को समाहित किए होना चाहिए। गागर में सागर भरना सन्देश प्राप्तकर्ता व प्रेषक दोनों के समय की बचत करता है।
17. **विशिष्टता**–संचार में विशिष्ट निश्चित महत्त्वपूर्ण सूचनाओं को समाहित करना चाहिए। अनिश्चित सूचनाओं से भ्रम उत्पन्न हो जाता है। संचार में विशिष्टताओं की अभिव्यक्ति स्पष्ट होनी चाहिए। प्रेषक को संदेश की विषयवस्तु की विशिष्टता का अध्ययन, मनन कर लेना चाहिए। इस विशिष्टता को उसे सरल और स्पष्ट शब्दों में भेजना चाहिए। इसमें जटिलता एक उलझाऊ विषयवस्तु नहीं होनी चाहिए।
18. **श्रवणीयता**–यदि संदेश तीव्र गति से होता है तो श्रवण वाले व्यक्ति को कठिनाई होती है। बिना प्रभावी श्रवणीयता के संप्रेषण, प्रभावी नहीं हो सकता। बिना प्रशिक्षण के भी श्रवणक्रिया स्थिति बाधायुक्त हो जाती है।

2.4 प्रश्नों की स्वयं जाँच कर उत्तर लिखिए–

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए?

1. संप्रेषण के आधुनिक माध्यमों के नाम बताइए?
2. संप्रेषण के मूल प्रकारों के नाम लिखिए?
3. संप्रेषण के चार प्रमुख गुणों के नाम बताइए?

(ख) निम्नलिखित कथनों के आगे दिए गये शब्दों पर सही का निशान लगाओ?

1. संप्रेषण द्वि-ध्रुवीय प्रक्रिया है। (सही/गलत)
2. संप्रेषण लैटिन शब्द 'कम्युनिस' से बना है। (सही/गलत)
3. बिना माध्यम के संप्रेषण प्रभावी नहीं हो सकता है। (सही/गलत)
4. संक्षिप्तता संप्रेषण का एक विशिष्ट गुण है। (सही/गलत)
5. बाधामुक्तता संप्रेषण को प्रभावी बनाती है। (सही/गलत)
6. शिष्टता संप्रेषण को प्रभावी बनाती है। (सही/गलत)
7. प्रतिपुष्टि संप्रेषण का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। (सही/गलत)
8. वाक्कला संप्रेषण को प्रभावी बनाती है। (सही/गलत)

2.5 प्रभावी व्यक्तित्व

प्रभावी व्यक्तित्व निर्माण में संप्रेषण की भूमिका पर प्रकाश डालने से पूर्व व्यक्तित्व के बारे में विचार कर लेना हमें सम्यक् प्रतीत होता है। 'व्यक्तित्व' शब्द अंग्रेजी के पर्सनेल्टी (Personality) का पर्याय है। जिसकी उत्पत्ति यूनानी भाषा के 'पर्सोना' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'मुखोटा'। व्यक्तित्व का तात्पर्य प्राचीन काल में व्यक्ति बाह्य गुणों से लगाया जाता था परंतु अब बाह्य गुणों के अलावा आन्तरिक गुणों को भी व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है। विभिन्न विद्वानों ने व्यक्ति को परिभाषित किया है। व्यक्ति की समस्त अनुक्रियाओं, प्रतिक्रियाओं तथा जैविक गुणों के समुच्चय को व्यक्तित्व माना गया है। यहाँ पर कैम्फ (Kempf) तथा मार्टन प्रिंस के द्वारा दी गई परिभाषाएँ प्रस्तुत हैं। कैम्फ (1919) के शब्दों में-व्यक्तित्व उन प्राभ्यास संस्थाओं का या उन अभ्यास के रूपों का समन्वय है जो वातावरण में व्यक्ति के विशेष सन्तुलन को प्रस्तुत करता है।

मार्टन प्रिंस (Morton Prince) के शब्दों में-व्यक्तित्व, व्यक्ति की समस्त जैविक, जन्मजात विन्यास, उद्वेग, रुझान, क्षुधाएँ, मूल प्रवृत्तियाँ तथा अर्जित विन्यासों एवं प्रवृत्तियों का समूह है। प्रभावी व्यक्तित्व के अलग-अलग मानक विभिन्न विद्वानों द्वारा निर्धारित किए गए हैं–

प्रभावी व्यक्तित्व के बारे में विद्वानों का एकमत नहीं है क्योंकि कुछ किसी गुण-समूह के लोगों को प्रभावी मानते हैं, कुछ इससे पृथक समूह को कुछ भाषण कला में प्रवीन वक्ता के व्यक्तित्व को तो कुछ नृत्यकला में प्रवीण तो कुछ प्रशासन को प्रभावी व्यक्तित्व मानते हैं।

प्रभावी व्यक्तित्व के निर्धारकों में आनुवांशिकी एवं वातावरण प्रमुख हैं। प्रभावी व्यक्तित्व में आनुवांशिक (जननिक) एवं वातावरण के प्रभाव को सभी विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण बताया है। यदि हम सामाजिकों का अध्ययन करते हैं तो कुछ प्रभावशाली व्यक्तित्व के होते हैं तो कुछ गैर प्रभावशाली व्यक्तित्व के होते हैं। कुछ का आक्रामक व्यक्तित्व होता है तो कुछ का शान्त व्यक्तित्व होता है। प्रभावी व्यक्तित्व के क्या कारक हैं? इस पर विचार करने से स्पष्ट है कि प्रभावी व्यक्तित्व आनुवांशिक एवं वातावरण दोनों की अन्त:क्रिया का परिणाम है। अत: व्यक्तित्व के विकास, रूपाकरण, संगठनात्मक निर्माण में आनुवांशिक, वातावरणीय

कारकों का पृथक-पृथक या मिश्रित योग है। इस बारे में अनेक शोधकार्य हुए हैं जिनसे प्रभावी व्यक्तित्व व गैर प्रभावी व्यक्तित्व के कारकों को वर्णित किया गया है। इस कार्य को करने के लिए कभी आनुवंशिक कारकों में अन्तर या परिवर्तन कर तथा वातावरणीय कारकों को स्थिर रखते हुए व्यक्तित्व का मापन किया जाता है तो दूसरी ओर वातावरणीय कारकों में परिवर्तन कर आनुवंशिक कारकों को स्थिर कर अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार प्रभावी व्यक्तित्व के निर्माण में वातावरण यानी सामाजिक कारकों तथा वंशानुक्रमण अर्थात जैविक कारकों में अंत:क्रिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जैविक कारकों में वंशानुक्रम को व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण आधार माना जाता है।

प्रभावी व्यक्तित्व के निर्माण में वंशानुक्रम की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसी से साधारण व प्रभावी व्यक्तित्व का निर्माण होता है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास किस प्रकार का होगा यह वंशानुक्रम द्वारा ही निर्धारित होता है। ये प्रभाव शैशवावस्था में भी दृष्टिगोचर होने लगते हैं। जैसे–एक शिशु अपनी शैशवावस्था में ज्यादा सक्रिय रहता है तो दूसरा कम फुर्तीला होता है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि शील-गुण, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संचारित होते रहते हैं। 'गाल्टन' 1869 में अपनी पुस्तक 'हेरीडिटरी जीनिअस' तथा 'इंग्लिश मेन ऑफ साइंस' में इस बात पर बल दिया है कि प्रभावी व्यक्तित्व सभी परिवारों में नहीं मिलते। इसके अलावा उन्होंने बताया कि 'प्रतिष्ठा' व 'श्रेष्ठता' सभी परिवारों में नहीं मिलती। गोडार्ड ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी अध्ययन से स्पष्ट किया है कि ज्यूक परिवारों में माताएँ मंद बुद्धिवादी थीं। इसलिए उन परिवारों में बच्चे भी मन्दबुद्धि वाले हुए। इसी तरह अपराधी और वात रोगी परिवारों में अगली पीढ़ी अधिकतर अपराधी तथा वात रोगी बनी। गोडार्ड ने कालिकल परिवारों का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाले कि वंशानुक्रम की व्यक्तित्व व प्रभावी व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। प्रभावी व्यक्तित्व निर्माण में स्नायुमण्डल की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जिसके स्नायुमण्डल में सहानुभूतिक मण्डल की सक्रियता अधिक होती है वे परायों के ऊपर आश्रित, राय माँगने वाले, आदर्शवादी, स्वप्नलोक में विचरण करने वाले होते हैं जबकि उपसहानुभूतिक मण्डल वाले अवसरवादी, शान्त, टाल-मटोल करने वाले, स्वतंत्र विचारों वाले होते हैं।

प्रभावी व्यक्तिव में अन्त:स्रावी ग्रंथियों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। हार्मोन की कम या ज्यादा मात्रा का प्रभाव भी इन ग्रंथियों पर पड़ता है। थायरॉइड, एड्रिनल, पिट्यूटरी, पिनेल, पैंक्रिया आदि अंत:स्रावी ग्रंथियों से निकलने वाले हार्मोन व्यक्तित्व को पूर्णत: प्रभावित करते हैं। उचित हार्मोन का स्रवण प्रभावी व्यक्तित्व का निर्माण करता है। शारीरिक बनावट व संरचना भी प्रभावी व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण कारक है, जैसे–रंग, स्वास्थ्य आदि का संतुलित मिश्रण प्रभावी व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

वातावरणीय या सामाजिक कारकों में परिवार या घरेलू वातावरण, पारिवारिक प्रेम, पारिवारिक परिवेश, माता-पिता का व्यवहार, अनुकरण, पड़ोस, विद्यालय, समूह के लोग आते हैं। प्रभावी व्यक्तित्व के निर्माण में परिवार व घरेलू वातावरण मुख्य अभिकर्ता की तरह भूमिका अदा करते हैं। पारिवारिक स्नेह भी प्रभावी व्यक्तित्व के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है जबकि विभिन्न अधययनों से (गोल्डफॉर्ब 1947) स्पष्ट है कि अधिकतर अनाथ बच्चों का व्यक्तित्व पारिवारिक प्रेम के अभाव के कारण प्रभावी व्यक्तित्व नहीं बन पाता। परिवारिक परिवेश की सीख भी प्रभावी व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिससे शील गुणों का विकास होता है।

सांस्कृतिक कारक भी प्रभावी व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। सांस्कृतिक रीति-रिवाज, परम्परा, मानदण्ड, मापदंड आदि प्रत्येक संस्कृति के अंग हैं। प्रभावी व्यक्तित्व के बारे में अलग-अलग संस्कृतियों में अलग-अलग मानक हैं–बालिनिज की संस्कृति में अन्तर्मुखी व रूखे व्यक्तियों को प्रभावशाली माना गया है। इसी तरह नाहरों को भारतीय संस्कृति में शारीरिक तकलीफों को झेलने वालों को, प्रभावी व्यक्तित्व वाला माना गया है।

व्यक्तित्व के पंच घटक मॉडल को प्रभावी व्यक्तित्व निर्धारण का अद्यतन मॉडल माना गया है। 'पॉल कोस्टा' एवं 'रॉबर्ट मैक्रे' ने पाँच कारक बताये हैं–1. बहिर्मुखी होना, 2. अनुभवों के लिए खुलापन, 3. सहमतिशील, 4. मनस्तापी, 5. कर्तव्यनिष्ठता।

बहिर्मुखी होना–ये प्रभावी व्यक्तित्व की कोटि में आते हैं, ये सामाजिक रूप से सक्रिय, निश्चयात्मक, मिलनसार, बातूनी, विनोदप्रिय होते हैं।

खुले विचारों वाले–इनका व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण होता है, ये कल्पनाशीलता, जिज्ञासु, नए विचारों को ग्रहण करने के लिए हमेशा तैयार, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रुचि लेने वाले गुणों से सम्पन्न होते हैं।

सहमतिशील–ये मददगार, सहयोगी, दूसरों की सेवा करने वाले मित्रवत गुणों से भरपूर होते हैं।

कर्तव्यनिष्ठता–ये परिश्रमी, आत्मनियन्त्रित, समझदार, जिम्मेदार व भरोसेमन्द, उपलब्धि प्राप्त करने वाले गुणों से सम्पन्न होते हैं।

फिर भी प्रभावी व्यक्तित्व के बारे में एक निश्चित निर्धारण नहीं किया जा सकता है। अलग-अलग समाजों में प्रभावी व्यक्तित्व के अलग-अलग मानक निर्धारित किए गए है। कहीं बलिष्ठ व्यक्तियों को, कहीं शिक्षित व्यक्तियों को, कहीं विद्वान तो कहीं संगीतज्ञ, सहनशील, त्यागी व्यक्तियों के व्यक्तित्व को प्रभावी माना गया है। मुख्य रूप से उपरोक्त चर्चा में बर्हिमुखी, खुलेपन वाले, कर्तव्यनिष्ठ, आत्मनियंत्रित, परिश्रमी, समझदार, जिम्मेदार, भरोसमंद, उपलब्धि प्राप्त करने वाले गुणों से युक्त व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावी व्यक्तित्व माना गया है।

2.5.1 प्रश्नों की स्वयं जाँच कीजिए–

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए?

1. व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति युनानी भाषा के किस शब्द से हुई है?
2. प्रभावी व्यक्तित्व के प्रकारों के नाम लिखिए?
3. व्यक्तित्व के सिद्धांत के पंच कारकों के नाम लिखिए?

(ख) इस पाठ के आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति आगे दिए गये शब्दों में से चयन कर करो–

1. प्रभावी व्यक्तित्व .....लोगों को प्रभावित करता है। (ज्यादा/कम)
2. व्यक्तित्व का आधुनिक मॉडल है.....(पंच घटक/चतुर्थ घटक)
3. खूले विचारों के व्यक्तित्व वाले.....होते है। (कल्पनाशील/मददगार)

2.6 प्रभावी व्यक्तित्व के निर्माण में संप्रेषण की भूमिका

संप्रेषण एक सामाजिक प्रक्रिया है यह समाज का निर्माण करती है। सकारात्मक संप्रेषण प्रभावी व्यक्तित्व निर्मितकरता है जिससे सामाजिक समरस होकर सभी कार्य व्यापार को आगे बढ़ाते हैं। जिससे समाज में शान्तिमय एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण रहता है। रॉबर्ट डी. वर्थ के शब्दों में व्यक्तित्व और संप्रेषण दोनों एक दूसरे से मिश्रित हैं–''बिना संप्रेषण के मानवीय संबंधों की स्थापना तथा बिना मानवीय संबंधों की स्थापना के संप्रेषण असम्भव है।'' व्यक्तित्व निर्माण में सूचना का शुद्ध भाषा में पहुँचना सकारात्मक व्यक्तित्व निर्मित करता है यदि सूचना भ्रान्तिपूर्ण है तो निश्चित ही विकृत व्यक्तित्व व स्थिति का निर्माण कर देती है इस भ्रान्तिपूर्ण व्यक्तित्व का सुधार व इस सूचना से उत्पन्न दुष्परिणाम व भ्रान्तियों का निवारण, संप्रेषण से ही सम्भव है। संप्रेषण में एक व्यक्तित्व से दूसरे व्यक्तित्व, व्यक्तियों को सूचनाएँ प्रेषित की जाती हैं अर्थात् संप्रेषण व ग्राहक, संदेश, संदेश की भाषा एवं सूचना तत्त्व आदि मुख्य हैं। अतः प्रेषक व्यक्तित्व से व्याप्त व्यक्तित्व अपने व्यवहार में कुछ न कुछ अवश्य व्यवहृत करता है। अतः व्यक्तित्व निर्माण में सम्प्रेषक एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। इससे व्यक्ति का बहुआयामी विकास होता है।

संप्रेषण के जनक प्रेषक, वक्ता और श्रोता या प्राप्तकर्ता होते हैं अर्थात् वक्ता से प्रारम्भ होकर संप्रेषण श्रोता तक पहुँचता है और तभी प्रतिपुष्टि प्राप्त होती है जो परिवर्तनशील भूमिका को प्राप्त करते रहते हैं। एक व्यक्ति कई व्यक्तित्वों को प्रभावित करता है। इसमें संप्रेषण की महत्त्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि संप्रेषण का पहला और अन्तिम बिन्दु मानव ही है। आशय यह है कि किसी व्यक्ति से प्रारम्भ होकर अन्य व्यक्ति, समूह, समाज तक जाकर समाप्त हो जाता है। व्यक्ति, व्यक्ति को, समाज को कई प्रकार से प्रभावित करता है। समाज में विभिन्न लिंग, आयु, वर्ग आदि संप्रेषण को पूर्णतः प्रभावित करते हैं। व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक पक्ष भी व्यक्तित्व निर्माण का महत्त्वपूर्ण घटक है। व्यक्ति अपने भावों को सम्प्रेषित करता है जो अन्य व्यक्तियों के द्वारा पसन्द या नापसन्द किया जाता है।

व्यक्तित्व निर्माण प्रबंधन में भी संप्रेषण की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। बिना निर्देशन कोई भी प्रबंधनीय कार्य नहीं होता है। इसके लिए कुशल नेतृत्व की जरूरत होती है। नेतृत्व करने वाले का व्यक्तित्व प्रभावी होता है उसकी भाषा भी प्रभावी होती है। वह कर्मचारियों को कब, कहाँ, कौन कार्य करना के बारे में भाषा के द्वारा सम्प्रेषित करता है तथा अन्य व्यक्तित्यों के व्यक्तित्व को निर्मित करता है शेष सभी कर्मचारी उसके अनुरूप कार्य करते हैं।

व्यक्तित्व का निर्माण मौखिक संप्रेषण, लिखित संप्रेषण, सांकेतिक संप्रेषण, औपचारिक संप्रेषण, अनौपचारिक संप्रेषण आदि सभी प्रकारों से होता है। संप्रेषण किसी संस्था को अपने कर्मचारियों के व्यक्तित्व निर्माण में पारस्परिक सहयोग में भी भूमिका निभाता है जिससे उसका समरस व्यक्तित्व निर्मित होता है। वे मधुर मानवीय सम्बन्ध स्थापन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं व एक स्वस्थ समाज का निर्माण करते हैं। किसी के व्यक्तित्व निर्माण में सूचनाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यह सूचना पूर्ति परस्पर संकेत व सूचना के आदान-प्रदान से होती है।

सकारात्मक सम्प्रेषण, सकारात्मक व्यक्तित्व निर्मित करता है जबकि नकारात्मक संप्रेषण नकारात्मक व्यक्तित्व निर्मित करता है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का संप्रेषण व्यक्ति को विराट फलक पर निर्मित करता है

विभिन्न संस्कृतियों व समाजों को निकट लाने, उसे समझने वाले विराट व्यक्तित्व का निर्माण करता है। संप्रेषण का महत्व व्यवसाय क्षेत्र में सबसे ज्यादा है। व्यवसाय में कई लोगों को मिलकर क्रियाविधि चलती है अतः सभी कर्मचारियों का व्यक्तित्व मधुरिम संबंध स्थापन एवं समरसता पूर्ण होना जरूरी है। अतः प्रबंधन के क्षेत्र में व्यक्तित्व के उपरोक्त सभी गुणों जैसे–संगठन, निर्देशन, नेतृत्व नियोजन सब कुछ संप्रेषण पर निर्भर करता है।

यदि मनुष्य की उत्पत्ति और विकास की वैज्ञानिक प्रक्रिया पर प्रकाश डाला जाय तो मानव जन्म लेते ही संप्रेषण शुरू कर देता है चाहे वह संप्रेषण गैर–भाषिक क्यों न हो। बाद में उसने शब्द, हाव–भाव आदि के द्वारा संप्रेषण किया। माँ की गोद मनुष्य की पहली पाठशाला मानी जाती है शिशु अपने दैनिक व्यवहारों से ही अपनी माँ से शुरुआती दौर में अपनी इच्छाओं को व्यक्त करता है। धीरे–धीरे शारीरिक विकास के साथ–साथ व्यक्तित्व निर्माण भी संप्रेषण के विविध रूपों से (मौखिक व लिखित रूप) होता रहता है। शिशु से आगे की अवस्था में वह हाव–भाव के माध्यम से, बोलने से, टूटे–फूटे शब्दों से अपनी बात कहना व दूसरों की बात को संप्रेषण द्वारा प्राप्त करता है। इस संघात्मक संप्रेषण से उसके व्यक्तित्व का पल्लवन होता है।

व्यक्तित्व का निर्माण संप्रेषण की प्रक्रिया के तहत दो व्यक्तियों के मध्य होता है कुछ विद्वानों ने एक ही व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण–अंतः वैयक्तिक संप्रेषण को भी महत्त्वपूर्ण माना है। मनोविज्ञान में अंतः व्यक्तित्व को भी प्रमुख माना गया है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों फ्रायड, जुंग ने अहम्, इदम् आदि अंतःजगत को भी महत्त्वपूर्ण बताया है जिनकी व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

चाइना में व्यक्तित्व निर्माण में संप्रेषण का चाइनीज मॉडल काफी प्रमुख है। चीन में व्यक्तित्व निर्माण में संप्रेषण विषयक विचारों में महात्मा बुद्ध के विचारों की बहुलता है। देश के प्रति कादारी, शान्ति आदि संप्रेषण विषयक चाइनीज मॉडल की कतिपय विशेषताएँ हैं।

इसी प्रकार ईसाई समुदाय में व्यक्तित्व निर्माण में संप्रेषण मुख्यतः स्वतंत्र विचारों एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता का संप्रेषण करता है। इसमें भी मानव के मध्य उदात्त मूल्यों के संप्रेषण पर बल दिया गया है। यूरोप के अधिकांश देश संप्रेषण की इसी व्यवस्था पर केन्द्रित हैं इसमें ईसाई धर्म के मूल्यों को व्यक्तित्व निर्मिति का आधार बनाते हैं।

इसी प्रकार मुस्लिम समुदाय में व्यक्तित्व निर्माण में संप्रेषण की जो भूमिका है वह दो आधारों पर निर्मित है। (1) गैर रुढ़िवादी, (2) रूढ़िवादी। इसमें इस्लाम धर्म के विचारों को सम्प्रेषित किया जाता है जो दो गुटों में विभाजित है। एक शुद्ध एवं पवित्र मॉडल, दूसरा इस धर्म के ठेकेदारों एवं मौलवियों के द्वारा सभी को अपने चंगुल में फँसाकर खून खराबा फैलाने वालों द्वारा संचालित। ये लोग नफरत फैलाने व अमन चैन स्थापित करने वाले महत्त्वपूर्ण विचारों का संप्रेषण करते हैं। मॉडल में संप्रेषण की प्रक्रिया द्वारा ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण किया जाता है जो विक्रत चित्त, क्रूर, निर्दयी होता है। इससे ऐसे व्यक्तित्व निर्मित होते हैं जो जातीय दंगे फैलाते हैं, औरतों पर पाबंदियाँ लगाते हैं। समाज में नफरत फैलाते हैं, संकीर्णता ग्रस्त होते हैं तथा अन्य असामाजिक कार्य करते हैं हालाँकि इसके मूल का कारण कुछ भी हो जो प्रश्न के विषय हैं। जबकि दूसरे पक्ष के लोग जो शुद्ध एवं पवित्र पक्ष अमन चैन में विश्वास रखने वाले हैं व एक समरसता पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। संप्रेषण का उदारवादी मॉडल भी व्यक्तित्व निर्माण में भूमिका का निर्वाह करता है। इसे संप्रेषण का सर्वश्रेष्ठ मॉडल माना जाता है। इस मॉडल में सर्वश्रेष्ठ विचारों का संप्रेषण किया

जाता है। इसमें संप्रेषण द्वारा दैनिक जीवन के कार्यों को करने का प्रशिक्षण मिलता है। समस्याओं को समझने, संस्कारपूर्ण शिक्षा के स्तर को बढ़ाने जैसे बिन्दुओं पर विचार किया गया है। जबकि कट्टरवादी मॉडल संकुचित व्यक्तित्व का निर्माण करने में संप्रेषण के संकुचित रूप का संप्रेषण करते हैं। इसमें धर्म, जाति विषयक संकुचित विचारों का संप्रेषण किया जाता है और एकतरफा विचारों के अनम्यतापूर्वक थोपा जाता है। इस मॉडल के अन्तर्गत नेपाल, वर्मा, चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, भूटान आदि में व्यक्तित्व को विचारों में ढाला जाता है। विशेषकर जिन विचारों को देश के नियन्ता चाहते हैं। यहाँ सरकार की आलोचना करना सरल कार्य नहीं है। यहाँ महिलाओं की शिक्षा प्राप्ति, स्वतंत्रता तथा अन्य संकुचित विचार हावी रहते हैं। समानता की व्याप्ति नहीं होती है।

वैदिक मॉडल में संस्कार एवं समरसतापूर्ण विचारों के संप्रेषण किये जान पर बल दिया जाता है। इसमें पहले मौखिक संप्रेषण पर बल दिया जाता था परन्तु धीरे-धीरे तकनीक विकास के साथ यह लिखित न डिजिटल रूप लेता गया। यह भारतीय संस्कृति व परम्परा के अनुसार व्यक्तित्व का निर्माण करता है। इसमें त्याग, बलिदान, लोककल्याण, परहित आदि उदात्त विचारों को प्रमुखता दी जाती है। इसमें सर्वहित अर्थात् सर्वजन हिताय के विचारों के प्राथमिकता दी जाती है। भारत के विभिन्न समाजों में संप्रेषण के दो आधार मिल जाते हैं–(1) रूढ़िवादी, (2) गैर रुढ़िवादी।

अरस्तू के विचारों से संप्रेषण मौखिक रूप से व्यक्तित्व निर्मित करता है क्योंकि उसके काल में मौखिक संप्रेषण प्रचलित था। हैराल्ड डी-लॉसवेल, ने संप्रेषण से व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन किया है। वीवर शैरम ने प्राप्तकर्ता की प्रक्रिया को व्यक्तित्व निर्माण में प्रमुख माना है। बारलों का मॉडल, व्यक्तित्व निर्माण को प्रमुखता से परिभाषित करता है। इसमें आँख, नाक, कान आदि इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष ग्रहण को व्यक्तित्व निर्माण में प्रमुख माना गया है।

संप्रेषण एक भाषिक व्यवहार भी है जिसका प्रयोग, लेखन, प्रेषक, पाठक, श्रोता सभी करते हैं। किन्तु भाषा एक व्यक्तित्व तथा दूसरों के मध्य सम्प्रेषक धरातल का कार्य करती है। यह भाषा विश्व भाषाओं में से कोई हो अतः भाषिक क्षमता और कुशलता व्यक्तिगत और सामाजिक संप्रेषण का आधार बनती है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में निहित विचार और भाव उसकी भाषा और व्यवहार को संचालित करते हैं। ये उसके व्यक्तित्व के आन्तरिक व बाह्य रूपों की निमिर्ति भी करते हैं। व्यक्ति का निजी व सामाजिक पक्ष भी होता है। सामाजिक पक्ष में परिवार, समाज, वर्ग, आयु, लिंग आदि आते हैं। व्यक्तित्व आन्तरिक व बाह्य जगत दोनों से निर्मित होता है, एक आन्तरिक परिवेश तथा दूसरा सामाजिक परिवेश। अतः संप्रेषण व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर कार्य करता है।

इसी तरह आज ऐसे व्यक्तित्व के व्यक्तियों की जरूरत है जो शीघ्र निर्णय व उसका कार्यान्वयन कर सकें। ऐसे व्यक्तित्व के निर्माण में संप्रेषण की भूमिका ही महत्त्वपूर्ण होती है। आज के समाज में मधुरिम संबंध रखने वाले लोगों की कमी है यदि समाज में समरसता व संबंध मधुरिम रहें तो समाज में ईर्ष्या-द्वेष खत्म ही हो जायेगा फिर चाहे घर हो या कार्यालय। अतः ऐसे व्यक्ति के निर्माण में संप्रेषण प्रभावी भूमिका अदा करता है। जैसा कि रॉबर्ट डी. वर्थ ने कहा कि–''बिना संप्रेषण के मानवीय संबंधों की स्थापना तथा बिना मानवीय संबंधों की स्थापना के संप्रेषण असम्भव है।''

2.7 निम्नलिखित प्रश्नों की स्वयं जाँच कीजिए

(क) निम्नलिखित प्रश्नों 'हाँ' या 'ना' में निम्नलिखित प्रश्नों को हल करो–

1. संप्रेषण व्यक्तित्व निर्माण का महत्त्वपूर्ण घटक है। (.....)
2. संप्रेषण एक भाषिक व्यवहार है। (.....)

(ख) इस पाठ के आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति आगे दिए गये शब्दों में से चयन कर करो–

1. संप्रेषण का वैदिक मॉडल.....से युक्त है।
   (बेकार विचारों/संस्कार एवं समरसतापूर्ण विचारों)
2. अरस्तु के अनुसार संप्रेषण का रूप.....है। (मौखिक/लिखित)
3. व्यक्तित्व आन्तरिक व.....जगत से निर्मित होता है। (बाह्य/अन्तर)
4. संप्रेषण का महत्त्व.....में सबसे ज्यादा है। (व्यवसाय/गैर–व्यवसाय)

2.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. संप्रेषण व्यक्तित्व निर्माण में क्या भूमिका निभाता है?
2. संप्रेषण आयु, लिंग को कैसे प्रभावित करता है?
3. मौखिक संप्रेषण पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो?
4. लिखित संप्रेषण से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए?
5. संप्रेषण के परम्परागत माध्यम कैसे व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं?
6. भाषा भी व्यक्तित्व का निर्माण करती है? स्पष्ट कीजिए?
7. संप्रेषण के माध्यमों पर लेख लिखिए?
8. संप्रेषण के आधुनिक व परम्परागत माध्यम कैसे व्यक्तित्व निर्मित करते हैं?

(ख) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए–

संप्रेषण, मौखिक, औपचारिक, प्रामाणिक, अनौपचारिक, कर्तव्यनिष्ठ, मुखौटा, विश्वसनीय, बहिर्मुखी, द्विध्रुवीय, अन्तर्मुखी, अंत:वैयक्तिक, अंतवैयक्तिक, प्रापक, प्रेषक, प्रतिपुष्टि।